TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4298**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

दशवि० टबो

॥दं०॥ॐ॥नमः॥ धर्म्म रूपीउ मांगलिक्य उत्कृष्टउ कहिउ। अहिंसा जीवदया। संयमना सतरभेद दशविध तथा इंद्रियनउ निग्रह। संयम। तपना बारभेद। जेह पुरुष माहि धर्म छइ तेहनइ। देवता पुण नमस्कार करइ। जेहनउ मन एहवा धर्मनइ विषइ सदा सर्वदा प्रवर्त्तइ॥१॥

॥दं०॥ॐ॥नमः॥ धम्मो मंगलमुक्किट्ठं॥ अहिंसा संजमो तवो॥ देवा वि तं नमंसंति। जस्स धम्मे सया

जिम वृक्षना पुष्फनइ विषइ। भ्रमर आवी आस्वादइ थोडउ थोडउ रस पीयइ। अनइ ते पुष्फनइ किलामना न करइ। अनइ ते भ्रमर प्रीणाइ तृप्ति माडइ आपणा आत्मा प्रति॥२॥

मणो॥१॥ जहा दुमस्स पुप्फेसु। भमरो आवियइ रसं। न य पुप्फं किलामेइ। सो य पीणाइ अप्पयं॥२॥ एमे

इम ए साधु मूकाणा बाह्य अभ्यंतर परिग्रह रहित। जे लोक माहि छइ साधु चारित्रिया। भ्रमर जिम आवइ पुष्फनइ विषइ। तिम दान नउ कहीयइ दीधुं हा तारनूं एषणा सहित थ्या॥३॥ साधु कहइ इछइ अम्हे पणि वृत्ति वीहरतां लहिस्यउं।

एसमणा मुत्ता। जे लोए संति साहुणो। विहंगमा व पुप्फेसु। दाणभत्तेसणे रया॥३॥ वयं च वित्तिं लब्भामो। न

जिम कोई जीव हणाइ नहीं तिम। इम चीतवी नइ गृहस्थनइ अर्थि यथाकृत आहार नीपनउ इयीं इसा। जिम पुष्फनइ विषइ भ्रमर। मकरंद रस लिवा जाइ तिम॥४॥ भ्रमर समान साधु बुद्धि तत्वना जाण। जीणइ कुलादिक नी निश्रा छांडी वइ। धुलिवा जाइ।

य कोइ उवहम्मई। अहागडेसु रीयंते। पुप्फेसु भमरा जहा॥४॥ महुकारसमा बुद्धा। जे भवंति अणिस्सिया।

घर घर नउ थोडउ थोडउ अनेक पिंड तेहनइ विषइ रक्त छइ इंद्रिय दम्या बहु। एह वचन कहइ श्री शय्यंभव स्वामी। सिकइ हउं जेणइ करी साधु वारिया। एतलइ द्रुमपुष्फिका नामइं अध्ययन पूरउ थयउ॥१॥ वृत्ति किम करइ किम पालइ श्रामन्य चारित्र।

नाणापिंडरया दंता। तेण वुच्चंति साहुणो॥५॥ त्तिबेमि॥५॥ दुमपुप्फियज्झयणं सम्मत्तं॥१॥ कहं नु कुज्जा सामण्णं १

५ एहवा निरवद्य आहार ना लेणहार साधु नइ विषय जीपिवा तेह रूप रिरहता मुसं बंध पूर्वक बीजउ अध्ययन कहियइ छइ॥५॥

जे पांचइं इंद्रियनां विषय पांगं स्वामि तसंकल्पादिक आह्लादाद्सम्मन पट्टकूलादिकं वस्त्र कं स्त्रीयादिकां शय्या आ बतावइ
निवारइ न सी तहनइं पगइं त्रसीदाइ। नाविकार अवश थकउ वारित्र शीथल पूरादिक गंधां अलंकार सनादिकां पतंवा नहीं अ
करइ॥१॥ मुकुटादिक। नी

ए॥ कामे न निवारए। पए पए विसीयंतो। संकप्पस्स वसं गओ॥१॥ वत्थगंधमलंकारं। इत्थिओ सयणाणि य। अच्छंदा

नइं सोग तिहनइं त्यागी एतव जिको इं कमनाथ इइ लाधा सेपन्ना। पाबाक आत्मा नइं वसिं इंवता तिहिकं पुरुष।
वतापुण न जेनं कहीयइ॥२॥ लागा शद्दादिक। रइं न लागवइ। अनइं बीडइं शद्दादि निश्चइं यस्यव
थी। लागा॥ त्यागी एहवउ

जे न भुंजंति। न स चाइ त्ति वुच्चइ २॥ जय कंते पिए भोए। लद्धे विपिट्ठि कुव्वई। साहीणे चयइ भोए। से हु चाइ त्ति
अपणा परनइं विषइ समीह कदाचि स्त्रीयादिकं दृष्ट्री नइं संयम रूप निवारइं इम चीतवइ। ए स्त्रीयादि एहवउ त्यागी। तेह
कहियइ ३। छि इं विचारी विचरता साधुनइं। पीयाघर मोहिवकी चि सबाहिरनी कव सुमाहरी नहीं। अनइं धक्का रागद्वेषानिव
करइ। पणि तेह नउं न ही॥

वुच्चई॥३॥ समाइ पेहाइ परिव्वयंतो। सिया मणो निस्सरई बहिद्धा। न सा महं नो वि अहं पि तीसे। इच्चेव ताउ विणि
वितह इइ राखिवो सणो तिइ कइ आता शद्दादिक काम सूकइ तउ तउ तनइं। खुनिश्चइ छिषबेदि स्नेहरागबुण इमराग छि
तोवइ॥४॥ पना सइ सुकुमालपणउं छांडइ। अतिक्रमइ उल्लंघइ। इः स्वकेह इहथी तजवी निवारि॥ टालि। मेजीपिवइ
दुःखु गत यउ जा।

इज्ज रागं॥४॥ आयावयाही चय सोगमल्लं। कामे कमाही कमियं खु दुक्खं। छिंदाहि दोसं विणइज्ज रागं। एवं सुही
सुखी हिइसि संपरा इहां राजीम पइसी नइं मरइ। धूमचि दुरास्रय इसा परंन वमतउ विष अगंधन कुलनाकपनी सर्पव
ए संसारनइ विषइ॥५॥ नेउ हूंछता तो रहनेमि लती अग्निमाद्धि नेते अग्निकहूवउ बइ। हवइ। थवइ आकम वोवइ॥ पाबउं लेव॥ लइं पुणविष न लेइ॥६॥
तो अग्निहिलउ।

होहिसि संपराए॥५॥ पक्खंदे जलियं जोइं। धूमकेउं दुरासयं। निच्छंति वंतयं भुत्तुं। कुले जाया अगंधणे॥६॥

दशवि॰ टबो

राजीम तिहजन तेश्रय जितवं। असंयमजीवित वम्याप्रोग तितंवछो इणिकर्त्तव्यपणा। तउ राजीमती कहइ बडा आहारना नी तीरहीन इधिकार थाणउ अविविधयरूपनइकार लिवासोगववाप्रोछइ नइमरण। श्रेयमलउ हउंतेतो जगराजानी पोत्री उग्रसेन मिश्रीति कु॥ असिलाषाव ति। बड। बड॥७॥ राजानी बहीबउ।

धिरत्थु ते जसो कामी। जो तं जीवियकारणा। वंतं इच्छसि आवेउं। सेयं ते मरणं सवे॥७॥ अहं च भोगरायस्स। तं चसि

तउं अंधगवृष्णिनउपौ इणिकारणि गेधनकुलनी इमजाणी संयममनि जउतुं करासि भाव जे जे देखिसि नारी तउ वायुनउ प्रेरयउ समुद्रविजयनउ बा अपिसरखा गंधनकुल अवचितनइ उचरिव असिलाषसोगनउ। स्त्री जिहां जिहां। उजिम हडनामा हउ बड। आपणा ओकुलनी बेटी सामान्यसरीषा आपण ति पालि॥८॥ श्णावनस्पती

अंधगवण्हिणो। मा कुले गंधणा होमो। संजमं निहुओ चर॥८॥ जइ तं काहिसि भावं। जा जा दिच्छसि नारीओ। वायाविद्धुव

हड तिहनीपरि इं अस्थिरआत्मा तिणि राजीमती नउ तेर संयतणी साध्वीन अंकुशइ करी जिम नाग तिम रहनेमि धर्म नामा सिद्धविशाल्पहवउहाइसि॥९ इन्नमि वचन सांभली उ सुभाषितवचन। हस्ती मारगि आणीयइ नइ विषइसपडिबइ धकु। नइ॥

हडो। अहिअप्पा भविस्ससि॥९॥ तीसे सो वयणं सोच्चा। संजयाइ सुभासियं। अंकुसेण जहा नागो। धम्मे संपडिवा

उ निश्चल इम करइ संबुद्धतत्वना पंडित भोगादिदोषना निवर्त्तइ भोगथी यथा जिम ते पुरुषोत्तम रहनेमि पुरुष सामान्यश्र पणइ शाप्प जाणा जिम आगलि कही जाणा प्रविचक्षण पाप थकी॥ माहिलउ मनोगथकी निवर्त्त्यउ तिमभोग कन्नामा श्र ३॥१०॥ सुद। थकाबीहता ते। थकी निवर्त्तेश श्रीगुरु कहइ शिष्यप्रति इसहउं कहउं॥ ११॥ ध्यय

इओ॥१०॥ एवं करंति संबुद्धा। पंडिया पवियक्खणा। विणियट्टंति भोगेसु। जहा से पुरिसुत्तमो त्ति बेमि॥११॥ सामन्न

नबीज बीजुइ अध्ययन निद्दृढतारूप देखिकही। प्रथम सतर भेदनइ विषइ संसारभाव उडीवका तेनिग्रंथनइ। आगलि निर्ग्रंथमहामोटा नउ अर्थपूर्वे आचारनाविषइ करिवी। तिहेस शसुस्थित निश्चल चित्त प्रवर्त्तकामूकी यनारक कहीस्यइ ते अनाचीर्ण जा कृपा करखा छक्रा रक्षयउ॥१॥ णी कुल्लकाचार अध्ययन श्रीऊत छेदनउ आत्मा॥ णा। पाप। वरिवा अयोग्य जाणिवउ। चारीनइ॥१॥

पुव्वयं नाम अज्झयणं बीइयं॥२॥ संजमे सुट्ठिअप्पाणं। विप्पमुक्काण ताइणं। तेसिमेयमणाइन्नं। निग्गंथाण म

*कहीयइ वडा॥

२

॥श्रीदशवैकालिक सूत्र समाधि नउ पूत्रवं॥

उ साधुप्रमुखनइ साधुनइ अ नित्यसर्वपिंडपु अ आहृत सामुहउ रात्रीभोजन स्नानकरइ देशगंध माल्य वीजणइवा आहारादिकनी सं उद्देश कीधउं विंविवानउ माला पहेरवाइ तथा उ आणउ था मा नकरइ ते तसर्व तेअ कर्पूर फूलनी वीजणइ निछिवासी राखइ ते अनाचीरण॥१॥ लीधउ॥२॥ निमंत्रणपूर्वक आइ दिकथकी ते०॥४॥ अनाचीर्ण नाचीर्ण॥६॥ रात्रि। पेसिइ ते अ०७॥ ०॥९॥ ते०॥३॥ मी॥५॥ ॥८॥

हसिणं॥१॥ उद्देसियं कीयगडं। नियागमभिहडाणि य। राइभत्ते सिणाणे य। गंधमल्ले य वीयणे॥२॥ सन्निहीगिहि

गृहस्थनइ राजानउ जाणकिसिउं संबाहन मु आंगुलीप्रमुखइ पूछइ दहशरीर आरीसामाहि अर्थइ उपकरणा नालिबउना बत्र भाजनिछि आहारस्य वउपावाचा इनकरइ ते करीदांतधोयइ केहउ इसउ जोयइ ते अनाचीर्ण॥१०॥ जिवासणीर मखसिइरमि कोव मइ ते०॥११॥ इति अना०॥१२॥ उत्पइ ते०॥१३॥ अ०॥१४॥ ते अनाचीर्ण॥१५॥ बजाते अ०॥१६॥ मति।ते०॥१७॥ वउ ते०॥१८॥ ली

मत्ते य। रायपिंडे किमिच्छए। संबाहणं दंतपहोयणा य। संपुच्छणा देहपलोयणा य॥३॥ अट्ठावए य नालीए। छत्तस्स

आदिकमांडइ धरा आत्मा पृच्छनइ पगे पगर ज्योति अग्निनउ समारं शय्यातरना घरनउ पिंड आसेदीमांची प्रमुखापल्यं उपाश्रयमूंकीबी विवउ छिवउ।ते अधिसावद्यवदै ते पीपहिरइ सकारवउ। ते अना०॥२१॥ लवउ ते अनाचीर्ण॥२२॥ कंदोरीयइ ते तइसरयइ ऊइघरिरउइवइसि अना०॥१९॥ करा। बिडाते॥२०॥ ते०॥२१॥ बइसइ ते०॥२५॥ वउ ते अना०॥२६॥

य धारणट्ठाए। तेगिच्छं पाहणा पाए। समारंभं च जोइणो॥४॥ सिज्जायरपिंडं च। आसंदीपलियंकए। गिहंतरनिसि

गात्र शरीरनउं ऊद्धवर्त्तना पीठी गृहस्थनउ वैयावच्च आसना जातिकुलावीं आजीविका पाणी ऊसु पूरं अनिष्ठ आतुरस्मरण प्रथक्षसिकपा नउ करिवउ ते अनाचीर्ण॥२७॥ दिक नउ देवउ ते अना०॥२८॥ नउकरिवउं ते अना०॥२९॥ तउकालोत्रिणि रहितला पाबिलो सोगसं भारइ गवइ ते अना०॥३०॥ ॥१५॥ नाचीर्ण॥३१॥

ज्जा य। गायस्सुव्वट्टणाणि य॥५॥ गिहिणो वेयावडियं। जा य आजीववत्तिया। तत्तानिव्वुडभोइत्तं। आउरस्सरणाणि

मूलउ काचउ सिंगबेर आदउं इक्षुसेलडीना खंड अनिकंदसूरण मूलकादिक फलदाडिमादि बीजतिलादिक संचलनूण सिंधवलोण अ सोगवइ ते अ काचउ सोगवइ वृतकाचा सोगवइ अनि विकंसचित नौसचित ला कना काचा ला काचा सोगवइ आमकाचउ मकाचउ सोव ६ नारस। ते अना०॥३३॥ अनाचीर्ण॥३४॥ लोगवइ ते०॥३५॥ गवइ ते०॥३६॥ गवइ ते०॥३७॥ ते०॥३८॥ ७ सोगवइ तेअना ते अ०॥४०॥

य॥६॥ मूलए सिंगबेरे य। उच्छुखंडे अनिव्वुडे। कंदे मूले य सच्चित्ते। फले बीए य आमए॥७॥ सोवच्चले सिंधवे

3

दसा०टबो

रोमा लोण आगरनउनीपनउलवण। समुद्रनउलवण। पेसुषारखलिषी कालउलखवण संधुदेशपर्वतउ। वस्त्रादिक धूपकादि बस्तिमुखगमन
आमकावक लोगवडातृअनाचार वलाआमकाव नीपकस्लेआ। आमकावउ लिगवडा तु अना नउधूपवउ कुइवमनक उसमारिवजा।१०
चील ८

तोएा। रा[illegible]यकालालाणयआमए॥८॥ धूवणोत्तिवमणेयवत्थीकम्मविरे
शरीरनउवलवा आवि शाकाष्टनेई गात्रशरीरइ विभूषा आनर प्रसर्वे पूर्विला॥९॥ बोल मोरकषी संयमसेनरसेहतेलइकरा
धवा कालिख मिवीला दातणक वायडरणक णबहिरवाति अनाचार करिवा। के निर्ग्रंथनइ अनइ। युक्तसहितनइ।
नउ गीउतो॥ भावीते रइता॥५०रहातापुरी अनाचार॥५२॥ छनइ।

याणं अंउलादंतवणाय। गायानेगविभूसणे॥९॥ सव्वमेयमणाइन्नं निग्गंथाणमहेसिणं। संजममियजुत्ताणं लह
लघुभूतरहल आपति हिंसादिकपांच आश्रव त्रिकुउली छकायनाय पांचइंद्रियनउनिग्रह निग्रंथइसा कुमुसरलहष्टि
बंधरहितविचरइ॥१०॥ पाडुआ जाणपाडइ। इंद्रुसनइ। नकरइनइ। करइतइ धीरबुद्धिवंत हिंसानिरहि ऊइसंयमपाल॥११॥

भूयविहारिणं॥१०॥ पंचासवपरिन्नाया तिगुत्ता छसु संजया। पंचनिग्गहणा धीरा निग्गंथा उज्जुदंसिणो॥११॥
आतापनालयइ ऊहाला हेमंतरुति अपाउनतवस्त्र वर्षाकालिइं प्रतिसंलीन संयमनापालक ज्ञानदर्शनचारित्र परीसहबावीसह
नइविषइ कालिइं मूकीतादिस नते आगुपाग सवरीबइ नाधरणहार। सलीसमाधिकरास प्रवइराजितणइस
हइ सहएक जीमिरहइ। हिता॥१२॥ मा।

आयावयंति गिम्हेसु हेमंतेसु अवाउडा। वासासु पडिसंलीणा संजया सुसमाहिया॥१२॥ परीसहरिऊदंता
धूतवेगलउ जीताइंद्रिय सर्वदुःखमनना शरीरना उद्यमकरइमोह मायेठ तदेहीक आहारादिकना आतापनादिकलेसहितानो
काधउमोह सहोदिवि क्षयकरिवानइनिमित्ति। परिरीकमफोरवइ। महा गरुइदुःकरकतेवा। करानइ। हिला तेसहो। अहियासीन
जिताइ। थय। मोहासाधु॥१३॥ इ।
धूयमोहा जिइंदिया। सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमंति महेसिणो॥१३॥ दुक्कराइं करित्ताणं दुस्सहाइं सहित्तु य। के ३

केइएकपहमादिव केइएकसीझइ सिद्धिजाइ। षपावीनइ पूर्विलापाविला संयमसत अनइतप सिद्धिज्ञानदर्शनवा छकायनारा
कोदेवलोकनउवि नीरजंकर्मरजनिवारी। सवनाकी थी कर्म अष्टविध रसेदतिहि बारभेदति त्रिरूपमोक्षनामा षणताराष्ट्र
यइक्रपकइ। ॥१४॥ करी॥ णइकरी। ग्रंथतिइ पऊताषका। वासाधु।

इ देवलोएसु केइ सिज्झंति नीरया॥१४॥ खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य। सिद्धिमग्गमणुपत्ता ताइणो *जीवणिया अध्ययनकहियइछइ ४
परिनिहततो ए देवउंग्रंथका एक्षुल्लकाचारनाम लिवइ इणइ अध्ययनइविषइ आचार सुयं सलाबिउमेमइ सगवंत एहवउंक
तलीक्षतथ्या रकहइ बहिशि अध्ययनत्रीजानउ ऊ नइविषइ इहताकरिवाइ मकहिउं गतइ अहोशिष्य आउषाव महिमावं हितं।
कृपायुनावी अप्रतिइ॥१५॥ इति तिइयं अज्झयणं॥३॥ आचारतउपालइ। उछजीवनिकायऊहा इड़ातइसणीचउथउ तापमेग लवधन। तइ।

परिनिव्वुडि त्ति बेमि॥१५॥ खुड्डियायारअज्झयणं तइयं सम्मत्तं॥३॥ सुयं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायं
इह इणि प्रवचनिजिनशासननइविषइ इरव श्रमणत सगवंतस श्रीमहावी काश्यपगोत्रीयतेदेवतादिकनीपरष तिमिउ छकायरषि
सुनिश्रइ करी। छजीवणीएहवइनामि अध्य पस्वीइ स्मावंत। रतणइ। णइप्रवेदीकही दामादिसलापरिइए वइकरीसवी।
यन। कासी।
इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता।
इणिकारणि श्रेयकल्याण एअध्ययनउ छकायराषिवारूष लिवइ गुरुप्रतिइ शिष्यपूछइ। कयराए केहीखलु श्रमणां सगवंत श्रीमहावीरत
णामुकनइ सणिवान पधर्मप्ररूपणा। अघवाधर्म निश्चइकरी तेउ जीवणी इसिइनामिइ अध्य तपस्वी महिमावे णइ।
णा। प्रज्ञातिस्व उबीऊ नामछइ। यन। इ। तइ।

सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती। कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं
काश्यपगोत्रीयतेणा देवतामनुष्यनी देवतामनुष्य श्रेयकल्याणमुज एअध्ययनउ छकायनारू लिवइ गुरुकहइ इमा०ए खलु
इंप्रवेइया कही परषदामादिनी परषदामादि नइ सलिणावणी धर्मप्ररूपणा निश्चइकरी तेउ जीवणीइस्या
विपरिइप्रकासी सलापरिइप्ररूपी। नामिइ अध्ययन।
कासवेणं पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती। इमा खलु सा छज्जीवणिया

दशवै०टबो

श्रमणतपस्वी॥ भगवंतमहि श्रीमहावी काश्यपगोत्रीइं कह्या देवतादिकमांहि बक्कायनइं श्रेयकल्याणमक प्रज्ञप्त
मावंतइ॥ रातणइ॥ सत्यपरिइंप्रकासी रीसुवी सुविवइक नइंसणिवाधकी॥ यनठअध्य
नामअयणं।समणेणं भगवया महावीरेणं।कासवेणं पवेइया।सुअक्खाया।सुपन्नत्ता।सेयं मे अहिज्जिउं।अज्झय
यनारुं भणवू तेजिमछइ पृथिवीकाय अपकायइं तेउकायउ वाउकायवल वनस्पतीकायवेल त्रसकायव
पढमनोनाम इति इतिमक कठिनलक्ष वलक्षणि॥१॥ द्रवलक्षणि॥२॥ नलक्षणि॥३॥ उष्णप्रमुखआघाणा लनलक्ष॥
हइबइ॥ णि॥४॥ हालइ॥५॥ णि॥६॥
णं धम्मपन्नत्ती।तंजहा।पुढविकाईया१ आउकाईया२ तेउकाईया३ वाउकाईया४ वणस्सइकाईया५ तसकाईया
पृथिवीसचित्तसजीवकही अनेकअसंख्या शरीरप्रतिइं अनेरइं अग्निप्रमुखइं शस्त्र अपकायसचित्तसजीव अनेकअसंख्या
तीर्थंकरगणधरिइं ताजीवरूप जूदा२ सत्त्व स्वपरिणामिइं अविशेष्या कस्मात् तीर्थंकरादिकइं ताजीवरूप
प्राणी॥
६ पुढविचित्तमंतमक्खाया।अणेगजीवा पुढोसत्ता।अन्नत्थसत्थपरिणएणं।आउचित्तमंतमक्खाया।अणेगजी
जूजूआसत्त्वपा अग्निप्रमुखअनेरइं शस्त्र तेउकायसचित्तसजीव अनेकअसं पुढोजूजूआ पाणीआदिइं अनेरउं श
णीवइजिहा॥ परिणामिइं अविशेषाइ॥२ कस्मात् तीर्थंकरादिकइं ख्याताजीवरूप सत्त्वप्राणी॥ स्वपरिणामिइं अचित्तथाइ
वा पुढोसत्ता।अन्नत्थसत्थपरिणएणं।तेउचित्तमंतमक्खाया।अणेगजीवा पुढोसत्ता।अन्नत्थसत्थपरिणएणं।वाउ
वाउकायसचित्तस अनेकअसंख्या पुढोजूजू अग्निआदिइं अनेरउं वनस्पतीसचित्तसजीवकह्या अनेकअसंख्यात
जीवकस्मात्तीर्थंक ताजीवजिहा॥ आंसत्त्वप्राणी॥ शस्त्रपरिणम्याइं अचि तीर्थंकरगणधरिइं॥ अनंताजीवरूप
रगणधरिइ॥ त्तथाइ॥
चित्तमंतमक्खाया।अणेगजीवा पुढोसत्ता।अन्नत्थसत्थपरिणएणं।वणस्सइचित्तमंतमक्खाया।अणेगजीवा पु ४

पुढोजूजू लवणादिक अनेरइं तेवनस्पती अग्रइंजबी मूलइंज पर्वकातली खंधइंजबीज बीजथकी संमूर्छिम त्रणघडाल
आसत्त्वप्रा शस्त्रपरिणम्यइंअ नाजीवजिम जेहनइं बीजकं इंजबीजवे सालप्रमुख जेकपजइ बीजवि तावेलडी॥
णी॥ चित्तथाइ॥ छइतिमकहीय कोरंटका दादिक॥ खडीआदि तबावडप्रमुख जव गहूंसा माकग
४ इवइ॥ डिक॥१ क॥ २ लिप्रमुख॥५ इक्षुणादि॥६
ढोसत्ता।अन्नत्थसत्थपरिणएणं।तंजहा।अग्गबीया।मूलबीया।पोरबीया।खंधबीया।बीयरुहा।संमुच्छिमा।तणलया।व
वनस्पतीकायरूप तेवनस्प सचित्तसजीवकह्या अनेकअसं पुढोजूजूआ अग्निलवणादिक अनेरइं तेजवली इमे०पहआवा
इमबाहरादिकलि तीबाजुस तीर्थंकरगणधरिइं ख्याताअनंताजी सत्त्वप्राणी॥ शस्त्रपरिणम्यइं अचित्तथा लगोपालनइ प्रसिद्ध॥ त्र
श्रिइ॥ ६ हित॥ व॥ ५
णस्सइकाईया।सबीया।चित्तमंतमक्खाया।अणेगजीवा।पुढोसत्ता।अन्नत्थसत्थपरिणएणं।सेजपुणइमे अणेग ॥जरायुइवीदा
अनेकघणाबेंद्रि तेजिमछइ इंडाथ पोतवस्त्रादिको रसथकी परसेवाथी संमूर्छिमकी सुइस्सेदाना गर्भविनाऊ जेहकेहसाम ऊपजइगाइमनु
यादिकत्रसप्राणी॥ तिमकहइ काऊपना पक्षीइंवीडाऊ कपजइ कपजइजू डीमाखीपतंगा कन्यइंतीडी पजइनारकी न्याइकारिइं प्रा ष्यादि॥ २१.३
हइ पंखीयादिक॥ पजइहाथीप्रमुख हाप्रमु॥ प्रमुख॥५ याप्रमुख॥६ दिक॥७ देव॥ ली॥८
+ शाल्यादिक करिवउ। बहवेतसापाणा।तंजहा।अंडया।पोयया।जराउया।रसया।संसेइमा।संमुच्छिमा।उब्भिया।उववाइया।जेसिं केसिं चि
णीत्रसजीव मामुहइ पावउजा शरीरनउ शरीरहाथपगा संते इ:खथ आगतिआविवउ॥ जकीडाकृमिजाति जेह
नैप्रलदेम आविवउ॥ इवउ॥ संकुचिवउ दिकनउपसा समि कोउस नासिव तिर्कइवउ विजोयात पतंगियाचटरि वली
कीलेष.उ॥ रिवउ॥ वउ॥ गिवउ॥ ७॥ ह्नाजाणइतत्रसतेकह्या॥ डी॥ कुंथुआ
पाणाणं।अभिक्कंतं पडिक्कंतं संकुचियं पसारियं रुयं भंतं तसियं पलाइयं आगइ गइ विन्नाया।जे य कीडपयंगा।जा य कुंथु +गइ २
अनइपिपी सर्वबेंद्रीकाडा सर्वतेंद्रीकृमु सर्वचउरिंद्रीमा सर्वपंचेंद्रीनार सर्वतिर्यंचयोनियाज सर्वनारकीर
लिकाकीडी॥ रिक॥ १ आदिक॥२ षीआदिइं॥३ कीआदिइं॥४ लचरादिक॥५ नप्रमुखादिक ना॥६
पिपीलिया।सव्वे बेइंदिया।सव्वे तेइंदिया।सव्वे चउरिंदिया।सव्वे पंचिंदिया।सव्वे तिरिक्खजोणिया।सव्वे नेरइया। 5

सर्वंमनुष्यकर्म्मी सर्वेदेवतान्ये सघलाईत्र प्रथमसूत्रनो यहस्वलुनिश्चइएहलोटव्यादिक इणिप्रकारिइंपूर्वि इं
भिमि कादिकना बुनूपना स्रो सघाबुरसा असिलाषीवइ नीअपेकाइं एहछजीवनिकाय। नेसकायइमकहियइ कहातिहथी वो आदिक
सावमणुया। सवेहिंवा। सव्वपाणा। परमाहम्मिया। पासा खलुछज्जीवनिकाउ। तसकाउत्तिपवुच्चइ। इच्चेसिं छण्हं जीव
नकरवुं आपणपातइ दंडसे नकरावुं अनेरापाहइं छकायनउ दंडसमारंभउपद्रवादि अनेरउ कोइएक तेहनइं अ
छकायजीव घहंपरितापसमारंभउवद्रवादि इंसघइंपरितापआरंभउपद्रवादि ककरतउ इंछकाय नुमोदउंनहीं पुनइंसवउ
नइं। क। क। जीवनउ। कीधउं।
निकायाणं। नवसयं दंडं समारंभिज्जा। नेवन्नेहिं दंडं समारंभाविज्जा। दंडं समारंभंतेवि। अन्नेनसमणुजाणामि
जावज्जीवलगइंजी त्रिविधत्रिविध मनिइं वचनि कायाइं संघट्टउपरितापना अनेरापाहइं अनेरउ कोईएकसमारंभकरतउ इं
लगइंजीवउंताय इंकरी। करी। इंकरी। कराविशु दिकसमारंभवय इंसमाइंस तेहनइं सारुं जाणउंनहीं।
गो। षकरइ।मिनउं करउंनहीं। करावउंनहीं।
जावज्जीवाए। तिविहं तिविहेणं। मणेणं। वायाए। काएणं। नकरेमि। नकारवेमि। करंतंपि। अन्नं नसमणुजाणामि
तेछकायनउं अतीतकालि निंदउंआ गरहउं गुरु पापकर्म्मनाकरणहाराणो पहिलइंमहाव्रतिहिंसग इमशिष्यइंप्रश्नकीधउ पछीगुरु
समारंभकीधउं भगवन्तप त्मानीसा नासाषि तानाआत्मानइंवोसिरावउं वखाणिशिष्यपूछइ किसिउंक कहइ प्राण ४० तेहनाअतिपा
डिक्कमउंनिवर्त्तुं। षि। खउं। तेजीवघातथाकीविरम्यउ
तस्स भंते पडिक्कमामि। निंदामि। गरिहामि। अप्पाणं वोसिरामि। पढमे भंते महव्वए। पाणाइवायाउ वेरमणं। उनिवर्त्तवउं
हिवइंशिष्यकहइ अहोस्वंतसर्वप्राण तेकेहा।सूक्ष्म तवांबादर त्रसबेइंन्द्रि थावरपृ नकरउं।स्वयंपोतइं प्राणीजीव अनेरापा
नउअतिपातघाततेहनंपच्चषउंपरिहरउं। नान्हाजीव। मोटाजीव। आदि। विवीआदि। नउअतिपातहणिवउं। हइंप्राणा
सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चक्खामि। से सुहुमं वा। बायरं वा। तसं वा। थावरं वा। नेवसयं पाणे अइवाइज्जा। नेवन्न ५

जीवनउअतिपातहणिव प्राणीजीवनउअतिपा अनेरउकोईतेअनुमो जीवलगइंजीवउं त्रिविधत्रिविधि मनिइंकरी। वच
उं नकरावउं। तेहणिवउंकरतउइं दउंनहीं। तांलगी। इंकरी।
हिंपाणे अइवायाविज्जा। पाणे अइवायंतेवि। अन्नं नसमणुजाणामि। जावज्जीवाए। तिविहं तिविहेणं। मणेणं। वा
निइं कायाइं स्वयमेवह अनेरापाहइं प्राणघातकरताइंकोईअने तिपहिलइंमहाव्रतिइं दूषणलागा निंदउंआ गरहउंश्री
करी। करीश उंप्राणघा प्राणघातनक रातेहप्रतिइं अनुमोदउंनहीं। गउइंतां हिंसगवन्तापडिक्कम त्मानीसा गुरुनीसाषि
षकरइं तनकरउं। रावउं। उंतेहपापथकीनिवर्त्तउं। षि।
याए। काएणं। नकरेमि। नकारवेमि। करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि। तस्स भंते पडिक्कमामि। निंदामि। गरिहामि।
पहवउआत्मा अपरा पहिलउंहे भगवन्महा उव्रतसावधान सर्वेजेप्राणीजीवनेहना अतिपा वलीशिष्यपूछइ अपरआनरइवी उइं
धीवोसिरउं परिहरउं। व्रततेहआदरिवासम्यइ छउं। तहणिवउंतेहथकीविरम्या उनिव हइ अहोस्वंतपछि महाव्रतिहिस उंकरवउं।
लामहाव्रतकसो अनेतरा गवन्तामृ
अप्पाणं वोसिरामि। पढमे भंते महव्वए। उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं। अहावरे दुच्चे भंते महव्वए
तेगुरुकहइ हइंमृषावादं इमृषासत्यागुरुप्रतिइंशिष्यकहइ तेकिम् क्रोधथकी लोभथकी भयथ हास्यथ स्वयंपोतइंमृषाबोलउंनव
बोलानउंविरमणनिवर्त्तउं सर्वसूक्ष्मबादरमृषावादबोलउंत थकी। ग्रथवा २ की थकी २ की ४ दउंनबोलउं।
हे भगवन्तप्रत्याख्यानउं। थवा। २ वा। २
मुसावायाउ वेरमणं। सव्वं भंते मुसावायं पच्चक्खामि। से कोहा वा। लोहा वा। भया वा। हासा वा। नेवसयं मुसं वइज्जा। ने
अनेरापाहइंमृषाबोल मृषाबोलउं। अनेरउ कोईतेहप्रतिइंअनु जीवलगइंजीव त्रिविधत्रिविधिइं मनिइंकरी वचनिइं का
उंनबोलावउं। बोलतउइं मोदउं वषाणउं नहीं। उंतांलगी। करी। याइं करी।
वन्नेहिं मुसं वायाविज्जा। मुसं वयंतेवि अन्नं नसमणुजाणामि। जावज्जीवाए। तिविहं तिविहेणं। मणेणं। वायाए। का

दशवै० टबो

शिष्य नकरउं न नकरावउं न करता बीज काई अनेरा ते इस प्रति ई तेवीउ इमहाव्रति दूषण लागउ निंदउं आ गरहउं पडिक्कमउं आ
कहइ। बोलउं मृषा बोलावउं मृषा तो कूडूं मृषा अनुमोदउं नही। उकूडइं ते हे भगवन प्रडिक्कमउं त्मानी सा श्रीगुरु नासाखि त्मा अपराधी
कू बउं। कू बउं। कू बउं। ति ह पापथ की निवर्त्तउं। खि।
एणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पा
वोसिरउं प बीजउं हे भगवन महाव्रत उच्यउ साव सर्व जे मृषावाद कूडउं बोलि वलीशिष्य कहइ। अपर अनेरइं त्रीजइं ति गुरु कहइ
रिहरउं। दाश्रत ते आवरीओ स थीनउ उं। वउं तेह थकी विरम्यउं निव अप्रावीजो महाव्र जइ हे भगवन महा बइं अदत्त
२ णी। र्त्तउं बउं। तक सो अनंतर व्रति स्पर्श करवउं।
णं वोसिरामि दुच्चे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादा
दान अणादीधी लेवा इम संसली गुरु प्रति ई शिष्य कहइ छइ स ते अदत्तादा नगरन उ जादि ग्र घोडे मोल बहु मोलनूं नाहन्ऊ प्रमा पेल मो
थकी विरमण निवर्त्तन वस्तूं स्म बादर अणादीधी न उ लेवउं ते हे नागामनइ विषइ। ट्वीनइ उपरेडका सुवर्ण हिर णादिकना वहु दउ
णाओ वेरमणं सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चक्खामि से गामे वा नगरे वा रन्ने वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा
सचित्त शि
ष्यादिक। अचित्त शिलाप स्वयं पोतइ अदत्त आणादीधउं अनेरा पाहइं अदत्त आणादीधउं नग्र अदत्त आणादी
मुष। नग्रहउं नलेउं। लावउं नलेवरावउं। धउं ग्रहितां। सिता।
चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेव सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंते वि अ
अनेरा नइ अनुमोदउं जीलगइं जीव त्रिविध ते त्रिविधइं मनिइं क वचनि कायाइं क नकरउं न नकरावउं न करतां ने
वषाणउं नही। उंतांलगी। री। इं करी। री शिष्यक लेउं अदत्त वरावउं अदत्त तो अद
हइं। आणादीधउं आणादीधउं नअणादी
न्नं न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि

६

धउं कोई अनेरा ते तत्री जइ महाव्रति दूषण लागउ निंदउं गरहउं आ पडवउं आ वोसिरउं प त्रीजउं हे भगवन महाव्रत
इ प्रति इ अनुमोदउं जइ ते हे भगवन पडिक्कमउं ते आत्मा गुरुनी साखि त्मा अप रिहरउं। ते आदरि वासरी।
नही। इ पापथ की निवर्त्तउं। नीसाखि। राधी। ३
अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि तच्चे भंते महव्वए उव
उच्यउ सा सर्व जे अद तेह थकी विरमउ वली शिष्य कहइ छइ। अवप्रचो जो महा तेह गुरु कहइ छइ। मैथुन इम संसली गुरु प्रति
वस्तूं नइ लेने आणादीधं निवर्त्तउं छउं। व्रत कहा अनंतर अपर आनेरइं चउथ विषयसेवा न उ विरम इं शिष्य कहइ छइ स
उं छउं। उलव उं। इहे भगवन महाव्रति स्पर्श करव उं। णं निवर्त्तिव उं। थें उ। दारि कादिक।
ट्ठिओमि सव्वा[illegible]दिन्नादाणाओ वेरमणं अहावरे चउत्थे भंते महव्वए मेहुणाओ वेरमणं सव्वं भंते मेहुणं
मैथुन विषय तं मैथुन देव मनुष्य सं तिर्यंच योनि संबंधि यउ स्वयं पोतइ मैथुन विषय नसे अनेरा पाहइं मैथुन विषय न सेवा
सेवाते हे स्वग वता संबंधि बंधियउ। वउं नकरउं। वउं नकरावउं।
वचा प प्रथ मउं परिहरउं छउं। यउ।
पच्चक्खामि से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणियं वा नेव सयं मेहुणं सेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविं
वि मैथुन विषय सेवा अनेरा न उ अनुमोदउं जीलगइं जीवउं त्रिविध ते त्रिविधि मनिइं क वचनिइं कायाइं करी नकरउं
सेवतां करतां। वषाणउं नही। तांलगी। इं। री। करी। शिष्य कहइ उं मै
थुन
ज्जा मेहुणं सेवंते वि अन्नं न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न क
न नकरावउं मै करतां से अनेरा कोई तेह प्रति ई तिच उथइ महाव्रति दूषण ला निंदउं आ गरहउं आ पडवउं आ वोसिरउं प
थु वउं थुन न सेवाव वतां मै अनुमोदउं नही गउ कूडइं ते हे भगवन पडिक्कम त्मानी गुरुनी सा त्मा अपरा रिहरउं।
उं। थुन। उं ति ह पापथ की निवर्त्तउं। सखि। खि। धी।
रेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ४।

दशवैकालिक
+चिवउं तिप चवउं परिहरउं तेह

चउथउं हे भगवन् महाव्रत उपस्थित थाउं सर्व जे उदारिकादिक मैथुन वली शिष्य कहइ अथ पांचमा महाव्रत तिहां कहइ सर्व परिग्रह
व्रत तिह आदरिवा भणी थी निवर्त्तउं विषयसेवा थकी विरमवउं छइ व्रत कह्या अनेतर अपर आगलि पांच सर्वथी आपणा छांडी घणा तिह
चउत्थे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥ अहावरे पंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं ॥ स
इम सांभली गुरु प्रतिइं शिष्य कहइ हे भगवन् परिग्रह बहुमोल नान्हउ थोडउ मोटउ सचित्त
बहुं थोडउं पगरण सर्व मूल्य घणउं थोडउं सोलउं उंच मूल्यवंत माणिक्यादिक पांचकोडि जीवसहित स्वयं पोतइ परिग्रह ठेराखउं नही
हे भगवन् परिग्रह समता धरी राखी परंडादिक राढि की कृशोदिक इंकादिक द्रिक
व्वं भंते परिग्गहं पच्चक्खामि ॥ से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेव
अनेरा पाहइं परिग्रह ग्रहावउं नही ॥ परिग्रह ग्रहितउ राखतउ कइ ॥ कोई अनेरउ तेह अनुमोदउं वषाणउं नही ॥ जाव लगइं जीववउं तां लगी ॥ त्रिविधा त्रिविधि इं ॥
न्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहं परिगिण्हंते वि अन्नं न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
मनिइं वचनि कायाइं करी ॥ इं करी ॥ न करउं पइं करी शिष्य कहइ ॥ न कराववउं पइं करतउ परिग्रह राखतउ हउं कोई अनेरउ तेह प्रतिइं अनुमोदउं नही ॥ तिणि पांच महाव्रति इम हउं निंदउं आ गउ छइ तो हे भगवन् पडिक्कमउं आलोउं तेह पापथकी निवर्त्तवउं थि +११
मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि
गरहउं आ पहवउ वोसिरउं पांचमउ हे भगवन् महाव्रत उपस्थित थयउ सर्व जे परिग्रह ममता धरी राखि वली शिष्य कहइ अथ
गुरुनी आत्मसाखि परिहरिउं व्रत तिह आदरिवा भणी थी निवर्त्तउं ते परिग्रह थकी विरमवउं निवर्त्तवउं छइ पांचमा महाव्रत कह्या
साखि अपरा थी अनंतर अपर आगलि
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि पंचमे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ अहावरे छट्ठे भं +२२

नवि रमण निवृत्ति
अचित्त अजीव स्वर्णादिका
अचित्तमंतं वा २

व्रतिसंपन्न
तिह गुरु कहइ छइ रात्रिभो इम सांभली गुरु प्रतिइं शिष्य कहइ छइ तेरात्रिभोजन पाणी खादिम बहु स्वादिम स्वयं
हे भगवन् जनकरिवउं तेहनो वेसर्व थोडउ घणउ रात्रीभोजन आहार अन्न पक्वान्नादिक पाणी द्राष पानादि लवंगादि स्वयं
विरउं रमणी निवर्त्तवउं तिप चवउं परिहरउं दूधसालनादिक सुषी चिंकणादि पोते
ते वए राईभोयणाओ वेरमणं सव्वं भंते राईभोयणं पच्चक्खामि से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेव
रात्रिभोजन न अनेरा पाहइं रात्रिइं भोजन न रात्रिभोजन सुज अनेरउ कोई तेह प्रतिइं अ जाव लगइं जीव त्रिविधा त्रिविधि
भुंजउं न करउं भुंजावउं न करावउं तउ करतउ कइ नुमोदउं वषाणउं नही तां लगी इं
सयं राइं भुंजिज्जा नेवन्नेहिं राइं भुंजाविज्जा राइं भुंजंते वि अन्नं न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिवि
मनिइं करी वचनिइं करी कायाइं करी शिष्य कहइ न करउं रात्रिभोजन न करावउं रात्रिभोजन करतउ रात्रिभोजन कोई अनेरउ तेह प्रतिइं अनुमोदउं नही तिणि इंद्रिय ते आगउ छइ ते हे भगवन् पडिक्कमउं तेह पापथकी निवर्त्तउं
हेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमा
निंदउं आ गरहउं आ पहवउं आ वोसिरउं छठउं हे भगवन् उपस्थित थाउं सर्व जे रात्रिभोजन रात्रिइं थायवउं इति शब्द संपूर्ण
आत्मसाखि गुरुनी साखि आत्मा अपरा परिहरउं व्रत तिह आदरिवा भणी थी निवर्त्तउं तेह थकी विरमवउं निवर्त्तवउं छइ एह प्राणातिपात
वेरमणादिक पांच
मि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि छट्ठे भंते वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं इच्चेयाइं पंच
अनइं रात्रिभोजन नउ वेरमण एह व्रत आत्मानइ अतिशयसहुं अंगीकार करीनइं ते महाव्रतधर तथा भिक्षुणी स
महाव्रत परिहार तिहां छठउं व्रत नियम हितमोक्ष भणी विचरउं छुं वली जे पंचाचारित्रधर्मक भिक्षु साधु थी
सजाहित आत्मा कहइ छइ
महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठयाए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि से भिक्खू वा भिक्खुणी वा

दशवैका॰टबो

संजम विरतेंनि पचषाणनइकरिवइकरीप्रतिहृ दिवसनइ रात्रिन एकलउ अथवापरिषदा सूतांसथा अथवाजागतां तेपृथिवीपाषा
व्रत वर्तिउपाप तेहणपाछइपापकर्म्मनेजाइतेते विषइं अ इविषइ एकाकी लोकनाछेदमा रूपणथी विषुनइअर्थाविइं एारहितमाटी
संजयविरयपडिहयपच्चखायपावकम्मे दियावा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा सेपुढविंवा
नदीना भीतउपा नाकूउ सचित्तरजयरथाउ ... हाथिइंकरी पगिइंक काष्टना नाहूइकाष्ट
तटना पाणा पाषाण शरीर सचित्तरजयरथउ री कडइकरी नइथिड्इकरी आंगुलायइंक
माटी वस्त्रपात्रादिक री
भित्तिंवा सिलंवा लेलुंवा ससरक्खंवा कायं ससरक्खंवा वत्थं हत्थेणवा पाएणवा कट्ठेणवा कलिंचेणवा अंगुलीय
शिलाईयइकरी शिलाईनइहाथिइं सचित्तपृथिवीउ घणीप्रकारेलिष सचित्तपृथिवी सचित्तपृथि सचित्तपृथिवीउपरि अनेरापाह
सारवलीइंकरी परीएकवारघोडउ इनहीरेषा नइघटइचलावइ वीनइविदारइ कवारघोडउइ अनेरापा इंघलीप्र
ईलिषइनहीरिषाकाढइ काढइनही नहीतथासघटउक नहीखयंआ हइलिषावइनहीरेषाक कारेलिष
एवा सिलागएवा सिलागहत्थेणवा नालिहिज्जा नविलिहिज्जा नघट्टिज्जा नभिंदिज्जा अन्नं नालिहाविज्जा नविलिहा
रिषाक सचित्तपृथिवी सचित्तपृथिवीनइ सचित्तपृथिवीऊपरि अनेराकोइंघ सचित्तपृथिवी सचित्तपृथिवी अनुमोदउं ओलगाजीवियइ
हावइ नइअनेरापाह अनेरापाहइषाव अनेराकोईघोडउइ णप्रकारेलिष नइअनेराको नइअनेराकनेइ वषाणउं तांलगी
नही इंघट्इचलावइ दारावइनही लिषताजीवीकहताप्रतिइ वलीकोइ घइताथका विदारताजीवता नही
विज्जा नघट्टाविज्जा नभिंदाविज्जा अन्नंआलिहंतंवा विलिहंतंवा घट्टंतंवा भिंदंतंवा नसमणुजाणिज्जा जावज्जीवाए
त्रिविधंत्रिविध मनिइंकरी वचनिइं कायाइंक नकरउं नकरावउं करताप्रतिवीनीविराधनाअनेरा तेअतीतकालनापापथकी
विधिइं करी राशिप्रकरइ एहवी नपाडइहथि कोईतेहप्रतिइंअनुमोदउंवषा ऊइतेहसगलापडिक्कमउं
नेउपद्रव नउपद्रव
तिविहंतिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नं नसमणुजाणामि तस्सभंतेपडिक्कमामि ८

निंदउं गरहउंआ पहलउआ वोसिरउं तमहाव्रतधा अथवासा संयम विविधप्रकारि पचषाणनइकरिवइकरी दिवसनइवि
आत्मानी गुरुनी तमअपराधी परिहरउं एांसिकुसाधु धी यत परिहृतदत प्रतिहतदण्पाछइपापक विषइंअथ
साषि साषि नइविषइरयाएं मेंजाणइ वा
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि सेभिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरयपडिहयपच्चखायपावकम्मे दियावा रा
पकलउघ कउ। राति अथवापरिषदा सूतांसं अथवाजागतेउदकसारे उसपे हीमनउ जालनइअधियांपाणी वरसातगना एतलीजातिनांपाणीकरसनि
नइ लोकनाछेदमाहि थारइपो ताथकाणि वागीभूमिका हवा नउविडइनतीनाली नउआकी माहिंकेइजातिनइपाणी
*एगउवा २ विषइ वडउउथकउ। उग। शनइअसाविइ माहिंघकीऊ एगी ग्रीष्मउपा एगी नांअग्रऊपरि शानउपाणी इसीनउशरीर
उवा परिगउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा सेउदगंवा उसंवा महिमंवा हरतणगंवा सुद्धोदगंवा उदउल्लंवा कायं उदउ *धूयरिनउ पाणी २ करगं
*सा १ इमपाणीइं सस्निग्धसीनउं सस्निग्धसीनउना सचित्तपाणीइंसी घणीवार सचित्तपाणीइंसी घणुंइंसीन सचित्तपाणीइंसीघणउं *महियंवा करगं वा ३·२
सीनउवस्त्र नीलउशरीर लउवस्त्रलूगडउ नउवस्त्रघोडउ घणुघणुंफ नउवस्त्रघोडउ उवस्त्रआ नउवस्त्रघोडउइ इफाट *सारनीकचइ तपाणी २
लूगडउ। इफरसइनही। रसइनही। इंआमलइनही मलइनही। फाटकइनही कइनही
ल्लंवावत्थं ससणिद्धंवा कायं ससणिद्धंवा वत्थं नामुसिज्जा नसंफुसिज्जा नावीलिज्जा नपवीलिज्जा नअक्खोडिज्जा नपक्खो
चित्रपाणीइसीनउ घलउइंतइकइ सचित्तपाणीइंसीनउव अनेरापाहइंघ सचित्तपाणीइंसीन अनेरापाहइघ सचित्तपाणीइंसीनउ
वस्त्रादिघोडउइतइ नहाइस्वयंआ स्वअनेरापाहइएकवार तीवारघणुंघणुं उवस्त्रअनेरापाहइं ताउइआमला वस्त्रादिकअनेरापा
कइन धइ पछाड घोडउइंफरसावइनही इफरसावइनही घोडउइआमलावइ वइनही हइघोडउइझटकावइ नही
डिज्जा नआयाविज्जा नपयाविज्जा अन्नं नामुसाविज्जा नसंफुसाविज्जा नावीलाविज्जा नपवीलाविज्जा नअक्खोडाविज्जा
अनेरापाहइंघण सचित्तपाणीइंसीन अनेरापाहइंघ सचित्तपाणीइंसीन अनेरउकोई सचित्तपाणीइंसीन अनेरउकोई सचित्तपा णीइंसीनउव
उइझटकावइनही उवस्त्रअनेरापाहइं ताउइतइकइन उवस्त्रअनेरउको घणुंउइफरस उवस्त्रअनेरउको घणुंउइआमे स्वाअने रउकोइघो
घोडउइतइकइनहीवरावइ देवरावइ इघोडउइफरसताप्रति ताप्रतिइ। घोडउइआमलताप्रति लताप्रतिइ डउइझटकताप्रतिइ
नपक्खोडाविज्जा नआयाविज्जा नपयाविज्जा अन्नंआमुसंतंवा संफुसंतंवा आवीलंतंवा पवीलंतंवा अक्खोडंतंवा

9

॰ त४

दशवीकाटबो

अनेरउकोईअगविलपाणीस्त अनेरनाकोईघ आयणाईअनुमो जीवतआंजीविय त्रिविधत्रिविधइं मनिइ ववनिइ कायाइंक नकरउं
घणाइ सहक नउवलाअनेरकोई णाइंनइकहइ दस्वपाणइनही इंताजगी करी करी तिशिष्यकहइ पो
नाप्रति ३ हारुडइकरइ तीर्थनइ णपतिइ

पच्चक्खाइ नेव सयं आयावेज्जा न पयावेज्जा न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न क

नइपा नकरावउंअ पाणीनीविराधना अनेराकरतांप्र तिअतीतकालनापापलागो निंदउं गरहउंआ पहवठआ वोसिरउंपरि
णानं न्यपाइंइणाणी तिइंअनुमोदउंवपाणीनहीं कईतेहलागवयपडिकमउंतेह आत्मा गुरुनीसा आत्मपरी हरउं
उनपडव नउरुपडव पापथकी निव नउं नीसाखि खि थी

रेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से

तमहाव्रत अथवासा विरति प्रतिहतहण्याअइपचखाणाइंक दिवस अथवाति अथवापरिष सूतो अथवाजाग
धारीसाधुवा धी संयमवंत धर ज्ञानावरणीयादिपापकर्म नइवि जिनइवि दामाहिवइ धकां तो
हित्रिया जेणइ षइ षइ

भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे पएगओवा ३

तनपाआलोईनइ ज्वालारहित ज्वालसहित शिखा मूलअग्नि उंबाडउं इंधणरहित आकाशना पात्नीज्ञातिनाअ सघटनाक
अग्नि तत्तेअंगार नीअग्नि नइमिलती छोटआरूप वलीअग्नि उल्कादिक इंधणेकि रइमांहोमा
जाल कोपात प्रमुष घालइनदीआपणपइ हिं

से अगणिं वा इंगालं वा मुम्मुरं वा अच्चिं वा जालं वा अलायं वा सुद्धागणिं वा उक्कं वा न उंजिज्जा न घट्टिज्जा

अग्निनइ जलनो वीजणाइकरी वीजणाइकरीवि उल्लवइनहीं अनेरापाहइंधणा अनेरापाहइंस अनेरापाहइंअग्नि अनेरापाहइंवी
ज्ञानइंकदको इहिंवतीन शीघ्रइहिंवती स्वयंआपणपइ दिकघालइ नहीं घटकरावइंनहीं ज्ञानकहइकोक जणाइकरीअग्नि वतीकरा
हिनकरइ करइ नकरइ नहीं नवइन हीं वइनहीं

न भिंदिज्जा न उज्जालिज्जा न पज्जालिज्जा न निव्वाविज्जा अन्नं न उंजाविज्जा न घट्टाविज्जा न भिंदाविज्जा न उज्जालाविज्जा ४

अग्निनइज्वाजनइ कलकाकरतउ जइ १

आनगपाहइवीज अनेरापाहइं आनरउइंधणादिक सघटकरता वीजाउइक वीजणाइ उल्लवतउइं तिअनुमोदउवषाणा
णाइकरीविशेषिइ उल्लवाव घालतउ जइ तउज अहिवं करीविशे अनेरउको उं नहीं
हहिंवतीकरावइ इंनहीं तीकरत भिइहहिंव ई
नहीं उज्ज्वइ नउकरतउजइ

न पज्जालाविज्जा न निव्वाविज्जा अन्नं उंजंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा उज्जालंतं वा पज्जालंतं वा निव्वावंतं वा न समणुजा

जीवगइंजविय त्रिविधत्रिविधेण मनिइक ववनिइं कायाइंक करउंनहीं करावउंनहीं अग्निनीविराधनाकरताअने
इताजगी री करी पोतइंअग्नि अन्यपाहइंअ रापतिइंअनुमोदउवषाणउंन हीं
तिशिष्यकहइ नउपडव भिनउपडव

णामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणा

तेअतीतकालनउकीधउपाप निंदउंआ गरहउंआ अपराधीआत्माते तिमहाव्रतधी अथवासा संयम विरतिध प्रतिह
हिमगवनपडिकमउतेहपापी त्मानीसा गुरुनीसा सरउंविसर्जउं रीसाधु धी वंत र नइपच
थकीनिवर्त्तउं खि खि

मि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय विरय पडिहय

वइपचखाणइंकरीज्ञा दिवसन अथवाति एक अथवापरिष सूतो अथवाजाग तिसाधुसित वीजणइकरी
नावरणीयादिपापकर्म इविषम जिनइवि लो दामाहिवइठो तोथकां चामरइंकरी
मीठुणाइ षइ

पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से सिएण वा विहुयणेण वा

वासनइंतथावीजणइं कमलिनी केलिप्रमु हक्नाशा हक्नीजाल मोरपीछइ मोरपीछनीपूंज वस्त्रइंकरी वस्त्रनइ
डानइंवीजणाइ आदिकनइपा पनइपा पाडाल्इ नइखंडइकरी करी णाइंकरी एकइंछेहडइ इकरी
क री नइइकरी नइइकरी करी

तालियंटेण वा पत्तेण वा पत्तभंगेण वा साहाए वा साहाभंगेण वा पिहुणेण वा पिहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलक

दशविकाटबो

लेण वा हत्थेण वा मुहेण वा अप्पणो वा कायं बाहिरं वावि पुग्गलं न फुमेज्जा न वीएज्जा अन्नं न फुमावेज्जा न वीयावे

ज्जा अन्नं फुमंतं वा वीयंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न का

रवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से भिक्खू वा भि

क्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से बीए

सु वा बीयपइट्ठेसु वा रूढेसु वा रूढपइट्ठेसु वा जाएसु वा जायपइट्ठेसु वा हरिएसु वा हरियपइट्ठेसु वा छिन्नेसु वा छिन्नप

सा २

१०

इट्ठेसु वा सच्चित्तेसु वा सच्चित्तकोलपडिनिस्सिएसु वा न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न निसीएज्जा न तुयट्टेज्जा अन्नं न गच्छे

ज्जा न चिट्ठावेज्जा न निसीयावेज्जा न तुयट्टावेज्जा अन्नं गच्छंतं वा चिट्ठंतं वा निसीयंतं वा तुयट्टंतं वा न समणुजा

णेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजा

णामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहय

पच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से कीडं वा पयंगं वा कुंथुं वा पिपी

सा १

कीडीप्रु हाथनइं पगनइंवि बांहनइंवि साथलन पेटनइंवि मस्तकनइं वस्त्रनइं पात्रानइंविषइ कांबलानइं
त्रसजीव विषइ षइ षइ इंवि षइ षइ विषइ वि षइ विषइ

त्थिंसि वा हत्थंसि वा पायंसि वा बाहुंसि वा ऊरुंसि वा उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा पडिग्गहंसि वा कंबलंसि वा पा

पउंछणानइं ओघानइंविषइ गोछानइं कडछानइं दांडानइं बाजठनइंवि पाटियान उपाश्रान ढासादिक
विषइ विषइ विषइ विषइ मइतथा पाटिन इंविषइ इंविषइ नासंथारान
इंविषइ इंविषइ

यपुंछणंसि वा रयहरणंसि वा गोच्छगंसि वा उंडगंसि वा दंडगंसि वा पीढगंसि वा फलगंसि वा सिज्जंसि वा संथारगं

अनेरउपकरणि तथाप्रकारं साधुनइ क्रि तिहथानकथकी साधु सत्रिइं संयम कुइं उघादिकइं वास्त्रीपउ एकांतिइं
आनइं उपयोगी उपगरण तिमहि वारवार जोई जोई नइं जीपउं जीनइं जीवकुं अलगउ
विमाळनइं विषइ। इतेहनइं ऊयणाइ

सिवा। अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तउ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय एगंतम

मूकइ थानकविशेषि एकठा करी ईर्यासमितिविना अजय प्राणबेंद्रियादिकनइ तिहथकी ज्ञानावर तिहनइं तिक कुत्री
एकठा नकरइं पीडइ हिवइ उपदे एह इंवाललाहीइंतोषि तएकेंद्रियतेपप्राणनइ णीयादिककर्म अशुभफलनाणी
डोकुक पमाडइनहीं शाकहइ ॥१॥ को तजीवनइ हणइ बांधइ

वणेज्जा नो णं संघायमावज्जेज्जा। ॥१॥ अजयं चरमाणो य पाणभूयाइं हिंसई बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं

कुइ अजयणाइं असावधा प्राणभूतएकेंद्रियबेंइ तेहथकी ज्ञानावर तिहनणी ऊपनइं तेंकडु यतनविना अजयणाइं
॥१॥ नपणइ ऊभारहितो थका डियादिकजीवा तणइं णीयादिकपापकर्म या अशुभफलनणीकुइ ॥२॥ बइसतउथकउ
बांधइ

फलं ॥१॥ अजयं चिट्ठमाणो य पाणभूयाइं हिंसई बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥२॥ अजयं आसमाणो य

प्राणभूतएकेंद्रिय तिहथकी ज्ञानावर तिहनइं तिकडु अशु यतनविना अजयणा प्राणभूतएकेंद्रिय तिहथकी ज्ञा
बेइंद्रियादिकजी णीयादिकपापक अशुभफलनणी कुइ ॥३॥ सयनकरतउ सूतउ बेइंद्रियादिकजीवे नावरणीया
वहणइ र्म बांधइ थकउ हणइ कपापकर्म बां

पाणभूयाइं हिंसई बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥३॥ अजयं सयमाणो य पाणभूयाइं हिंसई बंधई पावयं क

तिहनइं तिकडु अशु यतनविना अजयणाइं प्राणभूतएकेंद्रिय तिहथकी ज्ञानावरणी तिहनइं तेपाकअशु यतन
भफलनणी कुइ ॥४॥ भोजनकरतउ जिमतउ बेइंद्रियादिकजीवने यादिकपापकर्म बांधइ भफलनणी होइ ॥५॥ विनाअ
थकउ हणइ बांधइ

म्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥४॥ अजयं भुंजमाणो य पाणभूयाइं हिंसई बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥५॥ अज

जयणाइं बोलत प्राणभूतएकेंद्रियबेंइ तिहथकी ज्ञानाव तिहनइं तेंकडु अशु शिष्यकहइ किमहलउ किमबइसउ कि
उ बोलतउ थकउ डियादिकजीवनइं ह रणीयादिकपापक अफलनणी कुइ ॥६॥ बोलतउ किमं ऊभउरहउ मशयनकरउं
णइ र्म बांधइ

यं भासमाणो य पाणभूयाइं हिंसई बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥६॥ कहं चरे कहं चिट्ठे कहमासे कहं

किमंभोजनकरउं किमं ज्ञानावरणीयादि गुरुकहइ यतनाइं चालि जयणाइं बइसतउ जयणाइं भोजनकरत ज्ञाना
बोलउं वचनबोलतउं कपापकर्म नबांधइ ॥७॥ तउ जयणाइं ऊभउरहि जयणाइं शयनक जयणाइं वचनबोलत वरणी
तउ रतउ उ यादि

सए कहं भुंजंतो भासंतो पावयं कम्मं न बंधई ॥७॥ जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए जयं भुंजंतो भासंतो पावयं

कपापकर्म सर्वभूतप्राणीनइं आत्म सम्यगप्रकारिइंदेखि प्राणातिपातादिक आश्रव ज्ञानावरणीयादिक प्रथमं जीवाजीवा
नबांधइ ॥८॥ भूतं आत्मसमानदेखवत कायादिकनइ आत्मसम इंद्रियादिकनइं दमइं पापकर्मनबांधइ ॥ दिकज्ञानजाणी
नइं नारंध तानइं डियपावपरवायुतानइं ज्ञातइ ज्ञानइ

कम्मं न बंधई ॥८॥ सव्वभूयप्पभूयस्स सम्मं भूयाइं पासओ पिहियासवस्स दंतस्स पावं कम्मं न बंधई ॥९॥ पढमं नाणं

कीदया इसमयमनेनसाधुइ अज्ञानज्ञानरहितथा स्यं जाणइ श्रेयपुण्यप्रकृ ज्ञानादिकसासल्पइ कल्पा अनइ ज्ञानादिकसाल
रोइ यानइसार्थिरहइ पइ३स्वठाकरस्यइ तिश्रथवा पावगं पापप्रकृति ११ तापुण्य प्रकृति जाणइ त्यइं पापप्रकृतिपुण्य जाणइ
तइयं पावस्स आगमो। अन्नाणी किं काही किं वा नाहीइ सेयपावगं ॥१०॥ सोच्चा जाणइ कल्लाणं सोच्चा जाणइ पावगं
ज्ञानादिकमासल्पइ उभयं पउइ श्रेयकल्पा जिको पृथिवीकायादि जिको अजीवसुवर्ण जिको जीव अनइ अजीवबि तिकि
पुण्यं अनइ पापबिहु जाणइ सं जाणइ तेसमाचरइ ११ कजीव न जाणइ दिकसयमनइ उपघातकारी नजाणइ जीं नजाणइ नइ लोग तोरुका
उभयंपि जाणइ सोच्चा जं सेयं तं समायरे ॥११॥ जो जीवे वि न याणाइ अजीवे वि न याणाइ जीवाजीवे अयाणंतो कहं सो
सतरप्रकार जाणइ जिको पृथिवीकायादिक जिको जीव अनइ अजी जिको सुवर्णादिक अ [illegible] संयम सत्तर
उपइ अपितु नजाणइ २ जीवनइ जाणइ वलिअजीव जाणइ, जीवनइ पुण जाणइ ता हुनिश्चइ संयम मात्रनइ विशेषपु जाणइ ३
नाहीय संजमं ॥१२॥ जो जीवे वि वियाणाइ अजीवे वि वियाणाइ जीवाजीवे वियाणंतो सो हु नाहीय संजमं ॥१३॥ जया
जिवारइ जीव अ पृथिवी इनइ बिहु तिवारइ नरकादिक सर्वसंसारीकजीव जिवारइ नरकादिक सर्वसंसारीकजीव तिवा
नइ अजीव, बहुभेद जाणइ च्यारप्रकारगतिप्रति नी जाणइ १४ च्यारप्रकारगतिप्रति नी जाणइ रइंपु
जीवमजीवया दोवि एए वियाणाइ तया गइ बहुविहं सव्वजीवाण जाणइ ॥१४॥ जया गइं बहुविहं सव्वजीवाण जाणइ तया
न्य अनइ पाप कर्मनउ बंध अनइ कर्म जिवारइ पुन्य अनइ कर्मनउ बंध अनइक तिवारइ भोग भला तिके दि
नउमोक्ष एसर्व जाणइ १५ पाप कर्मनउमोक्ष एसर्वजाणइ निर्वेद जाणइ देवतानाअ
पुन्नं च पावं च बंधं मोक्खं च जाणइ ॥१५॥ जया पुन्नं च पावं च बंधं मोक्खं च जाणइ तया निविंदए भोए जे दिव्वे
+भोगमइ असारकरी २

१२

नइ मनुष्यसं जिवारइ भोग पावइ इस्य जिभोग देवतानाअ तिवारइ चयइ सभ्रितरक्रोधादिक जिवारइ चयइ बो मभि
बंधीया १६ नाविविदयं असारकरी जाणइ नइ मनुष्यसंबंधीया छांडइ संयोग बाह्य पुत्रकलत्रादिक १७ छांडइ संयोग तरके
य माणुसे ॥१६॥ जया निविंदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे तया चयइ संजोगं सभिंतर बाहिरं ॥१७॥ जया चयइ संजोगं स
धादिक अनइ तिवारइ द्रव्यथकी पुत्र क्रोधादीलोचइ अणगारं जिवारइ मुंडद्रव्य पडिवजइ आगा तिवारइ संवर आश्रव
बाह्य पुत्रकलत्रादिक रमुंड थइनइ साधु संबंधी पडिवजइ अणगा कीरकआदरीनइ रपणनं नरूंधिवउ उत्कृष्ट
रता साधुपणउ १८
भिंतर बाहिरं तया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं ॥१८॥ जया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं तया संवरमुक्कं
धर्म श्रीवीतरागनउ फर सइ सेवइ अनुत्तर प्रधान १९ जिवारइ संवर आश्र वनउरूंधिवउ उत्कृष्ट धर्म श्रीवीतरागनउ अनुत्तर प्रधान फरसइ आदरइ तिवारइ धुणइ जा टक कर्म अ ठरूप रजपाप अबोधि मिथ्यात्वमति करीनइ मइलउ कीधउ २० धुणइ
धम्म फासे अणुत्तरं ॥१९॥ जया संवरमुक्कं धम्म फासे अणुत्तरं तया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं ॥२०॥ जया
टकइ कर्मरू अबोधि मिथ्यात्वमति तिवारइ सर्वलोक अनइ केवलदर्शन अ जिवारइ सर्वलोक अनइ केवल
पणारूपाप करीनइ मलिन कीधौ व्यापी केवलज्ञान सिगल्डइ रूपड पामइ २१ व्यापी केवलज्ञान दर्शन अभिगच्छइ रूपडइ पा
धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं तया सव्वत्तगं नाणं दंसणं चाभिगच्छइ ॥२१॥ जया सव्वत्तगं नाणं दंसणं चाभि
मइ तिवारइ लोक चउदराज जिनरागद्वेषरहित जा अनइ अलोक अनंत उ णइ केवली केवलज्ञा नी २२ जिवारइ लोकचउदरा जिनरागद्वेषरहित जाणइ अनइ अलोक अनंत णइ केवली केवलज्ञानी तिवारइ योग मन वचन कायाना व्यापार रूंधीनइ
गच्छइ तया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ॥२२॥ जया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली तया जोगे निरुंभि

दशविकाटबो

मिज्जपर्वतनीपरिइनिश्चलपणा जिवारयोगमनवचनकाय सैलसिपर्वतनीपरिइ निवारइकर्मनाआठप्रकार सिद्धिमोक्षिगतइजाइ
जोपडिवजइ आदरइ।जोलोकअलोक यानाव्यापारमनीनइ निश्चलपणउपडिवजइ आदरइ करतपापथीनइ कर्मरजनिवारीनइ॥२४॥
रूमकरइ
सेलेसिं पडिवज्जई॥२३॥जया जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जई तया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ॥२४॥
जिवारइकर्मआठप्रकार सिद्धिमोक्षिजाइ तिवारइलोकनइउपरि सिद्धथाइशाश्वत शब्दरूपरसगंधस्पर्शपांचविषयकामसे
करतपापथीनइ कर्मरजनिवारीनइ जनइसमस्तकिरपरिहरइ उनिश्चल॥२५॥ गनइविषइसुखसातीनइ श्रमणद्रव्य
साधुनइ
जया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ तया लोगमत्थयत्थो सिद्धो हवइ सासओ॥२५॥ सुहसायगस्स समणस्स सा
आगमियाकालनइसुविहइविष यावरीइकरीघणउंदा दोहिलीकुइसुगतिमोक्षादि तपगुणइकरीप्रधान रूजुमति
विजनइघणउसूईरहितानइ सपगादिकधोतानइ सत्गति तहवानइ॥२६॥ उपसमप्रधानतपस्वीनइ सरलचित्त
मेनइ
याउलगस्स निगामसायस्स उच्छोलणापहोयस्स दुल्लहा सोगई तारिसगस्स॥२६॥ तवोगुणपहाणस्स उज्जुम
क्षमाक्षनइसयम कुधादिकपरीसह सोहिलीहोइमोक्षादिसुगति पछइपुणतेमोक्षकावा क्षिप्रशीघ्रजाव
रतसेवतानइ उपतानइ सत्गतितिहवानइ॥२७॥ सावद्यनथी संयमथीप लडपामइदेवता
डीनइ डइ
इखंतिसंजमरयस्स परीसहे जिणंतस्स सुलहा सुगई तारिसगस्स॥२७॥ पच्छा वि ते पयाया खिप्पं गच्छंति अम
नालवनवि जेहनइप्रियवाल्लुउबारतप क्षमाक्रनइ इमएतेजीवणानामचउथउ सम्यकदृष्टिसाधुसाधी तिहोदि
माननावास वारलेदसंयमसतरभेद ब्रह्मचर्य॥२८॥ अध्ययनतेहनउपालियइ सदायत्नकरइ लडमाम
आश्री
रभवणाइं जेसिं पिओ तवो संजमो य खंती य बंभचेरं च॥२८॥ इच्चेयं छज्जीवणियं सम्मद्दिट्ठी सया जए दुल्लहं १३

दशविकाटबो

समाधि सईवतइ अनेरइमारगिहि जयमेवजयणासहित इगालिविलीलाअनइ तुसराशिकककसातधान्याविनरकइविवाइपरउ
वत
श्वयामर्गगसत शर्वरहितनइवधमारग तपराक्रमकोरवइ॥६॥ अगरहितवृक्षाविमित्यिगरह हिसानीनिवारीमानी रुमियापीन इविमइकरी
चत्रगिरे

समाहिए।अन्नमग्गेण जयमेव परक्कमे॥६॥ इंगालं छारियं रासिं तुसरासिं च गोमयं ससरक्खेहिं पाएहिं संजओ तं
मयतमाधुत नचरइयनथीआइवरसा मतियाधूयरिरूप महामोटउवाउवात तिरिछाडिशिइउडतापत नचारइयनथीआइ
आक्रमइओ नचरमतइमाधु विषकीपडइ इमकइ गादिकजीवातिवारइघुणा वेश्यानाघरनइस
पडनही॥७॥ मीपि
नाइक्कमे॥७॥ न चरेज्ज वासे वासंते महियाए व पडंतिए महावाए व वायंते तिरिच्छसंपाइमेसु वा॥८॥ न चरेज्ज वेस
तिवेश्यानउघरछइसबय ब्रह्मचारीनइइंद्रिय दोष्टाधडइतिहावेश्यानाघरनइ अनायतनवेश्यानाघर सप्तर्गसंबधवारवारक
नाश्रवनमाव्यहडानइ दमवाउनेहनइ समीपि विश्रीतभिकावितनी नइसमाधिविचरतानइ रता
आणइ विक्रिया॥९॥
सामंते बंभचेरवसाणुए बंभयारिस्स दंतस्स हुज्जा तत्थ विसोत्तिया॥९॥ अणायणे चरंतस्स संसग्गीए अभिक्खणं
इतिजहूंवतनइ आमनदंवारितनइवि तिहकारणथकी पखइ पहिलाकहयानिरो वडुइमाइदुर्गतिश्याना मुनिसाधएकांत
विषयपीडा पहसमर्थ मंदेहथाइ॥१०॥ वियाणीनइजाणीनइ पक्षिविनाविधारणा घरनउसमीपपणउं मोक्षमार्गनइआ
हा रा श्रयइ ११
हुज्ज वयाणं पीला सामण्णम्मि य संसओ॥१०॥ तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं वज्जए वेससामंतं मुणी एगंतमस्सिए
साणकूतिसूउतानइ दीप्तमातउ गोधम्म सडिबालकनउक्रीडा पतलावानासाधु इयाइनाविइकरीकरा स्त्रीजातिदपाइंपेलावे
वीआइमाइ इअनइहयघोडउअ हाथीनकरवइ दरिवीणतापरिहरइ तेनजीवइ इयाइनाविइ नधरइनालादिकजा
नईयवृदावी डिायुद्धजाणइ १२ इंकरीनीचउनऊंचइ णीश्रीकलवाकालउनबाहा
॥११॥ साणं सूइयं गाविं दित्तं गोणं हयं गयं संडिब्भं कलहं जुद्धं दूरओ परिवज्जए॥१२॥ अणुन्नए नावणए अप्पहिट्ठे अणाउले १४

अर्थसम्प्रत्युपरतद्रवत्वम्समस्तं॥ ॥

नितुसामन्नं कम्मुणानविराहि ज्ञासिन्निर्वामि॥२०॥ इतीवणिया नामत्ते त अज्झयणं सम्मत्तं॥ ॥ अ

सेपात्तिमिस्कव्वासंमि अमंसंता अमुछित इमणक मानुणागांसंनयाणांगविसा॥ ॥ सगामस्वानगरवाणा

यरगाणिंगउमुणी चरमंदमणु विग्गो अवक्खित्तेणावयसा॥ २॥ पुरउ जुगमायाए पेहमाणा महिंचरे वज्जंतोबीय

हरियाइंपाणायदगमट्टियं॥ ३॥ उवायविसमंखाणु विज्जलंपरिवज्जए संकमेणनगच्छेज्जा विज्जमाणेपरक्कमे॥

॥ ४॥ पवडंतेवसेतत्थपक्खलंतेव संजए हिंसेज्ज पाणभूयाइं तसे अदुवथावरे॥ ५॥ तम्हातेणनगच्छेज्जा संजएसु

इंदियाइंजहाभागं दमइत्ता मुणीचरे॥ १३॥ दवदवस्स न गच्छेज्जा भासमाणो य गोयरे हसंतो नाभिगच्छेज्जा कुलं उच्चावयं

सया॥ १४॥ आलोयं थिग्गलं दारं संधिं दगभवणाणि य चरंतो न विणिज्झाए संकट्ठाणं विवज्जए॥ १५॥ रन्नो गिहवईणं च

रहस्सारक्खियाणि य संकिलेसकरं ठाणं दूरओ परिवज्जए॥ १६॥ पडिकुट्ठकुलं न पविसे मामगं परिवज्जए अचियत्तं

कुलं न पविसे चियत्तं पविसे कुलं॥ १७॥ साणीपावारपिहियं अप्पणा नावपंगुरे कवाडं नो पणोल्लिज्जा उग्गहंसि अ

जाइया॥ १८॥ गोयरग्गपविट्ठोय वच्चमुत्तं न धारए ओगासं फासुयं नच्चा अणुन्नविय वोसिरे॥ १९॥ नीयं दुवारं तमसं कोट्ठगं

स्थानक आश्रय वह द्वारनउ अंधकारविषइ प्राणबेइंद्रियादिकजीवनउ जोईवानउ अशक्य तथा वराणइ कोठ अधुणानलिपिउ
यइ परिवर्जइ ॥ पुलि बहुप्रकारि इत्याक्षि दयवंत ग्रहित्रा २० साल्यादिकबीजअनेक कहवानइ विषइ पवनअनइकीलीउ

दशवैकालिकसूत्र

कम्मंपरिवज्जए ॥ अचक्खुविसउ जत्थपाणादुप्पडिलेहगा ॥२०॥ जत्थपुप्फाइंबीयाइं विप्पइन्नाइंकोट्ठए ॥ अहुणोवलित्तं
असंलोक दृष्टि दीठा कोठरउ आगरग वेलगवालक अजाणि पशुगायीउ लाडीनइ विउबिहाणाव उरहउ परहउ आजणाई
नइ परिवर्जइ परिहर बालक साणक्तिय कोठानि घरनइ विषइ माडिवइसवनही उल्लंघीनइ संयतसाधु २२ पालनहारि
२१ ॥

उल्लंदट्ठूणंपरिवज्जए ॥२१॥ एलगंदारगंसाणंवच्छगंवाविकोट्ठए ॥ उल्लंघियानपविसेविऊहित्ताणवसंजए ॥ २२॥ असंस
इ दृष्टि माडी अतिदूरवेगलोवस्तु दृष्टिनउ प्रसारणादि मिक्षाअणनाधइ दीनव सूमिनामर्यादा अति गोचरीइप्रवृत्तउथक
निषनजीवस दिवानई दृष्टिजो कहूहिउ माडीनइ वनअणवालउ पाछउ अमर्यादभूमि जाइ उमुनिसाधु
वइनहीं २४ जोईनइ वलइ अवगुणनलाधइ २३

त्तंपलोइज्जानाइदूरावलोयए ॥ उप्फुल्लंनविनिज्झाए ॥ नियट्टिज्जअयंपिरो ॥ २३॥ अइभूमिंनगच्छेज्जा ॥ गोयरग्गगउमुणी
कुलवंतगृहस्थनी भूमिनी तिहानिश्चइस्थान दृष्टिइक सूमिकानाविलागप्रवि स्नानकरिवानउस्थान संलोक
मिनामर्यादा जाणीनइ योग्यभूमिप्रवेश २४ ॥ जोईनइ उच्चकरइ विचक्षण चतुरमुनि कवडीनीतिकरिवान जोईव
उस्नानक परिवर्ज्जइ

कुलस्सभूमिंजाणित्ता ॥ मियंभूमिंपरक्कमे ॥ २४॥ तत्थेवपडिलेहिज्जा ॥ भूमिभागंवियक्खणो ॥ सिणाणस्सयवच्चस्ससंलो
इ सचित्त
स्तउवर्ज्जइ २५ दगपाणी अनइमाटी बीजशालिप्रमुख अनिशयस्त्रउपरिह सर्वइंद्रियकरासम तिसाधुनइ तिहांवि
बीकाय आणिवानउमार्ग नइहरीकायडोप्रमुख रीनइ उभउ रहइ माधिवंतसाधु २६ हरवा भाणिमनइ

गंपरिवज्जए ॥ २५॥ दगमट्टियआयाणं बीयाणिहरियाणिय ॥ परिवज्जंतोचिट्ठिज्जा ॥ सव्विंदियसमाहिए ॥ २६॥ तत्थसेचिट्ठमा

१५

विघहउ
भारीहे दातारि आणइपाणी अकल्पनीय अयोग्यवस्तु पडिगाहइ ग्रहणकल्पनी आहारतीआणतीसिया वांटइ अरहउपरहउ भ
तोयका अनइ लेउनअथ गाहातइ लेवडं वोहडनहीं योग्यप्रमाणइ तिह २७ कदाचितन छांतिधातेणा नाषइपडइ अभांदिक गा

णस्सआहारपाणभोयणं ॥ अकप्पियंनइच्छिज्जा ॥ पडिगाहिज्जकप्पियं ॥ २७॥ आहारंतीसियातत्थपरिसाडिज्जभोयणंदिं
नारि भोजन
दिकदेतीदातारिनें नकल्पइमुजनइ तेह संमर्दतीचांपतीप्राणी बीजशालिप्रमुख अनइ असयम अजयणानी तिहवउअ
प्रतिइ इमकहइ यत्नेनाधीनउ आणि २८ ॥ बेंद्रियादिकजीव हरियवनस्पतिकायडोप्रमुख करणहारिजाणीनइ आहिकव

तियंपडियाइक्खे ॥ नमेकप्पइतारिसं ॥ २८॥ संमद्दमाणीपाणाणि ॥ बीयाणिहरियाणिय ॥ असंजमकरिंनच्चा तारिसंपरिव
जीइपरि सचित्तादिकवस्तुपरठउ सचित्तपुष्पादिकसं तिमहीअसाधुन पाणीनउलाजनउर घरना आणणीनासचित्तपा
हरइ २९ करादेवाभणीअनेरइ ठामि घटी आणइनइ इअर्थिइ हउ करीनइ ३० ॥ णीमाहिंघस्सीनइ अथवा
घीनीनइ उरहउपरहउ काढीनइ

ज्जए ॥ २९॥ साहट्टुनिक्खिवित्ताणं ॥ सच्चित्तंघट्टियाणिय ॥ तहेवसमणट्ठाए उदगंसंपणोल्लिया ॥ ३०॥ आगाहइत्ताचलइत्ता
देणहारि आणइ पाणीअ अन्नादिकदेतीदाता नकल्पइमुजनइ तिहव साधुनिमित्तिपाहिलउस अथवा जाइ अवऊइहा अन्नादि
नइ लेउनं अन्नादिक रितिप्रतिइ इमकहइ उअयोग्य अन्नादिक ३१ विलपाणइंदाधषोईनइ वाटकादिकभाजन कडेतादा
धोईनइ

आहारपाणभोयणंदिंतियंपडियाइक्खेनमेकप्पइतारिसं ॥ ३१॥ पुरेकम्मेणहत्थेण ॥ दव्वीएभायणेणवा ॥ दिंतियं
तारिनेप्रतिइ नकल्पइमुजनइ तेहव इमगलतइपाणीतिथापा पृथिवीआदिकरजधरधूइ हरितालतथाहिं मणोसिलअ
इमकहइ उसदोष अन्नादिक ३२ णाइ लीनइ तथा माटीपरइ धूमधारइ गलुइ जणमरमड

पडियाइक्खे ॥ नमेकप्पइतारिसं ॥ ३२॥ एवंउदउल्लेससिणिद्धेससरक्खमट्टियाउसे हरियालेहिंगुलुएमणोसिला

दश॥ख्यो
२

तथालवलाइ॥३३॥ गारुय रानीमाटी वानीपालीमा सोरठी टरी करस्डिनउपीवना फूलफलादिकइ आपणरुइदस्या संसइसालणादिकइ परस्पर कालनाकूकसादिकतेताइक दिवसडीपडी उइसमकाणिवउत आहारनालवउ
अंरुणालोणा॥३३॥गारुयवन्निय सेडिय सोरट्ठिय पिठ कुक्कुसकए उक्कुट्ठमसंसट्ठे संसट्ठे चेव बोधव्वे॥३४॥ असं ॥३४॥
असाधइआइ अथवा बाह्इ कुड तदेताइ प्रतिइ वा जिणइकारणिसचित्त पाणीइ आदिकइ परथ अथवा बाहइ कुडवीइ हाथिइं बीजं तथा वाटकादिकइ वइनही पछइ तावतु पुष्पी वइ तेपछी टुकइ इम लीआइ ॥३५ इहाथिइं तथा वाटकादिकलाउ नइकरी
साहट्टु निक्खिवित्ताणं सच्चित्तं घट्टियाण य तहेव समणट्ठाए उदगं संपणुल्लिया॥३५॥ संसट्ठेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा
देताइ पुछीइं पडि छइ ग्रहइ उई तेह एषणीय निर्दोष आहारादिक कुइ॥३६॥ बिहुजणा भोजनकरता कुइ तिहां एक निमंत्रइ देवासणी तेइइ आचादिक देतां प्रति नइ वइ चीवइ नही तदेनउ वइ अभि प्रायुक्षी
दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा जं तत्थेसणियं भवे॥३६॥ दोण्हं तु भुंजमाणाणं एगो तत्थ निमंतए दिज्जमाणं न इच्छिज्जा छंदं से
बराषइपरं आदिकपइइ नदी॥३७॥ बिहुजणा भोजनकरता कुइ अनइ तिहां बिहुजणा निमंत्रइ देवासणी तेइइ आचादिकदेतां प्रति इं पडिग्रहइ ग्रहइ इस्जेतेह एषणीय निर्दोष पछइ आचादिक॥३८॥ गुर्विणी आधा नवेतस्यानइ
पडिलेहए॥३७॥ दोण्हं तु भुंजमाणाणं दोवि तत्थ निमंतए दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा जं तत्थेसणियं भवे॥३८॥ गुव्विणीए
अर्थइ विविध घणा प्रकारइ आषनीपनउ वालीपाणी भोजन पक्वान्नादिक भोगवी तुं वाव राखइ कुइ तेवर्जीइ परिहरइ पडइ जिम्या अनंतर शेषकइ गारतनापडिलइ इसइ॥३९॥ सियाकदाचित श्रमण गुर्विणी आधानवंसाधुनइ अर्थइ प्र तस्यानवमइमास वा
उववन्नं विविहं पाणभोयणं भुंजमाणं विवज्जिज्जा भुत्तसेसं पडिच्छए॥३९॥ सियाय समणट्ठाए गुव्विणी कालमासिणी ॥२६॥

उठइ उठियां आचादिकदे पूर्वी वासणीकइ उठी मासइ नइवलीबइसइ निसंनावइसीनइ वली ऊठइ॥४४॥ तेहवउं कुइ भातआचादिक अनइ पाणी तिसंयत साधुनइ अकल्पनीय अयोग्य दिंतियं आचादिक नकल्पइ मेम्या दिती प्रतिइ इमकहइ ऊनइ तेहवुं
उट्ठिया वा निसीएज्जा निसन्ना वा पुणुट्ठए॥४०॥ तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ
आचा दिक॥४१॥ थणगधवकाइ धवाना स्त्री दारगंकुमार प्रतिइ वा अथवा कुमारिकापुत्री प्रति तिहनइ हेठउ मूकीन रोवतउ पछइ आहार लेइ आ बड पाणी॥ अनइ भोजन॥४२॥ तेहवउं कुइ भातआ नइ पाणी
तारिसं॥४१॥ थणगं पिज्जमाणी दारगं वा कुमारियं तं निक्खिवित्तु रोयंतं आहरे पाणभोयणं॥४२॥ तं भवे भत्तपाणं तु
तिसंयत साधुनइ अ कल्पनीय अयोग्य आचादिकदेता प्रति इइ इमकहइ नकल्पइ मेम ऊनइ तेहवउं आचादिक॥४३॥ जे एहवउं कुइ सा तअनइ पाणी कल्पनीय योग्य अनइ अकल्पनीय अयोग्य एहवउं शंका सहित आचादिक दितीप्रति
संजयाण अकप्पियं दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं॥४३॥ जं भवे भत्तपाणं तु कप्पाकप्पंमि संकियं दिंतियं पडि
इइ इस कहइ नकल्पइ मेमऊनइ तेहवउं आचादिक॥४४॥ पाणी नइवारकघडइ करी ढीकइ हवानी वस्त्री हगपाणी अथवा पीढ बाजठ इइ करी अथवा नीसाइकरी वा अथवा लोटइ नीसाव इकरी अथवा माटी आदिकनइ लेपइ करी वा अथवा केलाइ कइ अथवा लाखप्रमुखइ करी बीजउ
याइक्खे न मे कप्पइ तारिसं॥४४॥ दगवारएण पिहियं नीसाए पीढएण वा लोढेण वा वि लेवेण सिलेसेण व केणई
तेबीजउं मुंद्रिकादिकइ उघाडीनइ द्वियइ श्रमणसाधुनइ अर्थइ आचादिकदेता प्रति यकं गृहस्थ तेइइ इमकहइ नकल्पइ मेमऊनइ तेहवउं आचादिक॥४६॥ अशन आचादिक वा अथवा पाणी खाद्य वाणी प्रमुख
४५॥ तं च उब्भिंदिउं दिज्जा समणट्ठाए व दावए दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं॥४६॥ असणं पाणगं वा वि ॥१८॥

दशविकाःटबो

खादिम गिरीप्रमुष तथा जे जाणइ आपणपइ अ दानयज्ञ वादनइं अर्थि तिहवइ कुइसात ते संयत साधुनइ अ अन्नादिक
वली स्वादिम मुखवासादि एवा परघकी सांभलइ ईं कीधउ छइ एहइ ॥४७॥ अनइ पाणी कल्पनीय अयोग्य दे ती

खाइमं साइमं तहा जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा दाणट्ठा पगडं इमं ॥४७॥ तं भवे भत्तपाणं तु संजयाणं अकप्पियं दिंतियं प

प्रतिइं नकल्पइ मेम कजनइ अशन अन्नादिक वा अथवा खादिम गिरी प्रमुख जे जाणइ पोतइ वा अथवा पुन्यपुरस्कव प्रमुख
मकहइ। तिहवइ अन्नादिक ॥४८॥ वा पाणी इषवाली प्रमुष एवली स्वादिम मुखवासादि वा सांभलइ परघकी प्रकृतिनो अर्थन इ अर्थि इकी

डियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४८॥ असणं पाणगं वावि खाइमं साइमं तहा। जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा पुन्नट्ठा पगडं इमं

तिहवइ कुइसात अनइ ते संयत साधुनइ अ अन्नादिक देतीप्र नकल्पइ मेम कजनइं अशन अन्नादिक वा अथव
॥४८॥ पाणी कल्पनीय अयोग्य तिइं इमकहइ तिहवइ अन्नादिक ॥५०॥ वा पाणी द्राषवाणी प्रमुष

मं ॥४९॥ तं भवे भत्तपाणं तु संजयाणं अकप्पियं दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५०॥ असणं पाणगं वावि

खादिम सुषडादिकात जे जाणइ पोतइ वा अ वनीमक भिक्षाच तेहवइ होइ अ ते संयत साधुनइ अ कल्पनीय
एवली स्वादिम मु एवा सांभलइ परघ रनइ अर्थि इं कीध नइ पाणी अयोग्य
खवा मादि की उ छइ एह ॥५१॥

खाइमं साइमं तहा जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा वणिमट्ठा पगडं इमं ॥५१॥ तं भवे भत्तपाणं तु संजयाणं अकप्पियं दिंतियं प

अन्नादिक दे नकल्पइ मेम कजन अशन अन्नादिक वा खादिम सुषडादिक जे जाणइ पोतइ श्रमणा निग्रंथ शा
ताप्रतिइं इमे कहइ इ तिहवइ अन्नादिक ॥५२॥ अथवा पाणी द्राषवाणी प्रमु तथा वली स्वादिम मुखवा सा दि वा अथवा सांभल इ परघकी क्यादिकनै हनइ अर्थि इं एह छइ टकीधु छइ

डियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५२॥ असणं पाणगं वावि खाइमं साइमं तहा जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा समणट्ठा पगडं इमं प ॥५३॥ २ १७

तिहवइ कुइसात ते संयत साधुनइ अन्नादिक देती प्रति नकल्पइ मेम कजनइ तिहवइ अन्नादिक ॥५४॥ लिवाधर नइ छइ छद्म नइ विघातक आलस अशुद्ध शुद्धमादिमि त्यई आधाकर्मी इंकरी मिश्र आधाकर्मादिक वकी आपहु
अनइ पाणी अकल्पनीय अयोग्य इं इमकहइ

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाणं अकप्पियं दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५४॥ उद्देसियं कीयगडं पूइकम्मं च आहडं

मूलथकी उद्देशक साधुनइ अनइ गृहस्थनइ तिहां गृहस्थनइ [illegible] किसइ अर्थि इं उपराइ वली तेंमा मलीनइ मिश्र पडिगाहइ इंगृहस्था
गामादि अर्थि आणी बि कुनइ अर्थि इं कीध उ ते मिश्र दिक नामिका कर्मइइं अथवा अनिरानइ किणा कारवितानु इनि करइ संयत साधु
कृताकरइ ध्यइ आनतेव कुंइ परिस्तरइ ॥५५॥ तजेसलगी अर्ध्यानिमूलक इ० आहारकीध ते। दी. घ.

अज्झोयर पामिच्चं मीसजायं विवज्जए ॥५५॥ उग्गमं से य पुच्छेज्जा कस्सट्ठा केण वा कडं सोच्चा निस्संकियं सुद्धं पडिगाहेज्ज संजए

अशन अन्नादिक वा अ खादिम सुषडादिक फूलनइ विषइ उन्मिश्र तथा बीज शालिप्रमु तिहवइ कुइसात ते संयत सा
एवा पाणी द्राषवाणी प्र तथावली स्वादिम मु अडतउ आसइ तउ कु पछ्अनइ हरीयका अनइ पाणी धुनइ अक
मुष खवास ऽ यनइ विषइ ॥५७॥

ए ॥५६॥ असणं पाणगं वावि खाइमं साइमं तहा पुप्फेसु होज्ज उम्मीसं बीएसु हरिएसु वा ॥५७॥ तं भवे भत्तपाणं तु संजयाणं

ल्पनीय अ अन्नादिक देतीप्र नकल्पइ मेम कजनइ अशन अन्नादिका खादिम सुषडादिकात उदक पाणीनइ विषइ निर्िं उत्तिंग
योग्य तिइं इमकहइ तेहवइ अन्नादिक ॥५८॥ वा अथवा पाणी द्राष वाणी प्रमुष एवली स्वादिम मुखवास रुकत कपरि मूक्यउ कुइ कीडीनइ यादिक

अकप्पियं दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५८॥ असणं पाणगं वावि खाइमं साइमं तहा उदगम्मि होज्ज निक्खित्तं उत्तिंग प

नाघरनइ विषइ तिहवइ कुइसात ते संयत साधुनइ अ अन्नादिक देतीप्र नकल्पइ मेम कजनइ अशन अन्नादिका वा अथवा
अथवा पनक फूल तं अनइ पाणी कल्पनीय अयोग्य तिइं इमकहइ तेहवइ अन्नादिक ॥६०॥ पाणी द्राष वाणी प्रमुष
लिनइ विषइ ॥५९॥

णगेसु वा ॥५९॥ तं भवे भत्तपाणं तु संजयाणं अकप्पियं दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६०॥ असणं पाणगं वावि खाइ

समासमनहा अगणिंमि होज्ज निक्खित्तं तं च संघट्टिया दए ॥६१॥ तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६२॥ एवं उस्सक्किया ओसक्किया उज्जालिया पज्जालिया निव्वाविया उस्सिंचिया निस्सिंचिया उव्वत्तिया ओयारिया दए ॥६३॥ तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६४॥ होज्ज कट्ठं सिलं वा वि इट्टालं वा वि एगया ठवियं संकमट्ठाए तं च होज्ज चलाचलं ॥६५॥ न तेण भिक्खू गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असंजमो गंभीरं झुसिरं चेव सव्विंदिय समाहिए ॥६६॥ निस्सेणिं फलगं पीढं उस्सवित्ता णमारुहे मंचं कीलं च पासायं समणट्ठाए व दावए ॥६७॥ दुरूहमाणी पवडिज्जा

१८

हत्थं पायं व लूसए पुढविजीवे विहिंसेज्जा जे य तन्निस्सिया जगा ॥६८॥ एयारिसे महादोसे जाणिऊण महेसिणो तम्हा मालोहडं भिक्खं न पडिगिण्हंति संजया ॥६९॥ कंदं मूलं पलंबं वा आमं छिन्नं व सन्निरं तुंबागं सिंगबेरं च आमगं परिवज्जए ॥७०॥ तहेव सत्तुचुन्नाइं कोलचुन्नाइं आवणे सक्कुलिं फाणियं पूयं अन्नं वा वि तहाविहं ॥७१॥ विक्कायमाणं पसढं रएण परिफासियं दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७२॥ बहुअट्ठियं पुग्गलं अणिमिसं वा बहुकंटयं अत्थियं तिंदुयं बिल्लं उच्छुखंडं व सिंबलिं ॥७३॥ अप्पे सिया भोयणजाए बहुउज्झियधम्मियं दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७४॥ तहेवुच्चावयं पाणं

दसवि॰कालिक

अथवा वार घडानउं धुल कथरो तथा चउ अहुणां तत्काल नउं धोयउ जे पाणी आणइं चिरकाल धोयउ पोतानी मति बुद्धिइं करी गृहस्थना
परस्या घडानउं धोयणी हिनउं पानउं धो विशेषइ करीइ परिहरइ ७५॥ लंघाणी वेलानउं धोयउ जाणइ अथवा देखीइं करीनइ पूछीनइ
नषरडी धालीनउं धोयणं धोयणं थयां। ठइ। पछाडि जीनइं सांधइ
अहुवा वारधोयणं संसेइमं चाउलोदगं। अहुणाधोयं विवज्जए॥७५॥ जं जाणेज्ज चिराधोयं मईए दंसणेण वा। पडिपुच्छि
तत्युं जे जे पाणी पवइ निस्संकि जीव रहित ते पाणी पडिगाहइ ग्रहण अथवा शंका सांभलीइं जीवइं थाइ जोइ
धणा वेला थयं शंकारहितं हुइ॥७६॥ मोपइं जाणीइ। करइ संयत साधु वइतउ रावउइ निश्चय करइ॥७७॥
ऊण सुच्चा वा जं च निस्संकियं भवे॥७६॥ अजीवं परिणयं नच्चा पडिगाहेज्ज संजए। अह संकियं भवेज्जा आसाइत्ताण रोयए॥७७॥
साधु अडीप्रति इंकइ इहां साधुनइ विषइ मा हरइ अतिहि नहीं अ समर्थ नहीं हुइ त्रिषा ते पाणी अति तम त्रिषा निवारवा नहीं
थोडउ मुज हाथइ जी इंस्युं थइं म जनइं वडाए अतिखाटउ कुसउं निवारवा नहीं॥७८॥ पीनात थाएउं कुसउं समर्थ नहीं हुइ
थोवमासायणट्ठाए हत्थगंमि दलाहि मे। मा मे अच्चंबिलं पूयं नालं तिण्हं विणित्तए॥७८॥ तं च अच्चंबिलं पूयं नालं तिण्हं विणित्त
तिवारइं तिहां ता रिय नं कप्यइ मे मउन ते अत्यन्त खाटउ हुसइ मन विना अनइ ते पाणी अहिनका अनइ अनेरा साधु
तिइं इमकहइं इंसेंदव उ पाणी॥७९॥ उ पाणी लीधउ हुइ। हुइ वुहस्य उ हुउ पीपोनइं पियइं नहीं नइ पुणनं द्यइ
सावधि ना।
ए। दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं॥७९॥ तं च होज्ज अकामेणं विमणेण पडिच्छियं। तं अप्पणा न पिबे नो वि अन्नस्स दा
॥८०॥ तिवार पवइं एकांत अचित्त थानक पडिलेहि जीवनइ यतन पवइ परिठवीनइ कदाचित एकरा प्रस्तावि इच्छे छीवं
थानकि जईनइ दइट्टि इड जोईनइ इर्या तिम परिठवइ रियावही पडिक्कमइ॥८१॥ ओवरी पकुतठय कउ उपाश्र
वए॥८०॥ एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया। जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प पडिक्कमे॥८१॥ सिया य गोयरग्गगओ इच्छेज्जा

रखेवा जोगव तिवारइं स्थानक घरइ पडिलेहि जोइ इट्ठ ईइ पतिलेवे गृहस्थनी आज्ञा मागी तत्स्थानक इणादिकइं हाथ शरीर मुहपत्तीइं
वा। मर्यादिक तथा भीतिनइ थीजोईनइ प्रासुक स्थानउ नइ मेधावी बुद्धिवंत साधु करी ऊपरि टांकी ता स पउजीनइं।
आश्रय इ। ग्रामांबी जोइ करहित॥८२॥ धु वुइ पामइ टांकइ गामि।
परिभोत्तुयं। कोट्ठगं भित्तिमूलं वा पडिलेहित्ताण फासुयं॥८२॥ अणुन्नवित्तु मेहावी पडिच्छन्नंमि संवुडे। हत्थगं संपमज्जित्ता तत्थ
तिहां भोजन करइ तिहां ते साधुनइ जी आहार माहि अट्ठियं क इ णातत्था काष्ठ तथा अथवा अनेरउ इसउं ते कांकरादिक
संयत साधु॥८३॥ जन करता थका लीउं तथा काटउ कां हुइ सक्करका करउ पणि तथाविध के शइ यतन साधिइ कपाडी
हुइ हुइ। कांकिका॥८४॥ नाखि मतिमत
भुंजेज्ज संजए॥८३॥ तत्थ से भुंजमाणस्स अट्ठियं कंटओ सिया। तणकट्ठसक्करं वावि अन्नं वावि तहाविहं॥८४॥ तं उक्खिवित्तु
टउना मुखिइं करीनइं भू हाथिइं करी ते काक एकांत थानकि एकांत थाकि आ अचित्त थानक पडिले पवइ उय
पइनहीं कीनाषइ नहीं राहिक ग्रहीनइ अलगउ जाइ॥८५॥ वीनइ। दइट्ट इइ जोवइ। णा सहित
न निक्खिवे आसएण न छड्डए। हत्थेण तं गहेऊण एगंतमवक्कमे॥८५॥ एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया। जयं परि
परिठवइ परिठवीनइ इरि कदाचित एकदा प्रस्तावि उपासरइ आवीनइं आहार पाणी सहित उक्किल लघुनीति संबंधी मात्रउं
यावही पडिक्कमइ॥८६॥ साधु इच्छइ वांछइ। लोजन करिवा ता उपासरइ आवी पडिलेहइ इट्टइ जोवइ॥८७॥
नइ।
ट्ठवेज्जा परिट्ठप्प पडिक्कमे॥८६॥ सिया य भिक्खू इच्छेज्जा सेज्जमागम्म भुत्तुयं। सपिंडपायमागम्म उंडुयं पडिलेहिया॥८७॥ वि
विनय सहित साधु जी गुरुनइं समीपि मु इरियापडिक्कमि जे आवीनइं पडिक्कमइ काउसग्ग नइ विषइ समस्त अतीचार हि
डी निसाही सल हुइ निसाधु इरियावहियां सलाइ काउसग्ग करइ॥८८॥ नाहामोलहियइ संभारीनइ मअनुक्रम
उपासरा माहि पइसी॥ इ।
णएण पविसित्ता सगासे गुरुणो मुणी। इरियावहियमायाय आगओ य पडिक्कमे॥८८॥ आभोइत्ताण नीसेसं अइयारं जह

ऊइतिम गोचराइंग्रातां आ नइं आवतां सातं अनइं पाणीना संयत साधु ॥८८॥ अविपरीतमतिइं उद्वेग पणारहित अनेरइं ठामि चित्त आ णाकरतउ आलाचइं कहइ गुरुन इसं मीपि

इकम्मं च गमणागमणं चेव भत्तपाणे व संजए ॥८८॥ उज्जुप्पन्नो अणुविग्गो अव्वक्खित्तेण चेयसा आलोए गुरु सगासे

ऊ आहारादिकजिमजि कदाचितु सम्यग प्रकारिइ आलोचि इंस्यं नथी इतिम उपयोग न हिइं आलोइउं नहुइ आलोइइं पूर्वकर्म प लेशाकर्म ऊइ तिहनी सोत्कृष्ट कर्म साधुसयम न काउसग्गकरी कायवो पडिकमितं गोचरचरि याप्रत इनउ पडिक्रमइ सिरावी एहवउं चीं तवइ अहो इति आश्चर्यो

जं जहा गहियं भवे ॥९०॥ न सम्मम आलोइयं होज्जा पुव्विं पच्छा व जं कडं पुणो पडिक्कमे तस्स वोसट्ठो चिंतए इमं ॥९१॥ अहो जि

ऊ जिनवीतरागइं असावद्य पापरहित वृत्तिनिर्वाह साधु नइं देखाड्या मोक्ष साधिवा नउ हेतु कारण साधुनइं देह शरीरना धारणा धरिवउ कडइ ॥९२॥ नमो अरिहंताणं एहवउ उच्चरी काउसग्ग पारी नइं लोगस्सुज्जो यगारं एह वउ जिन

णेहिं असावज्जा वित्ती साहूण देसिया मोक्खसाहणहेउस्स साहुदेहस्स धारणा ॥९२॥ नमुक्कारेण पारित्ता करित्ताजि

नउं स्तवन स्वाध्याय पंच प्रकार पूवी करी नइं वीसाम उ थाइइ क्षण एक मुनि साधु ॥९३॥ वीसाम उ लेइ नइं एहवउ चींतवइ हितलाभ कर्मनिर्जरा अनइं केइ मुझनइं अनुग्रह करइ साधु तउ हुं संसार समुद्र थी तर्यउ

णसंथवं सज्झायं पट्ठवित्ताणं वीसमेज्ज खणं मुणी ॥९३॥ वीसमंतो इमं चिंते हियमट्ठं लाभमट्ठिओ जइ मे अणुग्गहं कुज्जा

ते साधु संसार समुद्र उतारक हुं आमाहरउ ॥९४॥ ते साधु प्रतिइं प्रीतिइं करी नइं निमंत्रणा थाइ आ नुक्रमिइं गुरु पर्याय ज्येष्ठ अनुक्रम इं जइ तिहां केइ साधु इच्छइ वांछइ तउ तेह संघाति इं भोजन करइ ॥९५॥ अथ ए तला

साहू होज्जामि तारिओ ॥९४॥ साहवो तो चियत्तेण निमंते ज्ज जहक्कमं जइ तत्थ केइ इच्छेज्जा तेहिं सद्धिं तु भुंजए ॥९५॥ अह

न तरं कदाचित् कोइं न वांछइ तउ एकलउ भोजन करइ प्रकाश सहित भाजनिइं साधु जतन सहित सिद्धी काष्ठादिक इति कडुतुं कसाइलुं खाटुं

कोइ न इच्छेज्जा तओ भुंजेज्ज एगओ आलोए भायणे साहू जयं अपरिसाडियं तित्तगं व कडुयं व कसायं अं

बिलं व महुरं लवणं वा एयलद्धमन्नट्ठपउत्तं महुघयं व भुंजेज्ज संजए अरसं विरसं वावि सूइयं वा असूइयं

उल्लं वा जइ वा सुक्कं मंथुकुम्मास भोयणं उप्पन्नं नाइहीलेज्जा अप्पं वा बहु फासुयं मुहालद्धं मुहाजीवी भुं

जेज्जा दोसवज्जियं दुल्लहा उ मुहादाई मुहाजीवी वि दुल्लहा मुहादाई मुहाजीवी दो वि गच्छंति सोग्गइं त्तिबेमि

॥ पिंडेषणा अध्ययनन उ पहिलउ उद्देशउ ॥ ... पडिग्गहं संलिहित्ताणं लेवमायाए संजए दुगंधं वा सुगंधं वा सव्वं

दशविकालिकटबो

इएहिं... नत्तेमरानइविवइसमाय पडुनउयकठाम जतनइआहारइअर्थ उठउतकदालितेणइतेतलइ तिवारपछी आहारनइका
पइनही करवानाछिमनइविइ वरीनइविइ तिमहिआनइ लोकनकरीनइ आहारइसरइनही माकडनइकृषावदनायकर्मिम

नुछिंनहुए मिळ्ळानिमीळियाए समावन्नीयमायए आयावइस्सालोगाए ठइत्तणमेवए नतकामामुपाले

लौतंअनइपाणानाम विधिनंनुर्विक अहवाएतइअर अतिमामिनारिजविदरवा कालिइसम्प्रायलेवा विहरवान
वेषमाकरइले अउतमाइ अनितिकदोसहात नउकालतिरीरइविइवा दिकडउपाछउयलइ उअकाल
वाजइ गाइ।।२।। पडुवइमाधु

भत्तपाणंगवसए विहिमापुब्बतलेणउस्मरोत्तमासगय कालेणनिस्कमेमिस्कू कालेणायपडिक्कमे अकालंचं

वडुपरि निक्षानाकालनइवि उइअकालनइविषइवि अनइकालिइनही तउआत्मानइकिलाम अनइछेहस
हरीनइ यइजानिक्षाइपडुवइ चरिमिमाधु आइविहरवानामी नाक्रुपजीवि नीगरहुनि
दाकर्मिम।।

विवज्जित्ता कालेकालंसमायरे अकालंवरसिभिस्कू कालेनपडिलेहसि अप्पाणंचकिलामेसिसंनिवेसंच

हवुहरा वइबेलाइविवरं अनइत्रकरिम कदाचिनिक्षानलहइ तउतेअदियाभियइतप तिमहीउउतम
वइसही अतीसाधु पुरुषाकार नउपाकमककरिमि नीछदिइइइमवीनवीन मध्यमउडयनका
यथमइ पछीकामग्रीवेति

गरहसि सइकालेचरेभिस्कू कुज्जापुरिसकारियं अलाभोत्तिनसोएज्जा तवोत्तिअहियासए तहेवुच्चावयापाणा

रा नातअनइपाणी तउमाधुतिमामूइ उयणाइउदुगअ गोचरीइगयउ नवइसइकिसइ धर्मकथापुरुषति
दि नइआविइंआ उमनउ मजाएमि णकरनउ परमा कउ सहतानाथरनइति हीनकरइ
क व्याकुइ मकीरव बुइ

ताभत्तट्ठाएसमागया तंउज्जुयंनगच्छेज्जा जयमेवपरक्कमे । गोयरग्गपविट्ठोय ननिसीएज्जकत्थई कहंचनपबंधे २१

बइसीनइमयतमाधु।।८।। तीगलनउमामनया अथवाकमाडति अवलंबियविलगीन णावरीइगयउथक अमणमा
तीगलतहवारमानीगाथा अइमयतसाधु इनउनरहइ उमुनिमाधु।। कर्मादिक

ज्जाचिठित्ताणवसंजए।।८।।अग्गलंफलिहंदारं कवाडंवाविसंजए अवलंबियानचिट्ठेज्जा गोयरग्गगओमुणी।।९।।समणं

साधुवा अथवा किवणपिवली समीपिटकउउआ अथवापाणीनउ तिअमणादिकनइअतिक्र तेनिक्षाचरनाद्दष्टिम
जासूणनिपुइ ठनिक्षावर अन वनउपानुनइअ आविइंमयतमाधु।। मीउलंघीनइपइसइनही वरिउनउनरहइ
दवाणीमगनकदरिद्री पुइ

माहणंवाविकिवणंवावणीमगं उवसंकमंतंभत्तट्ठा पाणट्ठाएवसंजए।।१०।।तंअइक्कमित्तुनपविसे नचिट्ठेचक्खुगोयर

एकांतस्थानकप्रति तिहारहइमयत तिहाउनसाधुरहइनउ दीनारनहातेहविक् अप्रतीतिकदाचित्मन लघुताप
इाउइनइ साधु।।११।। वनापकनाकदरिद्रीतेह नइ नउभलिनपणउक्रध णाउाप्रव

एगंतमवक्कमित्ता तत्थचिट्ठेज्जसंजए।।११।।वणीमगस्सवातस्स दायगस्सुभयस्सवा अप्पत्तियंसियाहोज्जा लहुत्तं

वनसिहांतन गृहस्थइतेनिक्षावरनइंप्र तिवारपछीतेवनी तिहागृहस्थनइघरि अनइपाणीनइंअ नीलतकम
वांअथवाथाइ।।१२।। निषेधइअथवानिक्षादीधइ पकादिक गयइ थकइ कोइमानतनउआविइ विइंमयतमाधु।।१३।। लोवाअथ

पवयणस्सवा।।१२।।पडिसेहिएवदिन्नेवा तओतंमिनियत्तिए उवसंकमिज्जभत्तट्ठा पाणट्ठाएवसंजए।।१३।।उप्पलं

वाउत कुमुदकिरवनातिपा अनेराइकोइफूल तेछेदीनइदेणहारिना तिहवउमहोघंकडा तिसयतमाधुनइअक
उकमल अथवामगदतियमी सचित्तसहीव तपाणीआदिकथइ।।१४।। मानअनइपाणी ल्पनीयअयो
तानापानडी

पउमंवावि कुमुयंवामगदंतियं अन्नंवापुप्फसचित्तं तंचसंलुंचियादए।।१४।।तंभवेभत्तपाणंतु संजयाणअकप्पियं

अनादिक देनी प्रति नं कल्पइ में मऊ नइ । नीलउं कमल वा अ । कुमुद कैरव जाति वा अथ । अनेरा इ कोई फूल । तिणवालादिक दे
ऽऽमकदऽ । तिरवउं अनादिक ।१५। सवासितउ कमल । वा मगदंतिया मालती नापानइ । सचित्त सजीव । ग्राहरि समर्दीवा । पनी आवी नइ

दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१५॥ उप्पलं पउमं वावि कुमुयं वा मगदंतियं । अन्नं वा पुप्फ सचित्तं तं च सम्मद्दिया

सातपा साओ दिकछ । तिरवउ मवोघना । तिमे यन । अकल्प नी । अनादिक दे ताप । नं कल्पइ में मऊ नइ । सालुयं वा नीलोत्पल नउ कंद
तेअनइ पाणी कुश । साधु नइ । यअथी अ । तिइं ऽ मकहइ । तेरवउं अनादिक ।१७। वा अथवा विरालियं पलाश नी उ कंद

दए ॥१६॥ तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१७॥ सालुयं वा विरालियं कु

कुमुद कैरव नी नालि । मुणालियं पद्म नी नाल । उच्छुखंड सेलडी ना खंड अ । तरुणाउं कूंपल अथवा । रुक्खह वृक्ष नउ वा अथवा
काउत्पल नी नालि कोडी । सासवं सरसव नी नालि । शस्त्र अणपरिणम्या काचा ॥१८॥ । पत्र वा । तृण नउ

मुयं उप्पलनालियं मुणालियं सासवनालियं उच्छुखंडं अनिवुडं ॥१८॥ तरुणगं वा पवालं रुक्खस्स तणगस्स वा

अनेरउ कोइ हरियका । आमगं काचउ शस्त्र । तरुणी नानी कूंली छि । आमिं काची अपक्क । तिदेणहार इ प्रतिइं । नक
यनाल वलि नउ पल्लव । अणपरिणम्यउ वर्जी इ परिहरइ ।१९। वाडिं मूग प्रमुख नी फली । भज्जिय बीडी नकसेकी सयं एक वार । इं म कहइ । ल्पइ मे म

अन्नस्स वावि हरियस्स आमगं परिवज्जए ॥१९॥ तरुणियं वा छिवाडिं आमियं भज्जियं सयं दिंतियं पडियाइक्खे न मे क

ऊनइं ते । तिम ही ऊकली कोल बोर नउ । वलुयं वंशकरेल्ला का । तिल नी पापडी का । आमगं काचउ अग्नि अप्रमुष । तिम ही जव
हव जी ।२०। फल पाणी अग्निइं अणपाकउ । सवनालिय श्रीपर्णी ह । नी नाम नामइं कुन । इं अणपाकउ अग्नि मयस । नी चोषाक
कुनउ फल । उ फल । उ वर्जी इ परिहरइं नउ पी

प्पइ तारिसं ॥२०॥ तहा कोलमणुस्सिन्नं वेलुयं कासनालियं तिलपप्पडगं नीमं आमगं परिवज्जए ॥२१॥ तहेव चा २२

गाउ । नदी नला वादिक नउका । तिलपिंड तिलवट तथा । आमगं काचउ अणप । कविठं कउठ वा बीजउ मा । मूलगं मूलउ पत्र सहित
लोट । वउ पाणी अथवा तातउ । पूइ कुथितउं पिन्याग सर । रिणामी वल्या ते अवित्त । उलिंग बीजउरउ । मूलगत्तियं मूला नउ
पर उकाली त्रिण रहित । सवनउ खल । यमउं वर्जी इ परिहरइ ॥२२॥ कंद ।

लं पिट्ठं वियडं वा तत्तनिव्वुडं तिलपिट्ठ पूइपिन्नागं आमगं परिवज्जए ॥२२॥ कविट्ठं माउलिंगं च मूलगं मूलगत्तियं आ

आमं काचउं असत्र । मनिइं करी न इच्छा । तिम ही ऊकली बोरनउ । बीजउं बहेडा प्रमुख नउ । बिहेलग बहेडा नउ फल । आमगं
शस्त्रइं अणपरिणामउ । वांछइ नहीं ।२३। उफल नउ मथू चूर्ण । मंथू चूर्ण मान उ जाणिइं । पियाल चारोली नउं । काचउ
यइ । फल अग्नि

मं असत्थपरिणयं मणसा वि न पत्थए ॥२३॥ तहेव फलमंथूणि बीयमंथूणि जाणिया बिहेलगं पियालं च आमगं प

शायस्प उं वर्जी । समुदान की शुद्ध भिक्षा । धनइ करी ऊंचइ ना । नीचउ धन रहित कु । धनइ करी ऊंचउ घर । दयामणा रहि
इं परिहरइ ।२४। निर्दोष नइ विषइ विचे । चरइ कुल घरिइं सदा । लं घर उलंघी नइ । तिहां जाइ नहीं ।२५। तप्राण निर्वा
रइ प्रवर्त्तइ साधु । सर्वदा

रिवज्जए ॥२४॥ समुयाणं चरे भिक्खू कुलमुच्चावयं सया नीयं कुलमइक्कम्म ऊसढं नाभिधारए ॥२५॥ अदीणो वि

द आहारादि । पंडित साधु कदाचि । मूर्छा अ । लोऊन नइ । आहार नउ दोष रहित अश । बहु घणउं गृहस्थ । विविध नाना प्रका
+वा> कना गवेषइ । नं आहार न मिलइ इ । साधु रत । विषइ । मान प्रमाण । नादिक मही ।२६। नइं घरे छइ । रनउ स्वादिम फल
णा करइ । तना विषादें न पामइ । उ । नउ जाण । दिका अनइ स्वादि

त्तिमेसेज्जा न विसीएज्ज पंडिए अमुच्छिओ भोयणंमि मायन्ने एसणारए ॥२६॥ बहुं परघरे अत्थि विविहं खाइमसा

मसु । अणदीधइ वक इ तिहां । गृहस्थ इच्छा आवइ तउ । शयन शय्यादिक । आत अनइ पाणी । एतलां वाना आपणदेतां गृहस्थ
खवा । नइ विषइ पंडित साधु । घइ अथवा न द्यइ ।२७। आसन पाट लादि । संयत साधु । प्रतिइं कोप न करइ
स । कोप न करइ । कनइ वस्त्र

इमं न तत्थ पंडिओ कुप्पे इच्छा दिज्ज परो न वा ॥२७॥ सयणासणवत्थं वा भत्तपाणं व संजए अदिंतस्स न कुप्पेज्जा प
+सतः

दशवि०टबो

प्रत्यक्षं दामइं भय स्त्री जाति अथवा पुरुष अथवा हरबालक महत्त्व तिवारे तिवारे ते प्रतिइं अग्रहना कदाचित् अलदेता प्रति जुगट्टस्वनवा नाकनउ पुण २८ पिशाचका नवुमक गोरहवा बाल्लवक किह दिकथाइ मागइ महा इ करिनवचननबोलइ दइ तिसाधु

श्लोक वियंदीसउ ॥२८॥ इत्थियं पुरिसं वा वि डहरं वा महल्लगं वंदमाणं न जाएज्जा नो य णं फरुसं वए ॥२९॥ जनवंदे

तिष्टहस्थ तिसाधु किमइरजा इम चिन्ताया आमन्यवारित्रं वि कदाचित् एकदा सामा लोलइकरी नड्गु रथमा नइकोप रिकइ वांधुनीहइका लता साधुनइ ररहइ अदयालइ ॥३०॥ नमाधुनेलोइनतहइउ लवइडोकइ एहुतं इरत नकरइ रनकरइ। लोकने लाधउ लस्यउ एतो

नसेकुप्पेवंदिउनसमुक्कसे एवमन्नेसमाणस्स सामन्नमणुचिठइ ॥३०॥ सियाएगइउलद्धुंलोभेणविणिगूहइमामेयं

जनादिक दिपीनइ एआवायेदि सार आमानउथ बहुघणउं पाप सदा अमंतोषी इहलोकिसुख अनइ परलोकि देखाडिउं कस्यवपीतइलेसइ ३१ मा देखरन सामा कुपराउइ। उ तिसाधु कुइ मोक्ष नपामइ ३२ तेउ। न्यवती छोसीउ।

दाईयंसंतंदठूणसयमायए ॥३१॥ अत्तठागुरुउलुद्धोबहुपावंपकुव्वइ दुत्तोसउयसेहोइनिव्वाणंचनगच्छइ ॥३२॥ सि

कदाचित् एकलि विविध घणे प्रकारे घणा सहग सहग मारस्या माठउ रसरहित आमारउ जेहसणीप उपासराना एह मुनिना दं मोक्षरीइगयउं उपासी अनइ नोजन रसवत आहारादिक लाइतउपामरइलेइ साधु इम जाणइ जे ध आत्मार्थी अनइ लाधउ। लोगवी आहीर करी ओवडइ ३३ अथवा आ

याएगइउलद्धुंविविहंपाणभोयणं भद्दगंभद्दगंभोच्चा विवन्नंविरसमाहारे ॥३३॥ जाणंतुताइमेसमणा आययठी

यताघामो सनाथीकउ प्रांत लूखउपरिणामसं पीतानीप्र जानउ अर्थीय मानवादिक सन्मानवं बहुघणउं पापक राघा आरम आहारादिकसे उ इवकउ ३४ शानउ अलिताथीकउ स्वादिकनाकामा अति मोयसवइ कुपराज

अयंमुणीसंतुठोसेवईपंतंलूहवित्तीसुतोसउ ॥३४॥ पूयणठाजसोकामीमाणसंमाणकामए बहुंपसवइपावं

२३

अनइ मायारूप शल्य कुव्वइ सुरापीठानानापुना अनेरउ मदनउ केवलयाक वलीदिपइ पीता नउ यशी अथवा यशमी पियइ करइ कुपराउइ ३५॥ मेरगं मदिरा विशेष करमाहारे रसमे तिहमणी साधुमइ झपीय झाति आपणा उ राघ तउ थकउ एकला लेडी आदिक

मायासल्लंचकुव्वई ॥३५॥ सुरंवामेरगंवावि अन्नंवामज्जगंरसं ससक्खंनपिबेभिक्खू जसंसारक्खमप्पणो ॥३६॥ पियए

चोरअद मेमरुनइकोइ। तिपीमहारनइ देषउ निकृति मायानाकेलवणि देषउ वाधइ मोदियाजीननउं मायानउ करिवउ निनउ येहण जाणतउ नथी। दोषघणा इहलोक पर अनइ मोसलउ मउकहितीप्रति लोलुपपणउं तेपीणाही मृषानउ बोलिवउ दार। लोकसबधि या इलिहना अवगुण ३७ रनइ तिनि कुसा धुना

गइउतेणोनमेकोइवियाणइ तस्सपस्सहदोसाइं नियडिंचसुणेहमे ॥३७॥ वड्ढइसोंडियातस्समायामोसंचभिक्खुणो

इवा अनइ अयशाकुइ अ सततनिरतर असाधुपणा ज्याइ ह नित्य सदा उद्वेगलहइ जि पीतानां आत्मानइ कमई तेहवउ दुष्ट विमनउ धइ निर्वाणि सानी माहून लोकिआ ताविराधनामयमवि मतीचोर तिम उद्वेगपामइ इ करीनइ दुःख्यपामइ धर्मी मरणना अवसर इकुइ राधनाकुइ ३८ मतिदुष्टवि उ नइविषइ पुण

रकुणो अयसोय अनिव्वाणं सययंच असाहुणो ॥३८॥ निच्चुव्विग्गोजहातेणो अत्तकम्मेहिंदुम्मइ तारिसोमरणंतेवि

संवरचारित्रंनारा धमीवायनइ पुण आमणसाधुनइ पुणआरा गृहस्थपुणतेहनाग जेहसणी जाणइ ते एवं इणिविधिइं धइ आराधीनसकइ आगधइ नहीं धइनहीं तेहवउ दुराचार रह्यानिंदाकरइ दमनइ तेहवउ ४० अगुणनउ प्र इ ३९

नाराहइसंवरं ॥३९॥ आयरिएनाराहइसमणेआवितारिसो गिहत्थाविणंगरहंति जेणजाणंतितारिसं ॥४०॥ एवंतुअगु

णीगुणा गुणानउं विवर्जक अ तेहवउ दुष्टपरिणा मवस्यकर्ते आरा तपबारभेदकरइ मे प्रणीतस्निग्धरसआहा मद्यादिकआठमा रहित नियसदिकआणसेवि मा मरणातकाल धइनहीं ४१ धीवीबुद्धिवनसाधु रवर्जीमआलोच्चीकउ दषाव विरत रहित इकरी नइविषइपुण

णप्पेहीगुणाणंचविवज्जउ तारिसोमरणंतेवि नाराहइसंवरं ॥४१॥ तवंकुव्वइमेहावीपणीयंवज्जएरसं मज्जप्पमायविरउ

तेअठमदाजा तिमद १ कुलम २ बलमद ३ रूपमद ४ तपम दप ५ श्रुतमद लाभमद ७ ऐश्वर्यमद ८ आलस्य १ मोह २ अवज्ञा ३ दाघ ४ विकथा ५ पंचमायमा ए पंचेप माया। जीवापाडिति समारा २

२४

तवस्सी अइउक्कसो ॥४३॥ एवं उग्गोप्पिही अप्पणा तं विविहं ऊ तारिसो मरणंते वि आराहेइ संवरं ॥४४॥ आयरिए आ
राहेइ समणा यावि तारिसो गिहत्था वि णं पूयंति जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥ तवतेणा वइतेणा रूवतेणा य जे नरा आ
यारभावतेणा य कुव्वइ देवकिब्बिसं ॥४६॥ लद्धूण वि देवत्तं उववन्नो देवकिब्बिसे तत्थावि से न याणाइ किं मे किच्चा इमं फ
लं ॥४७॥ तत्तो वि से चइत्ताणं लब्भइ एलमूयगं नरगं तिरिक्खजोणिं वा बोही जत्थ सुदुल्लहा ॥४८॥ एयं च दोसं दट्ठूणं ना
यपुत्तेण भासियं अणुमायं पि मेहावी मायामोसं विवज्जए ॥४९॥ सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं संजयाण बुद्धाण सगासे २४

तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिइंदिए तिव्वलज्ज गुणवं विहरेज्जासि त्ति बेमि ॥५०॥ पिंडेसणा नाम पंचममज्झयणं सम्मत्तं ॥
नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं गणिमागमसंपन्नं उज्जाणम्मि समोसढं ॥१॥ रा
याणो रायमच्चा य माहणा अदुव खत्तिया पुच्छंति निहुअप्पाणो कहं भे आयारगोयरो ॥२॥ तेसिं सो निहुओ दंतो सव्व
भूयसुहावहो सिक्खाए सुसमाउत्तो आयक्खइ वियक्खणो ॥३॥ हंदि धम्मत्थकामाणं निग्गंथाणं सुणेह मे आयारगो
यरं भीमं सयलं दुरहिट्ठियं ॥४॥ नन्नत्थ एरिसं वुत्तं जं लोए परमदुच्चरं विउलट्ठाणभाइस्स न भूयं न भविस्सई ॥५॥ सखुड्ड

तह्यमावृत्तस्य व्याख्यायोरसीयानाक्र अखडंदंशयकविराधना तिमासलेङलेनवालेद्व दसत्रनुङ्आगयत जेशानकवालअशा
डकनवडा तेह मुला आनलिकहा रहित अफुटितमसेविराध निहवारङकहिमनं ६ तस्अत्तरस्थानक नासिवइ
सहितनतए स्पष्टं नारहित जिकवा

दशवैकालिकवृ गविय त्ताणं वाहियाणं च जे गुणा अखंडफुडिया कायव्वा तं सुणेह जहा तहा ॥६॥ दस अट्ठ य ठाणाइं जाइं बालोवरज्झई।
तिअद्वारमाहि अनेरड निग्रंथसाधुपणाथ प्राणातिपातादि कनत ६ अकल्पनीयपिंडादिकनत गृहस्थनांभाजनइमिव स्नानअंगादिवि
पकस्थानकडवनेतउ भ्रष्टथाड पृथवीकायादिककायषट्क सज्झायवर्जनं
तत्थ अन्नयरे ठाणे निग्गंथत्ताउ भस्सई ७ वयछक्कं कायछक्कं अकप्पो गिहिभायणं पलियंक निसिज्जा य सिणाणं सो
शीलाप्तना तेमा तिअद्वारमाहि श्रीमहावीरदेव अहिंसादयातेनिपुणज्ञ सर्वेत्रसप्राणीनइविषइ जेतलालोकनइ त्रसं
हिकनउसमाहि पहिलउस्थान भाख्युं लोक दीठी जाणवउ संयमअम्मध्यमबोरसर विषइ प्राणातिपात अथ
भवज्जणं ८ तत्थिमं पढमं ठाणं महावीरेण देसियं अहिंसा निउणा दिट्ठा सव्वभूएसु संजमो ९ जावंति लोए पाणा तस
वा वली तिप्राणनइ प्रयोजनइ नहणइ नमारइ पोतइ सर्वेसघलाइ समारी जीविवउ परकांइ तिहकारणथकां प्राणीनउं
थावर अनेरा आपणी तडप अनेरा नहणावइ अने जीवडनइवाछइ नवांछइ मरिवउ वधविनाशजाणीघोरतेरौद्रवइ
माटइ तापाहइ
अदुव थावरा ते जाणमजाणं वा न हणे नो वि घायए १० सव्वे जीवा वि इच्छंति जीविउं न मरिज्जिउं तम्हा पाणवहं घोरं
निग्रंथसाधु नेवर्जइ परिह आपणा आत्मानइ क्रोधथकी जइवा भय हिंसाकारी परपीडा अनेरा पासइ अनुबोल मृषावा
रहीत अलीकारइ ११ विरु वा अथवा परनइ अथवा नयु मानथकी करे मृषावाद वदावइ नहीं अनुमोदइ दउठ
निग्गंथा वज्जयंति णं ११ अप्पणट्ठा परट्ठा वा कोहा वा जइ वा भया हिंसगं न मुसं बूया नो वि अन्नं वयावए १२ मुसावा ५
अ मातनेपाय इहलोक भय परलोकभय अदानेनडइ अकस्मात भय मरणभय अकीर्तिभय

ओ लोगम्मि सव्वसाहूहिं गरहिओ अविस्सासो य भूयाणं तम्हा मोसं विवज्जए १३ चित्तमंतमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा
कनइविषइ सघला साधुइ जेहस्माथकी अविश्वास तिहकारणथकी मृषाजू सचित्त वा अथवा अल्प थोडउ अथवा
बहु दीतनउं शोधन तिणहस्था नउअवग्रहनउ तिअवर्त आपणपइ परं सुजनपासइ अनेरउ अटनकोइ
घणा मासलीभमुए नृपति आगयाविस नकाउड पोताना ग्रहइ देतउहिवनवडनहीं हितउ फुइ तेदहवातैडां
बहुं दंतसोहणमित्तं पि उग्गहंसि अजाइया १४ तं अप्पणा न गिण्हंति नो वि गिण्हावए परं अन्नं वा गिण्हमाणं पि ना
अनुमोदइ वशनाइ अब्रह्मचर्ये विषयसे विषयनप्रमादइड आदरइ मितइ नहीं चारित्रनउं भंड तेहसउथान पत्रहय
नहीं संयमसाधु १५ वा घोरतेरौद्रइन् दुष्टसविसइम मुनिसाधु लोकनइ कांतिहनाव झोलहार मुनि ६ यतीसाध
रउ धुनइस्रायीम विषइ मननउं
णुजाणंति संजया १५ अबंभचरियं घोरं पमायं दुरहिट्ठियं नायरंति मुणी लोए भेयाययणवज्जिणो १६ मूलमे
चोरी आदिदइ महादोषनइ तिहकारणथकी मिथु निग्रंथसाधु वर्जइ परिहर बिडलवणपाकउवणं तिला सर्पिघृ
मूलछइ उत्सतिनउंकरणहार नाविषयसेवानउं रइसहीत अलीकारइ १७ संधारीनउं पनउतं तोफाणियंव
समर्थनवथ ला
यमहम्मस्स महादोससमुस्सयं तम्हा मेहुणसंसग्गं निग्गंथा वज्जयंति णं १७ बिडमुब्भेइमं लोणं तिल्लं सप्पिं च फा
गुडा तिहसाधुतेहनामानिधि ज्ञातपुत्रश्रीमहावीर तिराधिवउ तेजालनउ प्रहथकीहनमानता जिकरावितेसन्निधिवाम
दिका वासीनपिवउ वांछइनं नायवचनइविषइ पर आगुयामात्र फरस अनेरवीहउ तिवितानाअमनांवाछाकरइ
दो जेरागीत वइ
णियं न ते सन्निहिमिच्छंति नायपुत्तवओरया १८ लोहस्सेस अणुप्फासे मन्ने अन्नयरामवि जे सिया सन्निहीकामे गि

दशवैकालटबो

तिहनइ छडी रुहस्वकहीयइप जिकोईवस्त्र कांवल तथा पात्र तेवस्त्रादिक संयमना धरइ राखइ अनइ परिहरंति य तेथ संयम
वस्त्रादिक साधु नकहियइ तथा पात्र श्री भगवंत रिजनी आज्ञा सहित नगबइ मूर्छारहित धकइ रणवस्त्रादिक

छुणं ॥१९॥ जंपिवछंवपायंवाकंबलंपायपुछणां तंपिसंजमलज्जठा धारंतिपरिहरंतिय ॥२०॥ नसोपरिग्गहो

परिग्रहनक स्तउ । ज्ञातपुत्र श्रीमहावीरइ रखवालइ छकायनइ रखवाला । मूर्छाधरइ तेपरिग्रह कहिउ इम श्रीमहावीरइ । एहवउं कहिउ महाऋषी सुधर्मा स्वामीइ ॥२१॥ छकायनी जयणा कारणि उपधि राखइ ते परिग्रह नथी । वस्त्रादिक परिग्रह नहीं तिण ... बलात्मा ... पोतानी

वुत्तो नायपुत्तेणताइणा मुच्छापरिग्गहोवुत्तो इइवुत्तंमहेसिणा ॥२१॥ सव्वत्थुवहिणा बुद्धा संरक्खणपरिग्गहे अविअ

इनइ विषइ पुण । तथा समस्त वस्त्रादिकनी ममता न करइ ॥२२॥ आश्चर्य इतिनिश्चय समस्त जिनवरइ वखाण्यउ एक भक्त ... तपस्या ... जिनलज्जा संयम समान ... कहियइ एक

प्पणोविदेहंमि नायरंतिममाइयं ॥२२॥ अहोनिच्चंतवोकम्मंसव्वबुद्धेहिंवन्नियं जावलज्जासमावित्ती एगभत्तंचभोयणं

सत्य ... वली छइ ए नइ अनेरा । त्रस अथवा थावर । जेह प्राणी रात्रिइ दृष्टि गोचरि न आवइ । ते किम शुद्ध निर्दोष आहार ... रात्रिइ ... करी सहइ ॥२४॥

॥२३॥ संतिमेसुहुमापाणा तसाअदुवथावरा जाइंराउअपासंतो कहमेसणियंचरे ॥२४॥ उदउल्लंबीयसंसत्तं

प्राणी जीव ... दिवसइ ते जीव वर्जइ रात्रिइ ... प्राणिहिंसारूप ज्ञातपुत्र श्रीमहावीर सर्व चिहुं प्रकारे आहार ... परिहरइ । विवर्जित ... ॥२५॥ दोषदेषीनइ ... भोजन न करइ

पाणानिवडियामहिं दियाताइंविवज्जिज्जा राउतत्थकहंचरे ॥२५॥ एयंचदोसंदट्ठूणं नायपुत्तेणभासियं सव्वाहारंनभुंजंति २६

निग्रंथ साधु रात्रिनइ विषइ भोजन ॥२६॥ पृथिवीकाय साधु हणइ नही । मनिइं करी वचनिइं करी कायाइं करी । त्रिणि प्रकार करण कराव णा अनुमोदना रूप त्रिणि करी । संयत साधु महा समाधिवंत ॥२७॥

निग्गंथारा इभोयणं ॥२६॥ पुढविकायंनहिंसंति मणसावयसकायसा तिविहेणकरणजोएणं संजयासुसमाहिया ॥२७॥

पृथिवीकाय हणतउ थकउ तेपृथिवीनइ आश्रय त्रस अनइ थावर विविध दृष्टिगोचरि आवइ ते अनइ ते हकारणइ थकी एह ... जीव तिणु हणइ घणा प्रकारे प्राणीजीव दृष्टिगोचरि आवइ न हीते ॥२८॥ वेअनइ आणीनइ ... इम ते

पुढविकायंविहिंसंतो हिंसइउतयस्सिए तसेयविविहेपाणे चक्खुसेयअचक्खुसे ॥२८॥ तम्हाएयंवियाणित्ता दोस

नीछ दिनउ पृथिवीकाय संघट्टन ... करणहारइ ... दुर्गतिना ... समारंभ वि ... इं परिहरइ ॥२९॥ तिण जावज्जीव लगी वर्जइ । आउकाय पाणी साधु हणइ नही । मनिइं करी वचनिइं करी कायाइं करी । त्रिविध करण कराव णा अनुमोदनरूप ...

दुग्गइवड्ढणं पुढविकायसमारंभं जावज्जीवाएवज्जए ॥२९॥ आउकायंनहिंसंति मणसावयसकायसा तिविहेणकरण

योगइ करी संयत साधु महा समाधिवंत ॥३०॥ आउकाय पाणी हणतउ थकउ तेह अपकाय पाणीनइ आश्रय त्रस अनइ थावर विविध दृष्टिगोचरि आवइ ते अनेरा जीव पुणि हणइ घणा प्रकारे प्राणी जीव अनइ दृष्टिगोचरि न आवइ तेपुण ॥३१॥

जोएणं संजयासुसमाहिया ॥३०॥ आउकायंविहिंसंतो हिंसइउतयस्सिए तसेयविविहेपाणे चक्खुसेयअचक्खुसे

ते हकारण थकी एह दोष दुर्गतिना वधारणहार जेसमारंभ विराधना अपकाय पाणीनइ जावज्जीव लगी वर्जइ परिहरइ ॥३२॥ जाणीनइ ... अग्नि ... पावक ... साधु वांछइ नही

॥३१॥ तम्हाएयंवियाणित्तादोसंदुग्गइवड्ढणं आउकायसमारंभं जावज्जीवाएवज्जए ॥३२॥ जायतेयंनइच्छंति पावगंजलइत्तए

ताथउ तेलवकी आन सघलाइ धकीं झीला रूपइ॥ पूर्वदिशिनइविषइ उर्द्ध ऊर्ध्वदिशिनइविषइ सघलीदिशिनइविषइ दहइ बालइ उत्तरादि
रउ कोई शस्त्र नथि स्वइ आश्रयी थयउ ३३ पश्चिमदिशिनइविषइ अनुदिशविदिशिनइविषइ दक्षिणदिशिनइवि दिशिनइविषइ
वी आश्रिकनइ

दशवैकालिकटबो तिक्खमन्नयरं सत्थं सव्वउ वि दुरासयं॥ ३३॥ पाइणं पडिणं वावि उड्ढं अणुदिसामवि॥ अहे दाहिणउ वावि दहे उत्तरउ वि य ३ ॥३४॥ दशवैकालिकटबो २३

प्राणादिक नइ प्राणी हव्यवाहन अग्नि इसउं तेअग्नि दीवानइ सयतसाधु कोइ पइ आरभइ तिहकारणथकी अग्निविराधनारूप
नइ घात अग्नि घातनउ संशय नथी सर्व इपकाशिवानी नहीं आरंभकरइ नहीं ॥ एहवउ जाणीनइ दोष तेदुर्गतिनउ वृद्धि
करणहार पवित्रवानइ अर्थइ

भूयाणमेसमाघाउ हव्ववाहो न संसउ॥ तं पईव पयावट्ठा संजया किंचि नारभे॥ ३५॥ तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं॥

अग्निकायनउ समा जीवजीवियइ तांलगी अनिल वाउकायनउ स बुद्धजिन तेहवउ बोल्या सावद्यपापबहुलउ एह वाउ
रंभविराधना वर्जइ परिहरइ मारनी उदीरिकइ विराधइ आरंभरूप करइ छकायना त्राइ तेहना आरंभ
नइ

तेउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए॥ ३६॥ अनिलस्स समारंभं बुद्धा मन्नंति तारिसं॥ सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहि

सेवियं तालवृंतवीजणइ आपाहइ नाडाल तेसाधु वीजिवउं वायुक अपरनीजापाहइवा जिहवस्त्रतिणइकरी
तिणइ सेवउ गइ पत्र पानइइ तेहनइ शाखाविषइ स्वयं इच्छइ वाउइ नहीं जिवउ वायु करावि प्रतिग्रहपात्रइकरी
उंतादिक ३७ करीनइ करीनइ वउ वाउइनहीं ३८

सेवियं॥ ३७॥ तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा॥ न ते वीइउमिच्छंति वीयावेऊण वा परं॥ ३८॥ जंपि वत्थं व पायं वा

कांबलइकरी पा तेसाधु वायु उदी उपयोग करइ तिमपूर्वइ तिहकारणथकी वायुनी विराधनारूप वायुकायनउ जेम
दपोंछनइ धर्मोपकरण तेहइ करी रइ नहीं गादिक क्रियाइ जीवइ ३९ एहवउं जाणीनइ दोष तेदुर्गतिनी मारनी विराधना
वृद्धिनउ करणहार

कंबलं पायपुंछणं॥ न ते वाउमुईरंति जयं परिहरंति य॥ ३९॥ तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं॥ वाउकायसमारंभं २०

तेजांजीवियइ तांलगी वनस्पतीकायनइ छेदिक मनिइं करि वचनइं क त्रिविधत्रिणप्रकाराकर
वर्जइ परिहरइ ॥४०॥ तेसाधु हणइ जेहइ नहीं रीकायइकरी समाधि अनुमोदन संयतसाधु महासमाधिवंत ४१
रूप योगिइ करीनइ

जावज्जीवाए वज्जए॥ ४०॥ वणस्सइं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा॥ तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया॥ ४१॥

वनस्पतीकायनइ हणतउ तेवनस्पतीनइ आ त्रस अनइ थावरा घणा दृष्टिगोचरि आवइ तेहनइ तिहकारणथकी एह वन
उपकरउ साधु आश्रयी जीवतेपुरुषहणइ प्रकारना प्राणीजीव दृष्टिगोचरि नावइ तेपुण ४- एहवउं जाणीनइ स्पत

वणस्सइं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए॥ तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे॥ ४२॥ तम्हा एयं वियाणित्ता दो

नीविराधनानउ दोष वनस्पतीकायनउ तेजांजीवियइ तांलगी त्रसकाय बेंद्रियादि मनिइं वचनिइं का त्रिविधत्रिण
तेदुर्गतिनी वृद्धिनउ जे समारंभविराधं वर्जइ परिहरइ ॥४३॥ तेसाधु हणइ मारइ यइकरीनइ प्रकाराकर
करणहार नहीं

सं दुग्गइवड्ढणं॥ वणस्सइकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए॥ ४३॥ तसकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा॥ तिविहेण

णीकरवा अनु संयतसाधु सदा त्रसकाय बेंद्रियादिक तिहत्रसनइ आश्र अनेक अनइ थावर विवि दृष्टिगोचरि
मोदनरूप योगि समाधिवंत ॥४४॥ हणतउ एक उ साधु आ जीवतेपुणहणइ धघणेप्रकारे प्राणीजीव आवइ तो
इ करीनइ ॥ अनइ दृष्टि

करणजोएण संजया सुसमाहिया॥ ४४॥ तसकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए॥ तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अ

गोचरि आवइ तिहकारणथकी त्रसनी विराधनारूप त्रसकायनउ स तेजांलगा जीवियइ तां जे आरंभ समा
नहीं तेपुण ॥४५॥ एहवउं जाणीनइ दोष तेदुर्गतिनउ वधार मारनी विराधना लगी वर्जइ परिहरइ ४६ नाविवाना करना दशवैकालिकटबो
णहार

चक्खुसे॥ ४५॥ तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं॥ तसकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए॥ ४६॥ जाइं चत्तारिऽभुज्जाइं

साधुनइं आहार२ शा तिहव्यारडावर्जतो संयममतरसेवइ पिंड आहार२ शय्या३ पा वउथइं पात्रइं अकल्पनीय अयो
ग्य२ वस्त्र३ पात्र४ परिहरतउ साधु निपालइ॥४७॥ श्रय्य२ अनइं वस्त्र३ निश्चइं मतेइडइं वांछइन

दशवीकालावबो इसिणाहारमाईणि छाइं अविविहं तो संजमं अणुपालए॥४७॥ पिंडसिज्जं च वत्थं च चउत्थं पायमेव य अकप्पियं न इच्छि

पडिगाहइ ग्रहइ कल्प जे नित्यपिंड निमंत्रण इत्तं वेचात उल्यउड्इं ते साधु जीव अनुमोदा एहवउं कह्यउं महाऋ
ही तउं जाणइ ते॥४८॥ पिंड ममायंति ग्रहइं व्यउ श्रीकाधु इतेल्यइं आहडुं वरन ते घात अनुमो षी श्रमहावीरइं॥४८॥ मू.२

ज्जा पडिगाहिज्ज कप्पियं॥४८॥ जे नियागं ममायंति कीयमुद्देसियाहडं वहं ते समणुजाणंति इइ वुत्तं महेसिणा॥४९॥
तिहकारण धकी अ विचातउ आतपउउड्इं वर्जइ परिहरइ छि निर्ग्रंथ साधु धर्मजीवी संयम कांसानावाटिकानइ कुंडमाय
अनपानखादिम श्रीकाधउत मारमउं रक्षा तमानोछियेवेत जीवतव्यनाधणी॥५०॥ विषइ कंसपात्र कांसा हाथीनां
स्वादिम आत्म उतत नापात्रे आलीनइ विषइ माणइ आ

तम्हा असणपाणाइं कीयमुद्देसियाहडं वज्जयंति ठियप्पाणो निग्गंथा धम्मजीविणो॥५०॥ कंसेसु कंसपाएसु कुंडमो
कारवंतमाटी तिहनइ विषइ भोजनक आचार साधु संबंधी सचित्तपाणी नउवि कांसानापात्रादिकमा आइं जे छिन्नंति
आदिक नाजाज रहतउ अशनपान खा आवकी भ्रष्ट थाइ॥५१॥ ठेवइ आरंभ थाइ ऋषीमडानीताधोइनां वेदारु हणाइ जे
ननइ विषइ कांसी दिम स्वादिम भुंजतउ थती एहिवा आदि के त्रसथावर

ए सु वा पुणो भुंजंतो असणपाणाइं आयारा परिभस्सइ॥५१॥ सीओदगसमारंभे मत्तधोयणछड्डणे जाइं छिन्नंति भूयाइं
तउ तिहां गृहस्थनाभाजन गृहस्थनइं भाजनि जिमतो मिथ्याकहाय तिहिं पश्चात्कर्म प्रमुख निश्चइं साधु गृहस्थना का आ
नइ विषइ जिमता असंयम॥५२॥ पूर्वकर्म पश्चात्कर्म तिहां गृहस्थनइं भाजन लिवानइ अर्थि ने साटिकनाउन नइ विषइ
निन कारइ नेजइ पाहीरनइ करइ॥५३॥ स

दोषदश दिट्ठो तत्थ असंजमो॥५२॥ पच्छाकम्मं पुरेकम्मं सिया तत्थ न कप्पइ एयमट्ठं न भुंजंति निग्गंथा गिहिभायणे॥५३॥ आसं १८
+नइ जीम लकउलइ करी धावइ १ +वेक २

वुडाउ जवइमनं मां मंचे बाटला नइ विषइ अविचिवतं आदरिव आसंदी नइ मांचि पर्यंक गादी सहित सुखा
विषइ पल्य आसालए उली गणम तेनसी आइय साधु बइसिवउं अनइ सूयवउं ढोलिय इनवइ मड सनिनबइमइ नेत्रस
कटोला विषइ हितु मासकु नवि मिय नइ आसनि नबइमइ

दीपलियंकेसु मंचमासालएसु वा अणायरियमज्जाणं आसइत्तु सइत्तु वा॥ नासंदीपलियंकेसु न निसिज्जा न पीढए
निग्रंथ साधु अणपडिलेहे बुद्ध जिननी आज्ञा अनुष्ठा पआसमध्य कगम्भीर छ प्राणजीव दृष्टिइं करी जे आसंदीनइ आसनादिका पाट
डिइं पडिलेहनइ नहीं तिणि ननइ विषइ मावधान कामरहित कुड यांपडिलेहानजाइ पर्यंक ढोलियादिक अर्थि इं

पीढए निग्गंथापडिलेहाए बुद्धवुत्तमहिट्ठगा गंभीरविजया एए पाणा दुप्पडिलेहगा आसंदीपलियंका य एयम
साधुनइं वर्जिवा गोचरी इं पइठउ थाय निषिद्या गृहस्थनइ घर तिमाधु एहवउ जे आ आवजइ पामइ बोधिर ब्रह्मचर्यनी वि
परिहरिवा उधकउ रि निक्षेप बइसिवउ करइ गतिकरा स्पइ तेहथ हित मिथ्यात्वफलरूप पतिविना शक
उ अनाचार

ट्ठं विवज्जिया गोयरग्गपविट्ठस्स निसिज्जा जस्स कप्पई इमेरिसमणायारं आवज्जइ अबोहियं विवत्ती बंभ
प्राणजीवनउ वध करइ हइ वनीपक भिक्षाचरनइ अगारी गृहस्थनइं क्रो ब्रह्मचर्यनी अगुप्ति स्त्रीजाति थी शंका उपजइ ब्र
म्ह आधीक मा करइ प्रतिघात कुडा भिक्षा न पा धकपकइ म्हीजाति ऋपरि भंगजाइ ब्रह्मचर्यनाफल कसां नेबइ कइनं
मइ

चेरस्स पाणाणं च वहे वहो वणीमगपडिग्घाओ पडिकोहो अगारिणं अगुत्ती बंभचेरस्स इत्थीओ यावि संकणं
कुशीलनी वृद्धि नउ स्था इ हवेगलउ वर्जइ आगलि कहीसाइ ते त्रि निषिद्या गृहस्थनइ घ अतिजरइं व्यापि उ व्याधीउ रोगी
नक गृहस्थनइ घरि परिहरइ साधु णिमाहि अनेराकनइ निवइ सिवउ जिमनइ क हइ तेहनइं १ उ तेहनइं २
बइसिवउ लाइ न कहइ कहइ

कुसीलवड्ढणं ठाणं दूरउ परिवज्जए तिण्हमन्नयरागस्स निसिज्जा जस्स कप्पई जराए अभिभूयस्स वाहियस्स

दशविकालवृ

[illegible]

वाहिउवा अगणीवा मिलीणाजाउपजोवाकोतालादीइ आयारा जलादवेइ मजाणो मतिमेसु

[illegible]

कुमाणाणा घसासमिलगासुय जयनिक्कू मिलायंति वियडिगुणिलावए तम्हातेनमिलायंति सीएणउ सिणा

[illegible]

णावा जावजीवं वयंघोरं असिणाणमहिडगा सिणाणं अदुवा कक्कं लोद्धं पउमगाणि य गायस्सुवट्टणठाए ना

[illegible]

यंति कयाइ वि निगिणस्स वावि मुंडस्स दीहरोमनहंसिणो मेहुणा उवसंतस्स किं विभूसाइ कारियं वि

[illegible]

भूसावत्तियं भिक्खू कम्मं बंधइ चिक्कणं संसारसायरे घोरे जेणं पडइ दुरुत्तरे विभूसावत्तियं चेयं बुद्धा मन्नं

[illegible]

ताति सस्मावकं बहुलं वेयं नयताइ हिं सवियं ६३ खवंति अप्पाणममोहदंसिणो तवे रया संजम अज्जवगुणा

[illegible]

धुणंति पावाइं पुरेकडाइं नवाइं पावाइं न ते करंति ६ सओवसंता अममा अकिंचणा सविज्जविज्जाणुगया जसं

[illegible]

सिणो उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा सिद्धिं विमाणाइं उवेंति ताइणो त्तिबेमि ६८ [illegible]

[illegible]

चउण्हं खलु भासाणं परिसंखाय पन्नवं दोण्हं तु विणयं सिक्खे दोन्नि न भासिज्ज सव्वसो १ जायस

[illegible]

च्चा अवत्तव्वा सच्चामोसा य जा मुसा जाय बुद्धेहिंनाइन्ना न तं भासिज्ज पन्नवं २ असच्चमोसं सच्चं च अणवज्ज

ककंश समुपेह विचारीनइ पहवी जिसवाणी भाषाइ एअर्थेभावद्य भाषा जे भाषा नमाडइ नि तसाधु भाषा सत्याम्र त्यपि
सुकुमाल संदेहरहित बोलइ प्रशीवतमाधु ३ हिंसकवाअनूराई वारवाआसत ने मो माकोई सावीकाई ए भाषा
सदोष भाषा दि
अकक्कसं समुप्पेहमसंदिद्धं गिरं भासिज्ज पन्नवं ॥३॥ एयं च अट्ठमन्नं वा जं तु नामेइ सासयं स भासं सच्चमोसं पि तं पि धीर म
हीनसाधुव वितहं पिषीटीभाषा तहा पत्तीआवडइ तिणिकारणि ते बोलता नउतेहनेउ ... ... तिणेकारणि
अंडटालइ ॥४॥ मोतिं मूर्तिरत्री पुरुषनइ वे पहवी जे भाषा ना हारफरसे ज्ञापाविइ वउ जि भाषा बोलइ तत आम्र प्रभाति
विवरी नइ इमकहइ थुइ साधु करी तउपाणइ करि बधाइ ... ...
रो विवज्जए ॥४॥ वितहं पि तहामुत्तिं जं गिरं भासए नरो तम्हा सो पुट्ठो पावेणं किं पुण जो मुसं वए ॥५॥ तम्हा गच्छामो
ईत्यादि अर्थ अमुक कामभणी हउं अमुक कार्य अथवा प्रसाधु माह इत्यादिकभाविलोउ आगामियाकाल
तहनइ कहि हितो माहरउ ज्ञसाइ करिस्यइ जे रउं कार्य करिस्यइ ॥६॥ अवधारिणी भाषा नइ विषइ सदेहा
वक्खामो अमुगं वा णे भविस्सई अहं वा णं करिस्सामि एसो वा णं करिस्सई ॥६॥ एवमाई उ जा भासा एसकालम्मि संकि
संप्रति वर्तमानका तियुगाधीरसाधुव पच्चुप्पन्न वर्त्तमानका जे अर्थ विचारतथा एमई जएह
लिपुणसदेहाली छांडिपरिहरइ ॥७॥ अतीतगयांकालने लेनइ विषइ आगामि नामकडापरिनज्ञ वर्तेसाधुन
इविषइ याकाललेनइ विषइ गाइ
या संपयाईयमट्ठे वा तं पि धीरो विवज्जए ॥७॥ अईयम्मि य कालम्मि पच्चुप्पन्नमणागए जमट्ठं तु न जाणेज्जा एवमेयं ति
बोलइ ॥८॥ अतीतगयां काल वर्त्तमानकालनइ जिहां शंकाउ कार्य तिहां तेपइमइ जइ अतीतकालनइ विषइ
नइविषइ विषइ आगामियाका नउ निश्चय नकुवश मं साधु नबोलइ ॥९॥
लनइविषइ
नो वए ॥८॥ अईयम्मि य कालम्मि पच्चुप्पन्नमणागए जत्थ संका भवे तं तु एवमेयं ति नो वए ॥९॥ अईयम्मि य कालम्मि

वर्तमानकालनइ संदेहरहित कुवइ एइमईजएहवंउकह तिमईजकनेरकहिना गुरुमोटा जीवना सावीतेपुण भाष
विषइ आगामियाका उउअर्थ तुजाइ धीनि इसाधु ॥१०॥ भाषाजेहदामईत्यादिक उपघातनीकरणहारि नबोलिवी
लनइविषइ रवड्यूपुणकुइतिहा
पच्चुप्पन्नमणागए निस्संकियं भवे जं तु एवमेयं ति निद्दिसे ॥१०॥ तहेव फरुसा भासा गुरुभूओवघाइणी सच्चा वि सा न वत्तव्वा
जउ जेहथकी तेहनइ अस तिमहीजकोईनेत्र तिमपडगनपुंस तिमव्याधीयानइ री तिमतिणचोरनइ चोर एणइत
मधिरुपजइ आपमानइ इकाणनउइ तेहन कनइनपुंसक गीआकोढीइत्यादिक इमसाधुनकहइ ॥१२॥ थाअनेर
पापनउ आगमनथाइ ॥११॥ इकाणउ इअर्थेइं
जओ पावस्स आगमो ॥११॥ तहेव काणं काणे त्ति पंडगं पंडगे त्ति वा वाहियं वा वि रोगि त्ति तेणं चोरे त्ति नो वए ॥१२॥ एएण
परं आगिलउ जिणिवचनि आचारभावनउ जा तेभाषानबोलइ तिमहीजहोहोलहगोलएहे हिकुतिरहेअन्या
इकरीहृहवाइ गाअनई भाषानादोषनउ प्रज्ञावतसाधु ॥१३॥ अंतरसबोधननइविषइ अ थनाकरणहारहे
जाणु निएवचनवाचीवइ हेघनहिन्नाल
न्नेण अट्ठेणं परो जेणुवहम्मई आयारभावदोसन्नू न तं भासेज्ज पन्नवं ॥१३॥ तहेव होले गोले त्ति साणे वा वसुलि
त्ति दमए दुहए वा वि नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥१४॥ अज्जिए पज्जिए वा वि अम्मो माउस्सिय त्ति य पिउस्सिए भायणिज्ज त्ति
दुहएहिताकनिषारहे एहवाउवेवननबोलइ हिआजीमाताना पितानी हिमाता हेमातानी हिपितानीबहिनिफूईहेव
इसीगअलषामण प्रज्ञावंतसाधु एहपुरुष माताहेपजिप आजीनी बहिनिमामी हिनिनीवेटीभाणेजी
नइ आला एइ ॥१४॥ मातातपडजी
हिधूयादीकरीपहनतूईदीकरी पुतलाराइ आनइहेइ लिनइ इसामिनापुर लिहोलेहेगोलेहेहप आनइइमनबोलो
नोटीकरा पुतवड नामइसाधुन लेहेरानहे अ नेहेअ स्थानवाचीशइहेगोमि लिपगन्नवाचीशइ वइस्साधु ॥१६॥
बोलावइ आनइ आपइ लिरी ति गइयली लाइदइ
धूए नत्तुणिय त्ति य ॥१५॥ हले हले त्ति अन्ने त्ति भट्टे सामिणि गोमिणि होले गोले वसुले त्ति इत्थियं नेवमालवे ॥१६॥
पराइ ॥१५॥

दसवै॰ नामधिज्जेणणंबूयाइत्थीगुत्तेणवापुणो।जहारिहमभिगिझआलवेज्जलवेज्जवा॥१७॥अज्जएपज्जएवाविवप्पो
चुल्लपिउत्तियामाउलाभाइणिज्जत्तिपुत्तेनत्तुणियत्तिय॥१८॥हेहोहलेत्तिअन्नेत्तिभट्टिसामियगोमियाहोलगोल
वसुलित्तिपुरिसंनेवमालवे॥१९॥नामधिज्जेणणंबूयापुरिसगोत्तेणवापुणो।जहारिहमभिगिझआलवेज्जलवेज्जवि
वा॥२०॥पंचिंदियाणपाणाणंएसइत्थीअयंपुमं।जावणंनविजाणिज्जातावजाइत्तिआलवे॥२१॥तहेवमणुसंपसुंप
क्खिंवाविसरीसिवं।थूलेपमेइलेवज्झेपायमेत्तियनोवए॥२२॥परिवुड्ढेत्तिणंबूयाबूयाउवचिएत्तियसंजाएपीणिए ३१

वाविमहाकाएत्तिआलवे॥२३॥तहेवगाउदुज्झाउदम्मागोरहगत्तियवाहिमारहजोगत्तिनेवंभासेज्जपन्नवं॥२४॥जु
वंगवित्तिणंबूयाधेणुंरसदयत्तियरहस्सेमहल्लएवाविवएसंवहणेत्तिय॥२५॥तहेवगंतुमुज्जाणंपव्वयाणिवणाणिय
रुक्खामहल्लपेहाएनेवंभासेज्जपन्नवं॥२६॥अलंपासायखंभाणंतोरणाणिगिहाणियफलिहग्गलनावाणंअलं
श्री उदगदोणिणं॥२७॥पीढएचंगबेरेयनंगलेमइयंसिया।जंतलट्ठीवनाभीवागंडीयावअलंसिया॥२८॥आसणंसयणं
जाणंहोज्जावाकिंचुवस्सए।भूओवघाइणिंभासंनेवंभासेज्जपन्नवं॥२९॥तहेवगंतुमुज्जाणंपव्वयाणिवणाणिय

दशवैकालिक सूत्र — पत्र के बाद पत्र

दशवैबो | इहे महा मोटा देषीनइ करीतीर्थंकरनेइ एहेवउ उत्तमजातिना ए वृक्ष दीघा लांबा नालेरी प्रमुख वृक्ष वा नीपना जिसी शाषा ते डाल इं
रुक्खा महल्ल पेहाए एवं भासेज्ज पन्नवं ॥३०॥ जाइमंता इमे रुक्खा दीहवट्टा महालया पयायसाला विडिमा वए दरिसणित्ति य ॥३१॥
दिता तहा तिमा फल आंबा पाषि घाला नइ षाइवा वेला ए लेवा सरीषा वहि एपुमा वे ध्या गीवारी असंथडा ए आंबा फलनइ ब
बोलइ ॥३१॥ बादिक नी पाकी छइ योग्य इम पचिइ साधु नवी बंध टाल एकला करिवा योग्य इम न बोलइ सारवेवी ऊपाडी मक
ल्पइ बी जब ध्याना नथी नाल बइ
त्रय ॥३२॥ तहा फलाइं पक्काइं पायखज्जाइं नो वए वेलोइयाइं टालाइं वेहिमाइं ति नो वए ॥३२॥ असंथडा इमे अंबा बहु
लागा एहना फल नी इम वदइ बोलइ बहु न तरूपस्यू आलोइ तथा वली उषधी शालि प्रनीला वीवाली वाला लाइमा लु भूजि
वसंपिम्या बंधी घरगा तं पाका पहिवी इम वली कामक पनइ पुथु पापा की छइ कादि कमं बंधी गिवा योग्य वासे
छइ योग्य घयो बोलइ
दु निव्वडिमा फला वएज्ज बहुसंभूया भूयरूवत्ति वा पुणो ॥३३॥ तहेवोसहीउ पक्काउ नीलियाउ छवीइय लाइमा भज्जि
कवा पङ्क करी षाइवा योग्य रूढा अंकुरनीकल्यो बहु थिरा ऊपेडी नइ गर्भियामि पसूयामि ससाराउ कण नीपना कारगी
योग्य इम बोलइ नहीं साधु ॥३४॥ संभूया नीपना सरीषा ऊध चोषा ऊसधी वृद्धि रानवीली रानाकल्या ई इम बोलइ ॥३५॥
याउ पामी कल्या
माउ त्ति पिहुखज्जत्ति नो वए ॥३४॥ रूढा बहुसंभूया थिरा ऊसढा वि य गब्भियाउ पसूयाउ ससाराउ त्ति आलवे ॥३५॥
तिम अहो घगा लोक एह नां काय वइ तिलि चोर एवि एगि वा एनवी तरतां सोहिला छइ इम संखडि नइ संखडि किगही न
कछिम इ ते संखडि एक रिवा इम न बोलइ योग्य छइ न बोलइ साधु ॥३६॥ एहवउं बोलइ इ अविदइ
कहियइ तेगी नइ साधु
तहेव संखडिं नच्चा किच्चं कज्जं ति नो वए तेणगं वा वि वज्झित्ति सुतित्थित्ति य आवगा ॥३६॥ संखडिं संखडिं बूया पणि

गिनताथउ अथवइ बहु घगा ऊसमा सरिषा नदीना तथा तलाव ना ईम तथा नदी पागी कायाइं करी तरिवा यो नावाइं करी
वानइ चोरनइ वद ती थे तरिवा नां आगा गरइ बोलइ कारगा ऊपनइ ॥३७॥ ई पूर्ण सरी यवइ इम साधु न कहइ तरिवा यो
इ कइ छइ
थित्ति तित्थाणि बहुसमाणि तित्थाणि आ[illegible]तो वियागरे ॥३७॥ तहा नईउ पुन्नाउ कायतिज्जत्ति नो वए नावाहिं तारि
हा थि इ करी का वइ बड़ा पागी पी हीश कारगी ऊपनइ इम बो बहु घगा उ पागी अ घगा इ विस्तारि उछक्या इम बोलइ प्र
यवइ वइ वइ वइ आगी इ पागी वा याम नदी लइ बहु घगा उ पागी नइ ऊंच उं ऊ छलइ व गी बदइ छइ
वइ इम साधु न कहइ न बोलइ ॥३८॥ नेसर आगम कडी इ गीतं साधु
माउ त्ति पाणिपिज्जत्ति नो वए ॥३८॥ बहुवाहडा अगाहा बहुसलिलुप्पिलोदगा बहुवित्थडोदगा यावि एवं भासि
तिम ई ज साव द्य यो गमन पर अनेरा नइ अर्थि इ अथवा वर्तमान कलिइ सावद्य सपापा नबो रूइ उ घर ए अन्न
॥३९॥ वचन काया नउ व्यापार निठिय नीपनउ कीध उ छइ कराता न जापजत लइ मुनि साधु ॥४०॥ कीधउ रूइ उ प
उ सभा नइ वनाउ
ज्ज पन्नवं ॥३९॥ तहेव सावज्जं जोगं परस्सट्ठाए निट्ठियं कीरमाणं ति वा नच्चा सावज्जं न लवे मुणी ॥४०॥ सुकडि त्ति
एह रूइ उ एहन उ धन एलल एअनिमानी एक न्याकु इम एहवउं सावद्य सदोषव घगा इ प्रयासि इ प्रयत्न पगा इ एपक्वउ
उ अ विद्याउ चोर हु नल उं ते मूउ न इ मल उ धु इ रा सुंदर वनाविकी इ परिहरइ मुनि मा ठा इम पवा नइ प आ इम बोलइ
हिवउ न नी प्रय पवउ मूधा
सुपक्कि त्ति सुछिन्ने सुहडे मडे सुनिट्ठिए सुलट्ठि त्ति सावज्जं वज्जए मुणी ॥४१॥ पयत्तपक्कि त्ति व पक्कमालवे
घगा इ प्रयासि इ प्रयत्न पगा इ पछे छउ घगा इ प्रयासि इ प्रयत्न पगा इ एकन्या गाढ उ प्रहार एहनइ लाग उ इम एकित गाउ अवे मा हि उत
इम छे द्या नइ छेदिउ इम कहइ सुंदर रूपइ री कीधी छइ एक मन न उ ते कहइ साधु कारगा ऊपनइ ॥४२॥ रूपइ उ महा मूल्य छइ
नु कार गी
पयत्तछिन्नत्ति व छिन्नमालवे पयत्तलट्ठि त्ति व कम्महेउयं पहारगाढ त्ति व गाढमालवे ॥४२॥ सव्वुक्कसं परग्घं वा
तथा सुकृ इति एग इ सपरूइ उ काथ उ सुपक्कि त्ति एहनउ अमवर्यस लउ परि पक्व थया सु छिन्न एग इ स्नेह वेध नरुइ उ छे दा सुरूइ एगइ स्
इ उ अ औ र काथ अ मई एन ल उ पंडित मरगि मृउ अ सुनिष्ठि एवारित नइ विघ रूड उ निघ्न उ सुल छे त्ति साधु नी कि मारु डी ॥४॥
स्वरूप पोलिया ॥

२२

पहेवि वा योग्य छइ इम साधु बो ल

दसवै०

अउलं नत्थि एरिसं अविक्किय मवत्तव्वं अचियत्तं चेव नो वए॥४३॥ सव्वमेयं वइस्सामि सव्वमेयंति नो वए। अ

णुवीयं सव्वं सव्वत्थ एवं भासेज्ज पन्नवं॥४४॥ सुक्कीयं वा सुविक्कीयं अकिज्जं किज्जमेव वा। इमं गिण्ह इमं मुंच प

णियं नो वियागरे॥४५॥ अप्पग्घे वा महग्घे वा कए वा विक्कए वि वा। पणियट्ठे समुप्पन्ने अणवज्जं वियागरे॥४६॥

तहेवासंजयं धीरो आस एहि करेहि वा। सय चिट्ठ वयाहि त्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं॥४७॥ बहवे इमे असाहू लो

ए वुच्चंति साहुणो। न लवे असाहुं साहु त्ति साहुं साहु त्ति आलवे॥४८॥ नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं

३२

एवं गुणसमाउत्तं संजयं साहुमालवे॥४९॥ देवाणं मणुयाणं च तिरियाणं च वुग्गहे। अमुयाणं जओ होउ मा वा

होउ त्ति नो वए॥५०॥ वाओ वुट्ठं व सीउण्हं खेमं धायं सिवं ति वा। कया णु होज्ज एयाणि मा वा होउ त्ति नो वए॥५१॥

तहेव मेहं व नहं व माणवं न देव देव त्ति गिरं वएज्जा। समुच्छिए उन्नए वा पओए वएज्ज वा वुट्ठ बलाहए त्ति॥५२॥ अंतलि

क्ख त्ति णं बूया गुज्झाणुचरियं त्ति य। रिद्धिमंतं नरं दिस्स रिद्धिमंतं ति आलवे॥५३॥ तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा

ओहारिणी जा य परोवघायणी। से कोह लोह भय हास माणवो न हासमाणो वि गिरं वएज्जा॥५४॥ सुवक्कसुद्धिं समुपे

दशटबो

हियमुणागिरंवइज्जपरिवज्जएसयामियंअदुट्ठंअणुवीयसएसयाणमज्झेलहईपसंसणं ॥५५॥ [illegible]

यजाणियातीसेयदुट्ठेपरिवज्जएसयाछसुसंजएसामणिएसयाजएवएज्जबुद्धेहियमाणुलोमियं ॥५६॥ परिक्खभासी

सुसमाहिइंदिएचउक्कसायावगएअणिस्सिएसनिद्धुणेधुन्नमलंपुरेकडंआराहएलोगमिणंतहापरंत्तिबेमि ॥५७॥

॥सुवक्कसुद्धीनामअज्झयणंसत्तमंसम्मत्तं ॥७॥ आयारप्पणिहिंलद्धुंजहाकायव्वभिक्खुणातंभेउदाहरिस्सामि

आणुपुव्विंसुणेहमे ॥१॥ पुढविदगअगणिमारुयतणरुक्खसबीयगातसायपाणाजीवत्तिइइवुत्तंमहेसिणा ॥२॥ २४

तेसिंअच्छणजोएणनिच्चंहोयव्वयंसियामणसाकायवक्केणएवंहवइसंजए ॥३॥ पुढविंभित्तिंसिलंलेलुंन

वेभिंदेनसंलिहेतिविहेणकरणजोएणसंजएसुसमाहिए ॥४॥ सुद्धपुढवीएननिसिएससरक्खमियआसणे

पमज्जित्तुनिसीएज्जाजाइत्ताजस्सओग्गहं ॥५॥ सीओदगंनसेवेज्जासिलावुट्ठंहिमाणियउसिणोदगंतत्तफासुयं

पडिगाहिज्जसंजए ॥६॥ उदउल्लंअप्पणोकायंनेवपुंछेनसंलिहेसमुप्पेहतहाभूयंनोणंसंघट्टएमुणी ॥७॥ इंगालं

अगणिंअच्चिंअलायंवासजोइयंनउंजेज्जानघट्टेज्जानोणंनिव्वावएमुणी ॥८॥ तालियंटेणपत्तेणसाहा

दसवैटबो

धतिवइक नवीजइवायुवधातस्या उइन पाणां उइवइधम्र उसां ऋनइरक्षक फलं ऋनइरकइके आम
तनय पाणीकाया जीवप्रतिष्ठ मुखनइ पतिसाधु वा परउद्या नैरमाधु वेदइनही दीनउ ऋोइइनही ाकीवा
वरूयाणं तावाऽनवी एयं अप्पणं कायं वाहिरं वा विपण्णितं नरातस्कंनविदघ्या फलं मुलं वकस्पई आमग
विविधनानाप्र मनिइकरानइघा गहनवननात्तिकुंजन वीजंदागानइविषय नखपालानइवि उत्तिंगमुइफंदानइविष
कारनावजीवा प्राहइ वोलइनही ॥ इविषइ नवइमए हरियवनस्पतीनइविषइ वइसनदामयेदा इपनकं पववनस्पति
निश्रय नइविषइनवइसमा
विविहं बीयं मगा सा विनपढम ॥ पाहणमेसु नविठा घा वीयसुहरीया सुवा उदगंमि तं हाविदं उत्तिगपणगेसुवा
॥ असप्राणि बेइंदियादिक वचनिइकरी अथवा पातलामादिमनिइकरी पामंसंदेवइ विविध आपप्रकारसइ रसना पे
नइकलइनही माधु कर्मे कायाइकरी पृथविवर्तुउठ रूप मवेमनमुख नइ प्रकाश्इ जगत जीव ॥ दापदेषीमइ
॥ तसपाणं निहिंसियघ्या वाया अदुवकम्मुणा उवरउ सव्वसूएसु पासेच्च विविहंजगं ॥१॥ असुहमाइं पेहाए
क्रिमइ आवश्र वनजीवानइविषइ आमवइमइ विनउ केहाते आठप्रकार उज्ञामाइ सुहमइ तिवारइ मुनक
कारजाणीनइ सविध दयानउ अधिकारउ नइरइमा मुखइ मयक्ती यनविचारिनियवापी हइइमाइ लाइ
नमा धु तेउ साधु ॥ पनविश्च तिआठमआमेथ
इन्नाणिजिमइं जाणि दया हि गारी सव्वसु आमयहिं मावहिं वा ॥ कयराइं अट्ठसुहुमाइं जाइं पुच्छिज्ज संजए इमाइं ताइं मेहा
वीए आइक्खेज्ज वक्खणे सिणेहं पुप्फसुहुमं च पाणुत्तिंगं तहेव य पणगं बीय हरियं च अंडसुहुमं च अट्ठमं ॥२५॥
विन विवकणानउ ॥ सनवइादिकना ॥ बरतसिंनी उत्तिंगमइ कीडीनगरादिक ॥ निपजीउम देखवाणानउ नाइंतो ग्रीवमउ
वी आइक्खेज्ज वियक्खणो ॥ सिणेहं पुप्फसुहुमं च पाणुत्तिंगं तहेव य पणगं बीय हरियं च अंडसुहुमं च अट्ठमं ॥२५॥

एमइ परिग्रहइन सर्वनाविइ आत्मनइ अप्रमत्तउनउय सर्वथा वइइडियनीस ध्रुव मनायुधाऽकाल जोगमा काय
आवजाणीनइ अनुमारिइकरी मयतमधु नरजाकरइति माधिइकरी महित नमवी प्रतिलेखइ क्रियाकरीइ व यातिइकरी
एवमेयाणि जाणित्ता सव्वभावेण संजए अप्पमत्तो जए निच्चं सव्विंदियसमाहिए ॥ ध्रुवं च पडिलेहिज्जा जोगसा पायं
पावारि नायानउपाश्रुवउ मधारउडोरप्रमुख अव उच्चारवडीनीति खेलवकं कोमिनउम शाम्रकं अविन्नत्वमि पनि
कंबयं सिज्जमुच्चार भूमिं संथारं अदुवासणं ॥ उच्चारं पासवणं खेलं सिंघाणजल्लियं फासुयं पडिलेहित्ता परि
विमइइमयत पइमीनइ परहइ पाथानइ आर्विइ जे जयणाइरइइ छोडउ स्त्रीयादिक नाहपनइ वइघणाउ
वारिजीयउ ॥ सनाघरनइविषइ जनपानइ आर्विइ नापइ विषइमनकरइ ॥ कानइमान
मावेज्ज संजए ॥ पविसित्तु परागारं पाणट्ठा भोयणस्स वा जयं चिट्ठे मियं भासे न य रूवेसु मणं करे ॥ बहुं सुणेइ
नइ कुंघणतेआ परंदीगानइदीठनु माधु निकुंमाधुकहिवानइ मांनात्यउ वास माधुनकरइ चारित्र किम
नइ फिइदघइ त्यानइ मानत्यतेतमवे यायिनय नही नकरइ ॥ एवादीहउ नइउपघातनउ कर दीउ
कन्नेहिं बहुं अच्छीहिं पिच्छइ नय दिट्ठं सुयं सव्वं भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥ सुयं वा जइ वा दिट्ठं न लवेज्जोवघाइयं नय
प्रनइकर गइक घरनउ उवा नउनवोवा अनेिवा रमरनि एउउ अथवा किमहीकइवउ तकाइ आदी त्यान आहार नी प्राप्तिजा
गनइ अथवा आपण नेकी रारइहमुनउ योग गतउ नविरम रलाअनलाथउइमलव्यउथकउ ॥ अथवा आमप्रव्य उथकउ ॥ आहारना अप्राप्तिकाइ
पइहरण्नइरजिवो व्यापारनकरइ ॥ अथवा आमप्रच्य उथकउ निपवलानइ नकरइ परमदपमइ
केणइ उवाएणं गिहिजोगं समायरे ॥ निट्ठाणं रसनिज्जूढं भद्दगं पावगं ति वा पुट्ठो वावि अपुट्ठो वा लाभालाभं न निद्दिसे ॥२२॥

दशवी॰ टबो

वी ऊन आहार नइ विषइ विचरइ जइ थोडउं थोडउं अ अप्रासुकं असूझतउं वेचातउं लेइ शीकगृहस्थीनइ सांनिधमाय तु नकरइ मा
गृहलोलानकरइ ज्ञातकुलइ आणबोलतउ थकउ तिगनजिमइ कीधउसाधू तउ आणउ तेनिल्यइ ॥२२॥ थुवासीन यथई हती दिवा
स॥२२॥ नयलायणमि गिहिज्जा वएउ अयंपिरा। अफासुयं न भुंजिज्जा कीयमुद्देसियाहडं॥२३॥ सनिहिं च न कुव्विज्जा

अणुमाय थोडउ मुधाजीवी निस्पृही संयम झ्वइ स्वयंमलीपालनी वोली लूषवृत्ति वालाधिम अपिच्छे अल्पइच्छावंत तावंत
पणिमयत साधु जीविनव्यधीरक गृहस्थमा रहितपणइ करी जगलाकथी इकरी उपजीविइ लेल जिहनउं मुषिईसथ थईओ
उआणीसु तें ममतारहित नाकल्यासरी थइ इडइ॥२४ इसलोपसहित प्रवर्तइ थनइ
अणुमायंपिसंजए। मुहाजीवी असंबद्धे हविज्ज जगनिस्सिए॥२४॥ लूहविन्ती सुसंतुट्ठे अप्पिच्छे सुहरे सिया। आसुर

तावित मांनली आथि हांतनावय कानवनइ सुखकारीइ शब्द प्रेमस्नेहा करइ अति अनिष्टकठोर कायाइं करी
क्रुधइ नं क्रोधपरिहरइ॥२५॥ वेणुवीणादि शब्दइ करी। नहीं शगनाणइ ए स्पर्शफरसपरीसह अहियासइ म
त्तंन गच्छिज्जा सोच्चाणं जिणसासणं॥२५॥ कन्नसोक्खेहिं सद्देहिं पेमं नाभिनिवेसए। दारुणं कक्कसं फासं काएणं अहि

हइंसा रूपंतर्षा तृषा तर्षा पाकइं नातितावं अ पतलो अहियासइ वा इलिकारसोइहनइ दुःख आवमइ आदि
सु वसतिउपाश्रय विषम भूमिकरूप रतिसय क्षअगिमत उ थकउ देवउ ते मोक्ष नउ साधक त्यसइयेइ
महाफल
यासए॥२६॥ खुहंपिवासं दुस्सिज्जं सीउण्हं अरइं भयं। अहियासे अव्वहिओ देहदुक्खं महाफलं॥२७॥ अत्थंगयंमि आ

पवइं सूर्यविशिइं वि अशनपान खादिम मनिइं करी नइं प्रार्थइ अशनादिक आगमि अल्पबोल अल्पआशी जुव
ताकृपइ स्वयेइ स्वादिम आदिइं सर्वे आहार वांछइ नहीं॥२८॥ लइ जिमतिम नबोल नं बोलइ नादिमोज कउ
इ अर्धपणार हित नकरइ दर
इच्चे पुरत्थाय अणुग्गए। आहारमइयं सव्वं मणसाविन पत्थए॥२८॥ अतिंतिणे अचवले अप्पभासी मियासणे। हव

×पत्र २

३६

पेटनइ विषइ थोडउं लहीनइ खि आपणा आत्मानइ आपगाथकी अनेरा सूयश्रुतनि मिद्रांतक जातिइं अनइं तपिइं बुद्धि
हीलइ सही नइ सइहीलइ नहीं॥२९॥ उत्कर्ष मान न करइ नइं परगसवनकरइ दीपामीनइं मद नकरइ इकरी मदनकरइ ३०
पूर्व जेइ
ज्जउयरे दंते थोवंलद्धुं न खिंसए॥२९॥ न बाहिरं परिभवे अत्ताणं न समुक्कसे। सुयलाभे न मज्जिज्जा जच्चा तवस्सि बुद्धिए॥३०॥ ७॥

सिनेसाधुजाणत करानइं अधर्म नउ संवरइ शीघ्रं कनाव वली बीजीवार ते अध अनाचार अक गुरु आगलि आ
णअथवा अजाणत दंपापस्थानक लगा आत्मानइं मदोष समाचरइ नहीं॥३१॥ लेथ आवरीनइ लोपतउं कोईक
तइ कोई नकहइ
से जाणमजाणं वा कट्टु आहम्मियं पयं। संवरे खिप्पमप्पाणं बीयं तं न समायरे॥३१॥ अणायारं परक्कम्म नेव गूहे न नि

सर्वथा सचि निर्मल सदासथे गृहस्थमत आस अमोघ सफल वचन करइ आचार्यतेकेहवा नेववनवायाइ करी प
आलोयइ दाविकदावऋग शकनमिलइ जितेंद्रि उमहांत आत्मानउ तिणिमग्रही आदरीनइ
नहीमि त्रि कूव्व इ लाव
ण्हवे॥ सुई सया वियडभावे असंसत्ते जिइंदिए॥३२॥ अमोहं वयणं कुज्जा आयरियस्स महप्पणो। तं परिगिज्झ वायाए

कम्मुणा कायाइं करी अशाश्रुतउ आऊष सिद्धि मोक्षमार्ग विशेष निवर्तइं पांचइंद्रि आउ थउ प्रमाण सहित आत्मानउ आ
नइं संपजावइ ३३ तेनइ जाणीनइ थकी भय यमाचउ जाणीनइ ईहीकलोगथकी तानइ थउ तउ एक सउ वरस मा तेरस
कम्मुणा उववायए॥३३॥ अधुवं जीवियं नच्चा सिद्धिमग्गं वियाणिया। विणियट्टिज्ज भोगेसु आउं परमियमप्पणो॥३४॥

बलं पराक्रम थाम उत्साह श्रद्धा तेह रचिआरो क्षेत्र धर्म करवा योग्य काल तिम आपणा आ जरा वृद्धपणउं जालगी व्याधि रोग
सापेहा विचारीनइं पनाणुगतो पणउआ ले अवसर विजाय जाणी तानइं प्रवर्तावइ ॥३५॥ पीडा न करइ कायेममथा इंदु
बलं थामं च पेहाए सद्धामारोग्गमप्पणो। खित्तं कालं च विन्नाय तहप्पाणं निजुंजए॥३५॥ जराजाव न पीलेइ वाहीजाव

वइ जोलग्गी जोलग्गी इंद्रियपांचइ तोलग्गी आज्ञा जिनध क्रोध तथा मान तथा तथा लोभ सा पापना वमइ छांडइ प्रत्यारि दो इ
इंद्रिनपाप्रमइ हाणि न पामइ। संसमाचरे करे ॥३६॥ माया वधीरगाहार। पइ: सर्वनाहि गाहार। छो

दशवैको नवटंडीआविंदिया न हायंति तावधम्मं समायरे ॥३६॥ कोहं माणं च मायं च लोभं च पाववड्ढणं वमे चत्तारि दोसे उ इच्छं

तवांछतताहित उप क्रोध कोधउद्वेगी मानंगर्व विनयनंत मायाकपट कौमित्रा लोभ कसयउथकउडमवि उपजे
गारआपणाआत्मानइ तिम्रमनशेनसाडइ नसाबुगाहार ईनइनसाडइ नयमित्राई सर्वनगविणास मने
गाहारजाणिवु ॥३८॥ मान

तो हियमप्पणो ॥३७॥ कोहो पीइं पणासेइ माणो विणयनासणो माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्वविणासणो ॥३८॥ उव

गाइ हणइ क्रोध री मानं गर्वमार्द्दव सुकु मायापरवंचना ते लोभ वांछारूपते संतोषव क्रोधा तथा मानगर्व निग्रहीन स
संहारइ मालपणाइ जीपइ। आर्जव सरलपणा विइ कौजिणा जीपइ ॥३९॥ क्षायका।
करी नइ टालइ।

समेण हणे कोहं माणं मद्दवया जिणे मायं चज्जवभावेण लोभं संतोसओ जिणे ॥३९॥ कोहो य माणो य अणिग्गहीया

मायानथी लोभाप्रवर्द्धमान च्यारि एकतन्ने संपूर्णीक सींचइ वधारइ मूलबुड पुनर्भ र ज्ञानाधिक स्थिर दीक्षित गुरु साधु
वधतो धरया कृता पाय क्रोधादिक वली वली संसाररूप वृक्षना ॥४० नइ विषइ साधु विनय प्रयुंजइ

माया य लोभो य पवड्ढमाणा चत्तारि एए कसिणा कसाया सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥४०॥ राइणिएसु विणयं पउंजे धुव

ध्रुवसदा अठारसहस्रशीलांग कूर्म काछबानी परिइं गोप पराक्रम करइ तप प्रवीना निद्रा बहु ध्यान अत्यंत हास्य परिह
रूपनिरंतर नमूंकइ हापनाव वा अंगोपांग नेलइ गुप्तापइ संयम नइ विषइ ॥४१ मानइ निः ज्ञान करइ रइ हासइ नहीं
तापाल। वउवतउ।

१ सीलयं ॥ सययं न हावएज्जा कुम्मुव्व अल्लीणपलीणगुत्तो परक्कमेज्जा तवसंजमम्मि ॥४१॥ निद्दं च न बहुमन्नेज्जा सप्पहासं विवज्ज ३१

मनवचन काया ना योग जुंजं प्रयुंजइ उद्यम युक्त सहित श्रमण धर्म अर्थ
मिथपरस्परइं एकांत सज्झायपंच प्रकारनइ वि वायारा श्रमणा साधु सहित निश्चइ करी इसी विधयतनां धर्मनइ विषइ हइपा
कथावर्तो इं नर मइ मइ रातउ रागी सदाइ सरिस नाध मनइ विषइ।

मिहो कहाहिं न रमे सज्झायम्मि रओ सया ॥४२॥ जोगं च समणधम्मम्मि जुंजे अनलसो धुवं जुत्तो य समणधम्मम्मि अट्ठं लहइ

मइ केवलज्ञा इहलोक परलोकन जिणा निइ करी सु एहवउ बहुश्रुत ते नइ समीपि अर्थ नउ हाथ तथा पग तथा
नरूपसोभ ॥४२ इ विषइ हितकारी श्री गति मुक्ति इं गछइ साधु सर साधुनइ सेवइ निश्चयार्थ ॥४४ काया शरीर
वैनिश्चय करइ। जाइ।

अणुत्तरं ॥४३॥ इहलोगपारत्तहियं जेणं गच्छइ सुग्गइं बहुस्सुयं पज्जुवासेज्जा पुच्छेज्जत्थविणिच्छयं ॥४४॥ हत्थं पायं च का

पणिहाय संकोचीनइ अलीन लयवंत सावध समीपि आगुरु नइ बिइ पासे अ आगलि पा आचार्यनइ पु पग
जितेंद्रिय वकरउ नापुतउ भिक्षु गुप्ति इं करीनइ मुनि साधु ॥४५ मवडि नबइसइ लोनबइ छिपाउलि पनिं परि
बइसइ मइ बइसइ।

यं च पणिहाय जिइंदिए अल्लीणगुत्तो निसिए सगासे गुरुणो मुणी ॥४५॥ न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ न य ऊरुं

गथडाथी रहइ बइसइनहीं गुरुनइ गुरु प्रमुष नइ विणा पूछ्यउ गुरु बोलतां थकां वि इ गि नउ मांस इ णिपा मायासहित
नबइसइ समीपि इम अविनयकृ ॥४६ ठा साधइ बोलइ नहीं। वीलइ बोलइ नहीं। केलि किणा हीनां अप मृषा तव ऊइ
वादि नबोलइ।

समासेज्जा चिट्ठेज्जा गुरुणंतिए ॥४६॥ अपुच्छिओ न भासेज्जा भासमाणस्स अंतरा पिट्ठिमंसं न खाएज्जा मायामोसं विव

परिह अप्रीति अविश्वास जिणि अथवा जिणि बोलि आ सर्वथा प्रकारि इं ते भाषा अहित नरकादि दीठा मितनि
रइ ॥४७ वचनि बोलतां कुपउं गिया नइ ततकाल कोप करइ वचन नं न भाषइ इं यं तिलइ आइ दइवी न बि लेइ ॥४८ र तीमा नोपे ता

ज्जए ॥४७॥ अप्पत्तियं जेण सिया आसु कुप्पेज्ज वा परो सव्वसो तं न भासेज्जा भासं अहियगामिणिं ॥४८॥ दिट्ठं मियं अ

दशवैको

संवेद प्रतिपूर्ण सुरी स्वर ज भाषा बोलिवी श्री पतवी भाषा बोलइ सवे आचारांगतणा नव तथा दृष्टिवादनउ वचनि
रहित विकड ग्रहणइ मइमसफड गिलानइ गड्ड गिनकरइ गेनमाधु तीनां सगामार दृष्ट वेनउ समाणदारु करा

संदिद्धं पडिपुन्नं वियं जियं अयंपिरमणुव्विग्गं भासं निसिर अत्तवं ॥४९॥ आयारपन्नत्तिधरं दिट्ठिवायमहिज्जगं वइविक्ख-

खलयउ तिहनइ उपहासन नक्षत्र तथा स्वप्न तथा निमित्त अतीतादि पतनीय स्त्रीनइ भूतप्राणीनइ अधि
कउणों करइ मुनिवारि औषध योगवशीकरणादि तथा मंत्र उषधी कहइ करणीवि नाणीनाथीनक

लियं नच्चा न तं उवहसे मुणी ॥५०॥ नक्खत्तं सुमिणं जोगं निमित्तं मंतभेसजं गिहिणो तं न आइक्खे भूयाहिगरणं पयं

अनेरानइ अर्थिइ साधुनइ अइ सेवइ गाय स्थंडिलनी भूमिका स्त्री पशु पंडक ने पुरुष नपुसक विविक्त अनेरइ साधुइ तिकारइ
कीधउ तेणा घर वसति नश्रमनपाटिपीठ तेणाइ सयणासनेन सविनइं रहित तानिका वसति सवि ऊइ गानकोरइ

॥५१॥ अन्नट्ठं पगडं लयणं भइज्ज सयणासणं उच्चारभूमिसंपन्नं इत्थीपसुविवज्जियं ॥५२॥ विवित्ता य भवे सिज्जा नारीणं न लवे

धर्मीतपदे स्त्रीनइ धर्मकहि स्नेह ममत्व करइ साधु म्पत्राप जिम कुकडानउ पोत नित्य मंदा कुललनि इम स्त्रीशरीर
तोलोकनइ शंका कु संथवपरिचय रिवयं गोहि ॥५३॥ बालकतेहनइ लाडावकीभय कहइ ब्रह्मचारीनइ
पकइ नकुइ

विकहं गिहिसंथवं न कुज्जा कुज्जा साहूहिं संथवं ॥५३॥ जहा कुक्कुडपोयस्स निच्चं कुललओ भयं एवं खु बंभयारिस्स इत्थी-

स्त्रीना विग्रह शरीर चित्राम लिखी भींत नारी स्वालंकृता सूर्यनी परि तिहां दृष्टि पाछी करइ हाथ अनइ पाउ
वकीनय कुश ॥५४॥ न त्रीमाधु निरषइ नही लेकार सहित तकुड मन येत्र सूर्य तिमकरिवी ॥५५॥ जेहना छेद्या
कइ

विग्गहओ भयं ॥५४॥ चित्तभित्तिं न निज्झाए नारिं वा सुअलंकियं भक्खरं पिव दट्ठूणं दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥५५॥ हत्थपायप-

२८

कान अनइ नासिका निष्ठुई सहित सउवर ब्रह्मचारी तेहवी नप्रतिहरइ विभूषा नरवके आदिक प्रणीत अतिसुंदर नरसमत जे आत्म
कुहना कापा कुइ समानी रही पनवीस्त्री संगतिनकरइ दृष्टिइं लिखितइ नहीं संयोगिवा स्त्रीजाति आत्मनी तनउ गवेषा धर्मीहित
हनइ

छिन्नं कन्ननासविगप्पियं अविवाससयं नारिं बंभयारी विवज्जए ॥५६॥ विभूसा इत्थिसंसग्गी पणीयं रसभोयणं नरस्सत्तगवे-

जिहवड तालपुट विष तेहवउं जाणिवउ तेन अंग नाक प्रमुख वाक मनोहर बोलि स्त्री जाणिन उनेहिन जेहना तेकामराग विषय
पुटविषमा धइ जिमसुरहु निमविन पादिकथ तिग निआदिक तिहं वनु वहिय निरषि माहीनइ निरषइ नही नउविधीरणहार ॥५८॥ शब्दादिक
मेशरीर श्री विनामी इइ नास नाक न आकार वउ

सिस्स विसं तालउडं जहा ॥५७॥ अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं इत्थीणं तं न निज्झाए कामरागविवड्ढणं ॥५८॥ विसए-

मनोहर तेह प्रेमस्नेह नधापइ जेहना तेहनउ अनित्य एहवउ परिणाम स्वभाव रूडा ते पाडूआ पुद्गलनेह तेहनउ नइ आज
नइ विषय नधरइ पणउं जाणीनइ वापुद्गलनउ ॥५९॥ नइ विषय पुद्गल परिणाम गानइ जेहवउ

सु मणुन्नेसु पेमं नाभिनिवेसए अणिच्चं तेसिं विन्नाय परिणामं पुग्गलाण उ ॥५९॥ पुग्गलाणं परिणामं तेसिं नच्चा जहा

वरते तेहनी तृष्णा वीणा शीतलीभूतप्रशांत जिणइ श्रद्धाइं भावनाइंनि पर्याय दीक्षानउ स्थान तिहउं श्रद्धा भावना
दववउ टालीनइ विचरइ आत्माइंकरीनइ ॥६०॥ कांत घरथी नीकल्यउ चारित्र नीधउ का उत्तम प्रधानउदह जावजीव लगी पाल
प

तहा विणीयतण्हो विहरे सीईभूएण अप्पणा ॥६०॥ जाए सद्धाए निक्खंतो परियायट्ठाणमुत्तमं तमेव अणुपालि-

किहां गुणनइ विषइ आचार्यनइ संमत तप बारनेर करइ संयमयोग पांच नइ सझायनउ योग शूरसुभट सेनाइ रूधरविकउ
तसामन तपसंयम रूपद वागुणनइ वि मतरमेहे प्रतिपालइ सदा अधिष्ठइ करइ एहवउ साधु आयुध सहित वइरीबकी आपणा
आत्मा नइ परनइ कु मारइ तिम

ज्जा गुणे आयरियसम्मए ॥६१॥ तवं चिमं संजमजोगयं च सज्झायजोगं च सया अहिट्ठिए सूरे व सेणाए समत्तमाउहे

कषायरूपिणी सेनाइं ... तपक बकरापणि। सज्झाय करीनइं ध्यान पाप अधर्म न तपचार सेवनइ एहवा साधुनइ विशुद्ध ...
तप कर्मादिक ... सहित ... नइ विषइ रत शमी ... काय उत्साव ... विषइ रत तत्पर कर्ममल कर्मरूप पापइ विध्वंस
सुख की आपणनइ परइ राखि वाम ... न राखणहार। नथी उ ही मी उ तेहनउ
दशा०टबो अलं मप्पणो होइ अलं परस्सि ॥६२॥ सज्झाय सुज्झाणरयस्स ताइणो अपावभावस्स तवे रयस्स। विसुज्झई जंसि मलं पुरेकडं
जिम ... परङ् कोध ... तेह ... साधु सहणहार दुःख कतसि ... ममता ... एहवउ कर्मरूपियइ मे
मल अग्निइं करीनइ ... ॥६३॥ ... इंद्रिय जेणइ। ... युक्त सहित। रहित। किंचित नथी ... घि वगलइ
इति म।
समीरियं रूप्पमलं व जोइणा ॥६३॥ से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे विरायई कम्मघणंमि
काला वादल ... एहवउ ... आयारपणिही नाम अध्ययन ... ॥मा अध्ययन
जिम चंद्रमा ... श्री गुरु कहइ ... आ मा अध्ययननइ विषइ ... आचाररूप ... विधानक ... तेह ... विषइ विन
साधु निर्मल ... ॥ रूपियइ निधान ... सहित ... साधु ... ॥
अवगए कसिणब्भपुडावगमे व चंदिमि त्ति बेमि ॥६४॥ आयारपणिही नाम अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥८॥ थंभा व कोहा ॥२१
स्तब्धश्चे क्रोध मद प्रमादइ गुरुनइ समीपि विनय तेहि जं सादि कचा ... जिम वंसनउ फल तेहनउ ... शिष्य ए
कारपत्रा वकी ... मागो सीषइ नहीं ... शान ... विना ... मंद मूर्ख म
को वमयप्पमाया गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे। सो चेव उ तस्स अभूइभावो फलं व कीयस्स वहाय होइ ॥१॥ जे यावि मंद
गुरुनइ जा अथवा बालक अल्प ... गुरुनइ हीलइ हीला करइ मिथ्या ... आशातना करइ ... प्रकृतिइं स्व ...
जाणीनइ। तनउ ... मिथ्या ... गुरुनी ... शिष्य ॥२ एक गुरु ...
त्ति गुरुं विइत्ता डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा। हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा करेंति आसायण ते गुरूणं ॥२॥ पगईए मंदा वि २५

बुद्धि ... एक डहरा बालक ... परे जे आचारवंत अनइ गुणनइ जे गुरु हीलया ... सिखरि
... तेबुद्धि करीनइं सहित ... विषइ ... वे अग्निना ... करइ बालइ। ३
भवंति एगे डहरा वि य जे सुयबुद्धोववेया। आयारमंता गुणसुट्ठियप्पा जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ॥३॥
जे केई अजाणता नाग सर्पनइ। आशातना करइ ... इम आचार्य गुरुनइ ... एकेंद्रियादिक जाति ...
बालक ... नइ ... करीनइ ... हीप ... खु निश्चइ
जे यावि नागं डहरं ति नच्चा आसायए से अहियाय होइ। एवायरियं पि हु हीलयंतो नियच्छई जाइपहं खु मं
करीम आसीविष सर्प परम ... जीवितनाश विना ... पर आचार्य पूज्य ... अबोधि जिन
देवनुं ... कांई करइ ... सम्यक् असंतोषवंत ... धर्मनी अप्राप्ति
दे ॥४॥ आसीविसो वावि परं सुरुट्ठो किं जीवनासाउ परं नु कुज्जा। आयरियपाया पुण अप्पसन्ना अबोहि आस
अनइ आशातनाथकी जे केई पावक अग्नि ... दीप अथवा आसीविष सर्पनइ ... जो कोई विषनइ ...
तेहनइ मोक्ष नथी जाय। तउ ... करी ... पइ। वली कोपवइ कोपवइ ... कखायइ जीवितनइ
यणा नत्थि मोक्खो ॥५॥ जो पावगं जलियमवक्कमेज्जा आसीविसं वावि हु कोवएज्जा। जो वा विसं खायइ
जीवितव्य ... श्री गुरुना आशातनानी ... जिम ... कदाचित मंत्रादिक ... कदाचित आसीविष सर्प ... कुपउ कर
नइ ... सर्प विषमरण ... नरकादिक कष्ट ... ते अग्नि ... नद हइ नवा ... खायइ ... मंत्र ... चित् ... हाला
मंत्रादिक
जीवियट्ठी एसोवमासायणया गुरूणं ॥६॥ सिया हु से पावय नो डहेज्जा आसीविसो वा कुविओ न भक्खे। सि य

रत्नविषंपावकवत् मारइ परं गुरुनी हीलनाकीधी छती। जेकोई पर्वतं मस्तकइं करी
नइ फोडिवा इच्छइ वा वलइ। सूता सीहनइं कोई जगाडइ।
विसंहालहलं न मारे नयावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥७॥ जो पव्वयं सिरसा भित्तुमिच्छे सुत्तं व सीहं पडिबोहएज्जा
अथवा जे कोइ खड्गनी धारा उपमा श्री गुरुनी आशातना सियां कदाचित् कोई सियां कदाचित्
प्रहार। तिम श्री आशातना मस्तकइं करीनइ पर्वतनइ भेदइ। सीह कुप्प
जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं एसोवमासायणया गुरूणं ॥८॥ सिया हु सीसेण गिरिंपि भिंदे सिया हु सीहो कु
सियां कदाचित् शक्ति नाभि तेह परं श्री गुरुनी हीलनाइं मोक्ष आचार्य प्रसन्न हुइ तो
खायइं नही। न वग्र मुखे अणीनउ प्रहार न भेदइ नहुइ। मुख प्रसन्न करइ
विओ न भक्खे सिया न भिंदिज्ज व सत्तिअग्गं नयावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥९॥ आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
परं आचार्य नइ अबोधि मिथ्या तिणि कारणि निराबाध मोक्षना गुरुनो प्रसाद प्रसन्नता साम्हउं थइ जिम अग्नि
नहुइ। अनइ मोक्ष नही मुख नउ अभिलाषी वांछनार रमइ प्रवर्त्तइ गुरुनी आशातना टालइ। यति
अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो तम्हा अणाबाहसुहाभिकंखी गुरुप्पसायाभिमुहो रमेज्जा ॥१०॥ जहाहिय
अग्निनइ नमइ नाना प्रकारइ आहुति होम इत्यादिकइं आचार्यनइ कदाचित् केवलज्ञान उपनउ पुणि
नमस्कार करइ तथा मंत्र पदइं करी सीचइ मुज्ञानादिकइं करीनइ सेवइ। नय करइ गुरुनउ भक्ति भाव साचवइ
ग्गी जलणं नमंसे नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं एवायरियं उवचिट्ठएज्जा अणंतनाणोवगओवि संतो ॥११॥ ४०

जिहू श्री गुरुनइ अतिसमीपि तिह श्री गुरुनइं अतिसमीपि वस्त्रादिकइं सत्कार करइ मस्तक कायाइं करी वचनइं करी मनइं करी
धर्म मर्म सिद्धांत पद सीखइ विनय प्रयुंजइ करइ मस्तकइं अंजलि करइ हाथ जोडीनइ नइ सदा सर्वदा
जस्संतिए धम्मपयाइं सिक्खे तस्संतिए वेणइयं पउंजे सक्कारए सिरसा पंजलीओ कायग्गिरा भो मणसा य निच्चं ॥१२॥
लाज संयम नी दया कृपा संयम एतला वाना कल्याणभागी मोक्षार्थी जे गुरु सदा निरंतर सदा शिखामण द्यइ तिह श्री गुरुनइं हुं सदा
इंद्रियनउ दमन अनइं ब्रह्मचर्य नइ विशुद्धिकनउ स्थानक शुद्धिनउ ठाम कहइ यायमुखा अनुशासइ सीखवइ छइ वंदा पूजा भक्ति करउं
लज्जा दया संजम बंभचेरं कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं जे मे गुरू सययमणुसासयंति तेहं गुरू सययं पूययामि
जिम निश्चांत प्रभातनइ विषइ सूर्य प्रकाशइ अजुआलइ भरत इम श्री आचार्य श्रुत शील विराजइ शोभइ सुरदेव माहि
पनउ ताप सहित अर्चिमाली सूर्य क्षेत्र केवल परिपूर्ण बुद्धिइं करीनइ हिजिम इंद्र शोभइ तिम
मि ॥१३॥ जहा निसंते तवणच्चिमाली पभासई केवलभारहं तु एवायरिओ सुयसीलबुद्धिए विरायई सुरमज्झेव इंदो
नक्षत्र अनइ तारानइं गणइ खे आकाशनइ विषइ शोभइ तेकेहवउ इम गणी मुनि
जिम शशी चंद्रमा कार्तिकी मास योग सहित समवइ परिवर्यउ छतउ अथवा विमल निर्मल वादलइ करी रहितइ सूंशोभइ
दो ॥१४॥ जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा खे सोहई विमले अब्भमुक्के एवं गणी सोहइ
मुनीश्वरमा ज्ञानादिक महा मोटा वयरहीरा समाधि ध्यानादिकइं सिद्धांत सिद्धांतइ पामिवा वांछतउ अनुत्तर प्रधान एहवउ सा
रत्नना आगर सरीषा श्री आचार्य शील आचार उत्पातकाइ करी ध्यान ज्ञान दर्शन चारित्र श्री आचार्य
महाकृपी सूर
भिक्खुमज्झे ॥१५॥ महागरा आयरिया महेसी समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए संपाविउकामे अणुत्तराइं आराह

दशवै० नइं आराधइ विनयकरवइ क सो चाण सांभली नइं मेधावी पंडित सुश्रूषइ सेवा करइ आचार्य आराधीनइं सेवीनइं अनेक ज्ञा
रीसंतोषइं धर्म नउ अभिलाषी सुभाषित गुरु नइं मेध्यानां फल चार्यनइं अप्रमत्त थकउ नादि गुणा नइं मूल गुण उत्तर गुण
वतउ
इत्ता से धम्मकामी॥१६॥ सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं सुस्सूसए आयरियमप्पमत्तो आराहइत्ताण गुणा
ते पामइ सिद्धि मोक्ष इम हउं कहउं विनयसमाधि अध्ययननउ पहिलउ उद्देसउ संपूर्ण थयउ मूल थकी थुड नउ प्र
अनुत्तर सर्वोत्तम सुधर्मस्वा विनयाध्ययननइं पहिलइ उद्देसइं विनय करिवउ कह्यउ बीजइ उ भव उत्पत्ति ऊगि वउ
मि कहइ हइसइ वली विनयउ कहियइ छइ ॥४॥
अणेगे से पावई सिद्धिमणुत्तरं त्ति बेमि॥१७॥ विणयसमाहीए पढमो उद्देसो सम्मत्तो॥ मूलाउ खंधप्पभवो
खंध थुड थकी पछइ शाखा शाखा थकी प्रशाखा विरुहइ तिनी कलइ तिवार पछइ फूल पछइ फल ॥ ति एवं धर्मना
कूनउ डालउ पजइ प्रशाखा थकी पत्र पान डोनी कलइ वार पछइ रस आदि हइ तिनी कलइ इम ति धर्म
दुमस्स खंधाउ पच्छा समुविंति साहा साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता तओ से पुप्फं च फलं रसो य॥१॥ एवं धम्मस्स
कल्पवृक्ष नउ तेहना फल रस सरीष जे विनय थकी कीर्ति यश निःशेष संपूर्ण श्रुत स्व जिको इं क्रोधी मनइं दुःशील
मूल विनय उत्तम मोक्ष श्रुतशास्त्र अनइं त्रणाथाइं सूत्र सरीषउ मइं अष्टवा नि स्य मोक्ष मिथ्या मूर्ख अनइं स्तब्ध नइं मायी
पामइ धर्मी इं कारी
विणओ मूलं परमो से मोक्खो जेण कित्तिं सुयं सिग्घं निस्सेसं चाभिगच्छई॥२॥ जे य चंडे मिए थद्धे दुव्वाई नि-
वादी अनइं संसार नइं प्रवाहइं तणाइं ति काष्ठ नदी आदिकनइं प्रवाहइं विनय नइं विषइं जेउ कोई उपायइं करी तंत कु तेह ते
धूर्त एहवउ अविनीत जे हनउ आत्मा पडइ जिम वहइ तिम ते संसार समुद्र माहि वहितउ पडइ पायइ उपक्रम करी धर्म कोपकरइ मनुष्य स
यडी सढे वुज्झई से अविणीयप्पा कट्ठं सोयगयं जहा॥३॥ विणयं पि जो उवाएणं चोइओ कुप्पई नरो दिव्वं सो ४१

बंधिनी श्री लक्ष्मी देंड करी प्रतिषेधइ तिमइं जे अविनीत जे राजाना वाहन योग्य घोडा दीसइं दुःखनइं पर वशि इंद्रियां
आवती निषेधइ॥४॥ हनउ आत्मा वाहय घोडा गय हस्ती साता पामता द्वारसइ॥५॥
सिरिमिज्जंतिं दंडेण पडिसेहए॥४॥ तहेव अविणीयप्पा उववज्झा हया गया दीसंति दुहमेहंता आभिओगमु-
तिमइं जे सुविनीत जे राजाना वाहन नइं योग्य दीसइं सुखसा रिद्धि प्रकृती आभरण तिमइं जे अ
हनउ आत्मा हय घोडा अनइं गज हस्ती ता पामता लंकार करी विख्यात॥६॥ विनीत आत्मा
वट्ठिया॥५॥ तहेव सुविणीयप्पा उववज्झा हया गया दीसंति सुहमेहंता इड्ढिं पत्ता महायसा॥६॥ तहेव अवि-
लोक नइं विषइं नर दीसइं दुःख नइं ब्राण बीक दीसरीषा ते अज्ञान दंड शस्त्र नइं घातइं असत्य पारुष्य आक
एहवा पुरुष अनइं नारी स्त्री साता पामता कान नाशिका रहित पणइ विक करी नइं दुःख लकी रवचन नइं करीन
लेंडिय कहउ ना॥७॥ डापरि जीर्ण थया
णीयप्पा लोगंसि नरनारिओ दीसंति दुहमेहंता छाया ते विगलिंदिया॥७॥ दंडसत्थपरिज्जुन्ना असब्भवयणेहि
करुणा दीनइ यामणा पर क्षुधा तृषा अनइं त्रिषा तिमइं जे सुविनीत जे लोक माहि नर पुरुष दीसइं सुख साता पामता
वश कोतानु वशिइं प्रवर्त्तइ तेणइं करी सहित छतां हनउ आत्मा एहवा नइं अनइं नारी स्त्री
सकइ नहीं व्याप्या छता॥८॥
य कलुणा विवन्नछंदा खुप्पिवासपरिगया॥८॥ तहेव सुविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ दीसंति सुहमेहंता इ-
महा कीर्तिमा महा तिमइं जे अविनीत आ विमानिक देवता अथवा सिद्धांत हइ छइं दीस आभियोगिक पणइं प्रकृता
मो भागीया॥९॥ त्मा ड विनीत एहवा ज्योतिषी यक्ष व्यंतर गुह्यक इंदइं दुःख पामता पाम्या॥१०॥
कं भवन पति
ड्ढिं पत्ता महायसा॥९॥ तहेव अविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया॥१०॥

तिमइं जा सुविनीत आत्मा विनयवंत | देवा वैमानिकादि व्यंतर भवनपति ज्योतिषी यक्ष व्यंतर गुह्यक भवनपति | दीसंति दीसइ छइ सुख भोगवता | महारिद्धि पाम्या महायश पाम्या ॥११॥ | जे कोई आचार्य उपाध्याय तेहनइ

तहेव सुविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा दीसंति सुहमेहंता इड्ढिं पत्ता महायसा ॥११॥ जे आयरिय उवज्झायाणं

शुश्रूषा वेयावच्च तेहनउ तेहनइ वचन आदेशनउ करणहार | आसेवन शिक्षा वधइ वृद्धि पामइ | जिम जल सींच्या पादप वृक्ष वधइ तिम ॥१२॥ | आपणा आजीविका निमित्त परनइ अर्थइ | शिल्प विज्ञान चित्रामादि निपुणपणउं बहु कला

सुस्सूसा वयणंकरा तेसिं सिक्खा पवड्ढंति जलसित्ता इव पायवा ॥१२॥ अप्पणट्ठा परट्ठा वा सिप्पा णेउणियाणि य

गृहस्थ उपभोग अर्थइ | इहलोकि संसार सुख नइ अर्थि प्रयोजन निमित्तइ सीखइ ॥१३॥ | जिणि विज्ञान सीखतां बंधन सहइ वधताडन ताडना प्रहार सहइ घोर रौद्र | परिताप निर्भर्त्सना पामइ दारुण कठिन वचनादिका | सीखतां थकां गुरु नइ समीपि पामइ तं कउण

णियाणि य गिहिणो उवभोगट्ठा इहलोगस्स कारणा ॥१३॥ जेण बंधं वहं घोरं परियावं च दारुणं सिक्खमाणा नियच्छं

ति जुत्ता ललिइंदिया ॥१४॥ ते वि तं गुरुं पूयंति तस्स सिप्पस्स कारणा सक्कारेंति नमंसंति तुट्ठा निद्देसव

जुत्ता सहित वामांगा राजकुमार ते | ते पुण राजकुमर ते | शिल्प विज्ञान कला | सत्कार करइ वस्त्रादि | बुद्धि वधारणहार कारणइ

मरसुकुमाल ललित गर्भ सुखी ॥१४॥ प्रति पूजइ आदी | शिल्प विज्ञान कारणइ | कइ नमइ पगि लागइ | तेहनी आज्ञाइ वर्त्तइ

शक्ति मकरइ तेहनउ वली सीखतां कदि तिणि | आ तहित मोक्ष ते | तिणि आगुरु जे कोई वचन | तिणि कारणि तेवचनादिक

तिम करइ ॥१५॥ जे सिद्धांतनां ग्रहणहार | हनां अभिलाषी | कहइ ते सिद्धु वादि त्रियत | उल्लंघइ नहीं ॥१६॥

त्तिणो ॥१५॥ किं पुण जो सुयग्गाही अणंतहियकामए आयरिया जं वए भिक्खू तम्हा तं नाइवत्तए ॥१६॥ नी

गुरु थकी नीचउ सयत | गइ नीचउ चालइ ठाणि नीचउ रहइ उभउ | गुरु थकी नीचउ आसनि बइसइ | नीचउ थई आगुरु ना पग वांदइ | नीचउ थई करइ अंजलि हाथ नउ जोडिवउ | संघट्ट फरसीनइ तथा व कायाइ करीनइ लीउपा

यं सेज्जं गइं ठाणं नीयं च आसणाणि य नीयं च पाए वंदेज्जा नीयं कुज्जा य अंजलिं ॥१७॥ संघट्टइत्ता काएण तहा उ

धि वस्त्रादिक इम खमावइ खमउ | पछइ इम वदइ वली अपराधं मा न करउ | रखइ फरी नहीं करउ ॥१८॥ | दुष्ट बलद वा अश्व | चाबुकि ताडित थकउ | रथ परिइं करीनइ | रथ वहइ चलावइ | एतलइ दुष्ट बुद्धि अविनीत | धर्म कृत्य आचार्य ना

वहिणामवि खमेह अवराहं मे वएज्ज न पुणो त्ति य ॥१८॥ दुग्गउ वा पओएणं चोइउ वहई रहं एवं दुबुद्धि किच्चाणं

कहतउ कहतउ प्रेरतउ का | योडरबो घणउं बोलावइ | वइ गुरु | तउ आसनि बइठउ ते गुरुनइ उवचन न सांभलइ तेहमाउं करइ | आसन पछइ छांडीनइ धीर सुशिष्य | श्री गुरुनो वचन सांभलइ | र्य करइ ॥१९॥

वुत्तो वुत्तो पकुव्वई ॥१९॥ आलवंते लवंते वा न निसेज्जाए पडिस्सुणे मुत्तूण आसणं धीरो सुस्सूसाए पडिस्सु

कालउ रतु कालादिक देश | विशेष थकी आगुरु नउ ज | तिणि तिणि उपाइ उपा | ते ते आगुरु नउ कार्य | ज्ञानादिक गुणनउ

वार मन नउ अभिप्राय | णा नइ हेतु उपाइ करी नइ | अमइ करी नइ | संपजावइ आणी आपइ ॥२१॥ | विनाश

णे ॥२०॥ कालं छंदोवयारं च पडिलेहित्ताण हेउहिं तेण तेण उवाएणं तं तं संपडिवायए ॥२१॥ विवत्ती अवि

विना | तथा संपत्ति प्राप्ति ज्ञाना | दिक गुणनी सुविनीत नइ | जेहनइ ए बिहुं प | रिइं जाणी नइ | ते शिक्षा सीख अभिगच्छइ पामइ ॥२२॥ | जे कोई साधु चंड कोप वंत रुद्धि | रस विषय मति जे हनी

णीयस्स संपत्ती विणियस्स य जस्सेयं दुहउ नायं सिक्खं से अभिगच्छइ ॥२२॥ जे यावि चंडे मइइड्ढिगारवे पि

दशवै०टबो

पु विमांसमाइंवाडीकरइंनरमनु नथीदीठउ जे ते तइ धर्म सिद्धांतनउ मार्ग अमिकमाधन तिसाधुनइं गुनिश्चइ आदेशनउंमा
ओ मारमाकअकार्यकारी गुरु आचार विनयमार्गनइ विषइ अके इंसविनागनिके मोक्षनइ कूऽ ११ नराहारवलाउं
नो आतान उला बुझहार विद दब २६
सुणानरसादेसे होगपसत्ता ॥ अदिक्ष धम्म विणए अकोविए असेविणीमानं उत्तमगोरवो ॥ १२ ॥ निद्दसवत्तीपु
शिष्य श्री कृत सिद्धांत अर्थ धर्मनउ जाणी तिसंसारनउ प्रवाहं तरोनइ नेथा बघावीकर्मश्रीउ सुधर्मस्वामी विनउ
गुरुनउ मार्ग विनयनामा अनइ विषइ पंडित पंतरतां जे तेहिलउ नइ ममस्त्रिगिमाहिं तेश्रम गतिमोक्षनी निलाभयी कहइ इमते सम्बाध
लानि गुरुणं सुअत्थधम्मा विणयम्मि कोविया तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गयत्ति बेमि ॥ २३ ॥ इति
श्री आचार्यनइ अभिप्रायनइ श्री आचार्यनी प्रतिआगइ श्री गुरुनउ दृष्टिनउ देवि
बीजइ नवइं शइ विनयकर्म ग॥ बीज ३२ दूंशइ जिम अहितो प्रदोत्री शाले सुश्रूषाकरनउ आगधइ वउ नेश्रीतित्वे लाणानइ
विनयवंत प्रशमागइ तेकहियइ ३ ॥ ४॥ गपकीयविजयुकउ आगधइ सेवइ बइ
आयरियग्गिमेवाहियग्गि सुस्सूसमाणोपडिजागरिज्जा आलोइयइंगियमेव नच्चा
जे साधु वंद अभिप्राय आराधइ आचार ज्ञानादिक भी घवानइ सुश्रूषा सेवाकरतउ जतनाश्री यथोपदिष्ट श्री गुरुनइ कइ
सावध तेपूजनीक हुइ १ अर्थइ विनयप्रयुंजइ मावबइ उकुलपुत्रकहियइ इसुगुरुनउ द्यउ तेहवउ बोलनउ
आज्ञां वइमाराहयईसपुज्जो ॥ १ ॥ आयारमट्ठाविणयंपउंजे सुस्सूसमाणोपरिगिज्झ वक्कं जहोवइट्ठं अभिकंखमा
आगुरुनी आशातना अविनय न रत्नाधिकविरदीहितवडा वयइकरी बालक पदवीयकी एतलायतं नीवयडइ वली इस
करइ तेपूज्य जनीकहुइ २ नइविषइ विनयप्रयुंजइ मावबइ जेवयइ अनइ पर्याय दीक्षा नवचननउ बोलनहार
णो गुरुं तु नासाययईसपुज्जो ॥ २ ॥ राइणिएसु विणयंपउंजे डहरावि य जे परियायजिट्ठा नियत्तणे वट्टइ सच्चवाई उ

४३

अवपातनमस्कारकरतउ अज्ञात कुलनइ विषइ उंछं सयमनिर्वाहनइ अर्थइ पाम जइ एहवउ आहारनल अनइ
आगुरुना वचन करइ ते वीदउ शविशुद्ध निर्दोष आहार हानिकी घणाघरनी नित्यम इमतउ दीनपणउ नकरइ न स्त
पूज्य पूजनीक हुइ ॥ ३ ॥ रत्ल इ दा
वायवंवक्ककरसपुज्जो ॥ ३ ॥ अन्नायउंछंचरईविसुद्धं जवणट्ठया समुयाणं च निच्चं अलद्धुयं नोपरिदेवएज्जा लद्धुं
उपाम्यानउ अविमा डाननउं संथारउ शय्या उपा अंत्यइ डीबोलाकरइ प जे साधु इम अपणउ आत्मा जेर
ननकरइ तेपूज्य पूज्य भयन घी आसन भातपाणी तइ आहारादिक लाभि इउ वइ तेहवइ आहारादिकइ संतोषइ
नीकहुइ ४ नइ विषइ तइ
नविकत्थयईसपुज्जो ॥ ४ ॥ संथारसेज्जासणभत्तपाणे अप्पिच्छया अइलाभेवि संते जो एवमप्पाणभितोसएज्जा सं
इमिसंतोषना प्रधानपणा महीपकीइआशाइ इथनइ लोहमयलोहानापतल आशारहित निर्जीवनउतरा ववं
नइविषइ रत नउ गभी तिम लाविइंकरीनइकांटानकिरया इवाणाउ ह्यास्वंतद्वयेन जे साधु महइकांटा तेकेहवा नके
पूज्य पूजनीक हुइ ित मनुष्यइ
तोसपण्हरए सपुज्जो ॥ ५ ॥ सक्का सहेउं आसाएकंटया अओमया उच्छहया नरेण अणासए जो उसहेज्ज कंटए वइ
बोलरूपकांटा कानन इवि एकमुहूर्त विघडी लगइ दुःख लोहमयबाणरूपतेपुण परंइ वेवचनरूपियां जे कांटा
पूज्य पूज्यपाइ इति दाईकुइ निश्चइ कांटा तेकेहवा सिद्धांयकां उद्धरतां सोहिला तेउद्धरतां दोहिला
पूज्य पूजनीक हुइ
मएकन्नसरेसपुज्जो ॥ ६ ॥ मुहुत्तदुक्खाउहवंतिकंटया अओमया तेवि तओ सुउद्धरा वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि वे
विरनाकरनाहार मर्म मा मुहा भावतावथनरू कानमइ विषइ आवीनइं गयाप्रा पमाहरइ मोहनउ धर्मनइ इम स्त्रकं
सयनाकरनाहार ७ पीयाकार वनाइमलइहवणपणु रूपजावइ ो महइ नित्यणा नरनादिमो रवी र कहियइ
राणुबंधीणिमहब्भयाणि ॥ ७ ॥ समावयंता वयणाभिघाया कण्णंगया दुम्मणियं जणंति धम्मोत्ति किच्चा परमग्गसूरे

दशवै टबो

इंद्रियपोषवी ते परवस्त्र व्रत न जे अवर्णवाद निंदा करइ पुठि पाछलि मुख आगलि पुण प्रत्यनीक उडंन एहमज पनाषा अवग्रारिणी नवा
सहइ ते पूज्य पूजनीक हुइ कोई अवर्णवाद निंदा करइ तउ तेमन माहि न आणइ जिम कहइ तिम भाषा जे बोलइ अप्रीतिनो कपजा मा ग्रहारि
जितेंद्रिय जो सहइ स पुज्जो ॥८॥ अवन्नवायं च परंमुहस्स पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं उहारिणिं अप्पियकारिणिं च भासं न
पूरवी भाषा न बोलइ सदा स लोलपरहित इंद्र आलादिक पिसुन चाडय अपामत उदी अनेरा पारइ अनेरा आगलि आप
वेदा ते पूज्य पूजनीक हुइ ॥९॥ कुतूहल न देषइ अमाई माया गुन करइ नवल उन करइ आपणा सत्रं गाम लाया न बोलइ
धान कराबइ
भासेज्ज सया स पुज्जो ॥१०॥ अलोलुए अक्कुहए अमाई अपिसुणे यावि अदीणवित्ती नो भावए नो वि य भाविअप्पा अ
कुतूहल कप रिचित न करइ [illegible] नेम गुणा सव अगुणा गुणरहित पत्र पदेशी आपो आपणपउ
सदा सवेदा ते पूज्य पूजनीक इकरीनइ साधु हुइ पदहव की विपरी तें आसा असाधु मुकइ आपणाइ जकरानइ
हुइ ॥१०॥ तं अगीकार इकरी असाधु हुइ धुना हिता लेउ
कोहल्ले य सया स पुज्जो ॥१०॥ गुणेहिं साहू अगुणेहिं साहू गिण्हाहि साहू गुण मुंच साहू वियाणिया अप्पगमप्पएणं जो
जे राग द्वेष इं समउ समान तिम इज डहर बालक स्त्री अथवा पुरुष प्रव्रजित हीलइ अ तज्ञा खिंसइ कउ स्तंभ
ते पूज्य पूजनीक हुइ ॥११॥ अथवा मोटउ वडउ साधु अथवा गृहस्थ ए तेला नइ वउ साहु नेही जिनादिक त्यादि निंदा पणउ मा
इ नेही मन ही
रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥११॥ तहेव डहरं व महल्लगं वा इत्थी पुमं पव्वइयं गिहिं वा नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा थंभं च को
तथा क्रोध छांडइ जि गुरु विनयादिक माना बला जिम यत्न इकरीनइ कन्या तउ तेपहवा गुरु नइ मान सइ ते गुरु इंद्रिय जीता
ते पूज्य पूजनीक सतत सदा ते गुरु शिष्य नइ मा मवरनइ माता पिता सउं पइ मानिवा योग्य तपस्वी न पलउ जिसाइ स
हुइ ॥१२॥ नइ सिद्धांत नइ विषइ करी नइ करता हार नुनइ विषइ
हं च चए स पुज्जो ॥१२॥ जे माणिया सययं माणयंति जुत्तेण कन्नं व निवेसयंति ते माणए माणरिहे तवस्सी जिइंदिए स ४४

ज्ञानउ सत्यवंत
ते पूज्य पूजनी कहुइ ॥१३॥ ते आगुरु गुणना सागर समुद्र पहवाना सोलला मेधावी पंडित सुसाधि तरूडा वचन विचरइ मुनि साधु पंच महाव्रत अनइ त्रिणि गुप्ति नइ विषइ रत आगी चारि कषायथका विमल उपयत ते पूज्य पूज
च्चरए स पुज्जो ॥१३॥ तेसिं गुरूणं गुणसागराणं सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं चरे मुणी पंचरए तिगुत्तो चउक्कसायावग
नीक हु श्री गुरु नइ ईहां सतत निरंतर जगनाथना मत नइ विषइ निपुण चतुर आ धुणिय टालीनइ पाप देदीप्यमान
इ ॥१४॥ विधि इ आराधीनइ मुनि साधु पूर्वकृत साधुनी सक्ति मइ विषइ छोड़इ पहवउ रूप कर्म लत पहिलाकं अनुत्तर अप
बनतउ स्याउ परासी वैगति इं गयउ
ए स पुज्जो ॥१४॥ गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी जिणमयनिउणे अभिगमकुसले धुणिय रयमलं पुरेकडं भासुरमउ
इ में हउं क विनयसमाधि अध्ययन ना त्रीजा उद्देसानउ अर्थ संपूर्ण हवउ सांभलि ते अहो शिष्य भगवंतनइ इम कहि इणि प्रवच
हउं श्री गु ॥३॥ श्री जंबू हे शाइ विनयवंत नाश जो कहा वउ बइ वलो विशेषिइ थ आउषा वंत तेला इ रीत वे नइ उ नेनइ विषइ
रुकेइड बइ ॥१५॥ विनयउ केहि यइ बइ ॥३॥
लं गइं गय त्ति बेमि ॥१५॥ विणयसमाहीए तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥३॥ सुयं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायं इह खलु
खलु इस्य इं वा क्यां ल च्यारि विनयसमाधिना स्थान हिवं शिष्य पूछइ खलु निश्चइं च्यारि विनयसमाधिना थानक
कारि इ स्थविर भगवंतइ क श्री तीर्थंकरइ तेकउ ते स्थविर भगवंतइ श्री वीतरागिइं कह्या
थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा
हिवं गुरु कहइ इमे पा खलु निश्चइं च्यारि विनयसमाधिना स्थानक तेकहइ विनय इकरी तथा वि श्रुत इ करी तथा श्र
ते स्थविर भगवंत इ श्री वीतरागिइं कह्या इ हु ६ नयथकी समाधि म तपथकी समाधि मन
नत उ स्व स्वपण उ ॥२॥ न उ स्व स्वपण उ ॥४॥
पन्नत्ता इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता तंजहा विणयसमाही १ सुयसमाही २
च्चेर

दशा०वै०

तपइ करीनइ थात आचारइ करीनइ थाइ विनय श्रुत तप नइ आचार नित्य पंडित अतिरमाडइ आपणा आ जे हुवइ जितेंद्रिय चि
पद की समाधि आचारस्य की समाधि नइ विनइ इविध नइ शुचि मला डाह्या प्रयुंजइ त्माजीव प्रति
नन उ स्वस्वरूपता अनेकांतर्थ स्थिरता पइ विषइ हा बहु

तवसमाहीइ आयारसमाहीए ॥ विणए सुए तवे य आयारे निच्चं पंडिया ॥ अभिरामयंति अप्पाणं जे भवंति जिइंदिया ॥ च

उ प्रकारिइं खलु निश्चइं विन श्री गुरुइं आचारादिक सीष सम्यग रीतिं करीनइ वेदसिद्धांत आ तथा नउ इा पत
य नी समाधि मननउ स्वरूपता तिकइ बीतरागकलहसहित अर्थ पडिवजइं आदरइ राधइ आदरइ लइ अभिमान
उपजइ हुइ ॥ इ छ इ सांभलिवा वांछइ

उव्विहा खलु विणयसमाही हवइ ॥ तं जहा ॥ अणुसासिज्जंतो सुस्सूसइ सम्मं संपडिवज्जइ वेयमाराहयइ न य भवइ अ

नइ करइ जेह चउथउ पद हुवइ हुइ ईहां श्लोक जाणिव प्रार्थइ वांछइ हित अ सांभलिवा वांछइ तेवली मान अनइ मद
उ विनीत उ तिकइ इहइ नुशासनं शिक्षा जे सांभलइ ते आदरइ तेणइ करी मात
त्तसंपग्गहिए ॥ चउत्थं पयं भवति ॥ भवइ य इत्थ सिलोगो ॥ पेहेइ हियाणुसासणं सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठिए न य माण

उ नउ हा मद विनयसमाधिनइ विषइ बिहु भेद खलु निश्चइ श्रुत समाधि तिकइ इहइ श्रुत सिद्धांत मइ भणुं इ उ स्पइ
नकरइ आयतार्थी मोक्षार्थी मननउ स्वरूप नउ हुइ मउ भणीनइ भणिव उ हुइ

मएण मज्जइ ॥ विणयसमाही आययट्ठिए ॥ चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ ॥ तं जहा ॥ सुयं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइयव्वं

नत नउ भणत उ एकाग्रचित्त रहित स्वइ संदेह नहीं इइ आपणउ आत्मा शुद्धधर्मनइ विषइ था आपणउ आत्मा शुद्ध मार्गि
म जाणी भणिव उ हुइ थिरपणइ भणावी भणिव उ हुइ रहउ थकउ आनेरा नइ

भवइ एगग्गचित्तो भविस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ ठिओ परं ठावइस्सा ४५

स्थइ मार्गि थापिस्युं इम ॥ चउथउ पद वली ईहां श्लोक जाणिवउ ज्ञान हुस्यइ एकाग्र स्थइ मार्गि रहउ पर श्रुत सिद्धां
जाणी भणिव उ हुइ हुवइ वउ तिकइ हुइ विलउ स्यइ अनेरा नइ थापइ त
मित्ति अज्झाइयव्वं भवइ ॥ चउत्थं पयं भवइ ॥ भवइ य इत्थ सिलोगो ॥ नाणमेगग्गचित्तो य ठिओ ठावयई परं सुयाणि य

अध्ययनक रतउ सूत्र विहु प्रकारि खलु निश्चइ तपनी स इहलोकनइ अर्थिइं लब्धि पा परलोकनइ
रा सणी नइ नी समाधिनइ विषइ माधि मननउ एकाग्रपणउ हुइ ॥ तिकइहइ ॥ मिथ्या नणी तप न करइ अर्थि जन्म

अहिज्जित्ता रओ सुयसमाहिए ॥ चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ ॥ तं जहा ॥ नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा नो परलो

तरि भोग नी वांछा सर्वे दिशि इ व्यापइ ते कीर्ति एक दिशि इ विस्तरइ ते वर्ण अर्द्ध दिशि इ विस्तरइ ते शब्द ठाम इ ज्ञा बाल्यइ ते श्लाघ ते श्लोक ते कीर्ति वर्ण श्लोक नइ अर्थि इ तप न करा अनेरइ काजि तप न करइ एक कर्म पचउ चउ
नी निर्जरानइ अर्थि इ तप करइ
तप न करइ

गट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा ॥ नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा ॥ नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा ॥ चउत्थं प

पद हुइ ईहां श्लोक जाणिवउ विविध नाना प्रकार मूलगुण उत्तरगुण तथा तप बारनइ नइ हुवइ इहलोकादिक आशा रहित तिका केवल निर्जरानउ अर्थी तपइ करीनइ धुणइ षपावइ पुराणा जूना पाप कर्म
वइ तिकइ हुइ विषइ रत रागी नित्य सदा

यं भवइ ॥ भवइ य इत्थ सिलोगो ॥ विविहगुणतवोरए निच्चं भवइ निरासए निज्जरट्ठिए तवसा धुणइ पुराणपावगं जु

रहव उ साधु तप इं करी विहु प्रकारिइं खलु निश्चइ आचारनी स तिकइ इहइ इहलोकनइ अर्थि इहलब्धिपा मि वान परलोक
नइ समाधि सहित सदाइं माधि मननउ स्वरूप नउ तिणइ करी सहित हुइ णी आचार पंच प्रकार न पालइ नइ अर्थि
हुइ

त्तो सया तवसमाहिए ॥ चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ ॥ तं जहा ॥ नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा नो पर

जन्मांतरि लोगनी वांछाइं आ सर्वदिशिइं व्यापइं ते कीर्त्ति एकदिशिइं व्यापइं ते वर्ण श्लोक अर्द्धदिशिइं व्यापइं ते शब्द अनेरउ कांइ आचार पंचप्रकार न पालइ। तेह साधु नवउ तपस्वी कीर्त्ति वर्ण श्लोक नइ अर्थि इं आचार पंचप्रकार न पालइ अरिहंतना भाष्या हेतु कारणि इं

लोगठयाए आयारमहिट्ठिज्जा। नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगठयाए आयारमहिट्ठिज्जा। नन्नत्थ आरिहंतेहिं हेऊहिं आया

अनाश्रयपणाइं आचार पांचप्रकार पालइ। एवं चउथउ पद कह्यउ इहां श्लोक जाणि। जिनवचननइ विषइ रात उ सूत्र अर्थनइ अत्यंत गमी वत ते करइ वडउ। एतेरातउ रागी। तेन बोलइ कुवचन। विषइ पूर्ण सूत्र करनउ अर्थी। आचारसमाधि इं करीनइ संवृत्त

रमहिट्ठिज्जा। चउत्थं पयं भवइ। भवइ य इत्थ सिलोगो। जिणवयणरए अतिंतिणे पडिपुन्नाययमाययट्ठिए। आयारसमा

धि आश्रव रुंधइ सांधु दमइं इंद्रियनइ जे मनइं आतमा ते मोक्षनइ समीपि करइ ते साधु॥ जातिजन्म अनइ मरण संसार थकी मूकाइ नरक तिर्यंच मनुष्य देवता च्यारि प्रकार संसार। पूर्वावस्था सिद्ध हुइ ते वली अवस्था सर्व प्रकारि इं छोडइ अल्प कर्म रज जे देवता थाइं ते अल्पक महर्द्धिक हुइ। लेखा मी

हिसंवुडे भवइ य दंते भावसंधए॥ २॥ जाइमरणाउ मुच्चइ इत्थं थं च चयइ सव्वसो। सिद्धे वा हवइ सासए देवे वा अप्पर

इ महर्द्धिक हि आ॥ विनयसमाधि अध्ययननाउ चउथउ उद्देशउ अर्थसहित संपूर्ण॥ ४॥ एतलइ विनयसमाधि नामा अध्ययन नवमउ गुरु कहइ॥ ३॥ नवउ अर्थ सहित संपूर्ण॥ ९॥ पहिलाना विनय अध्ययननाउ कह्यउ आचारपालइ ते भिक्षु कहियइ इति [illegible] ते अध्ययन कहियइ छइ॥ १॥

ए महिड्ढिए त्ति बेमि॥ ३॥ विणयसमाही चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो॥ ४॥ विणयसमाही नाम नवमं अज्झयणं सम्मत्तं॥

जाणि आदि च्यारि समाधि मन निर्मल मन वचन निर्मल जेहनउ विपुल विस्तार मो बित अनइ सु कर इति साधु पदस्थानक तेहनउ सेवी नइ। नउ स्वस्वरूप तउ नकयाना योग जे आत्मा वइ एहवउ। अनुकरण हार गुणोवली उ क्षेम मोक्ष शिवनिरुपद्रव आपणां आत्मानइ॥ २॥

\+ अभिगमं चउरो समाहिओ सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ। विउलहियसुहावहं पुणो कुव्वइ सो पयखेममप्पणो। २

घरमकी विरागिइं ग्रही कालइं नइ नित्यसदा चित्तनइ विषइं समा स्त्री जातिनइ वसि न पडइ वम्या काम भोग विषय अरस पाछा आणइं गुरुउपदेशिइं श्रीजिन धीउ प्रसन्न निर्मल हुइ। तेहनइ वसि चउउ पडतउ। नही आदरइ नही जे भिक्षु मनइ विषइ। बुक हियइ

निक्खम्ममाणाए बुद्धवयणे निच्चं चित्तसमाहिओ हविज्जा। इत्थीण वसं न यावि गच्छे वंतं नो पडियायइ जे स भि

॥ २॥ सचित्त पृथिवी पोतइं खणइ नही। सीतोदक काचउ पाणी पोतइ पीयइ। अग्निरूप शस्त्र जेहवउ ते ज्वालइ बालइ नही। अनेरा बीजा पासइं खणावइ नही। नही बीजा पासइं पीयावइ नही। पीवरावइ नही। अतितीक्ष्ण सर्व धारां पासइं ज्वालावइ बलावइ न

क्खू॥ १॥ पुढविं न खणे न खणावए सीओदगं न पिए न पियावए। अगणिसत्थं जहा सुनिसियं तं न जले न जलाव

हा जे ते भिक्षु सा वायुनइ निमित्ति वीजणा इक हरीकाय नीली हरीआलि अपवेदइ बीज गोधूम शालि प्रमुख सचित्त सजीव भिक्षु कहियइ॥ २॥ रा नइं आपणा पउ वीजइ नही अ नही अनेरा पासइं छेदावइ नही। सदा सर्वदा परिहरतउ आहारइ न अनेरा पासइं वीजावइ नही।

ए जे स भिक्खू॥ २॥ अनिलेण न वीए न वीयावए हरियाणि न छिंदे न छिंदावए। बीयाणि सया विवज्जयंतो सच्चित्तं

न खाइ नही जे ते भिक्षु वध विनाश त्रस अनइ पृथिवी अनइ तृण अनइ काष्ठ तिणि कारणि उद्देशिक आहार अग्नि आप स्थावर जीवनउ हुइ जतउ नाश निश्राइं जे छइ तेहनउ मुल विना शुद्ध। वइ। रसोनी निमित्ति निपनउ आण न भुंजइ आहारइ नही। अनेरा पासइ साधु कहियइ॥ ३॥

नाहारए जे स भिक्खू॥ ३॥ वहणं तसथावराण होइ पुढवितणकट्ठनिस्सियाणं। तम्हा उद्देसियं न भुंजे नो वि पए

इ अग्नि पचावइ नही जे रोचवइ हियइ परिणमावइ आपणा आत्मा सरीषउ मानइ प्राणातिपात वेरमणादि पांचइ प्राणादि ते भिक्षु साधु कहीयइ॥ ४॥ ज्ञातपुत्र श्री महावीरना वचन छ काय पृथिवी आदिक महाव्रत काया इ फरसइ पाताहिंसा

न पयावए जे स भिक्खू॥ ४॥ रोयइ नायपुत्तवयणे अत्तसमे मन्निज्ज छप्पि काए। पंच य फासे महव्वयाइं पंचासव

४६

दशा०द्वी

वइ आश्रव संवरइ परिहरइ चारि क्रोधादिक कषाय ध्रुव निश्चल सदा मन वचन काया धन गणिमादि रहित सुवर्ण रूप रहित
जे ते भिक्षु साधु कहियइ॥५॥ सदा सर्वदा वमइ परिहरइ नीयोग आसक्त इद्रुपवनइ बुद्ध रूप ओ जेह नइ पोतइ नथी तेहइ योग संग्र तीर्थंकर ना वचन नइ विषइ स

संवर जे सभिक्खू॥५॥ चत्तारि वमे सया कसाए धुवजोगी हविज्ज बुद्धवयणे अहणे निज्जायरूवरयए गिहिजोगं

सर्वथा वर्जइ परिहरइ समग् दृष्टि सम्यग्दृष्टि वृद्ध सदा व्यामोह रहित अछि निश्चइ ज्ञान अनइ तप करी नइ धूणइ पापकर्म मन वच
जे ते भिक्षु साधु कहियइ॥६॥ जइन नास्तिकादिक इत्यादि नथी एत पञ्चनइ संयम बल सह हइ वश पुराणां जूनां पापकर्म नकाय

परिवज्जए जे स भिक्खू॥६॥ सम्मद्दिट्ठी सया अमूढे अत्थि हु नाणे तवे संजमे य तवसा धुणइ पुराणपावगं मणवय

होही हुस्यै अर्थ कार्य विहा
इ करी संवर सहित जे ते भि तिमहिज अशन अन्नादिक विविध नाना प्रकार खादिम फल लाधा परम जाणा
क्षु साधु कहियइ॥७॥ पाणी द्राक्षादिक वा अथवा दिम आदि सही पामीनइ

कायसुसंवुडे जे स भिक्खू॥७॥ तहेव असणं पाणगं वा विविहं खाइमसाइमं लभित्ता होही अट्ठो सुए परे वा तं न नि

ने राखि इ राखइ नही अनेरा पा विविध नाना प्रकार खादिम सु छिद्द निमन्त्री नइ साधर्मी गुरुसा
इ इ राखावइ नही जे ते भिक्षु सा तिमहिज अशन अन्नादिका पइउ फलादि तथा खादिम मु धुनइ जे जिमइ गुरु साहम्मी
धु कहियइ॥८॥ पाणी द्राक्षादिक अथवा स्वाद लही पामीनइ निमन्त्रणा करी आहार करइ

हे न निहावए जे स भिक्खू॥८॥ तहेव असणं पाणगं वा विविहं खाइमसाइमं लभित्ता छंदिय साहम्मियाण भुंजे भोच्चा सज्झायरए य जे स भि

जिमीनइ सज्झाय पंचप्रकार करइ कथ ग्रह कलह रूप ऊपजइ तेहवी तथा कोप निवृत्त अ प्रशान्त राग संयम पडिलेहणादिक नइ
जे ते भिक्षु साधु कहियइ॥९॥ वंछिना कथा न करइ क्रोध न क चपलइन्द्रिय रहित विषइ सदा सर्वदा मन वचन काया
रइ न हइ जेहना योग ते णइ सहित

क्खू॥९॥ न य वुग्गहियं कहं कहेज्जा न य कुप्पे निहुइंदिए पसंते संजमधुवजोगजुत्ते उव ४७

उपशान्त अनाचारनइ ते भिक्षु सा इन्द्रिय सहइ सहिया सइ आक्रोश कुवचन प्रहार सयइ करीनइ भैरव रौद्र सुख न
उ नैवी विषइ आदर धुक कहियइ॥१०॥ ज निश्चइ इन्द्रिय नइ घात तर्जना ओछ लीद प्रत्यक्ष शब्द वेतालादिक इ विषइ
इ रहित रहित जे कांटा सरिषउ पाही वी हाडिवा नाका क्षीहामा दुःख न

संते अविहेडए जे स भिक्खू॥१०॥ जो सहइ हु गामकंटए अक्कोसपहारतज्जणाओ य भयभेरवसद्दसप्पहासे समसु

विषइ सराषउ सहइ अस पडिमा काउसग्ग पडिवजी बीहइ नही नयइ करी रोद्र विविध नाना प्रकार मूलगुण
तानइ खमइ जे भिक्षु साधु आहरी नइ समशाननइ विषइ रावण रूपा चक्षु रिंड़ि यइ देषीनइ दि आनइ तप नइ विषइ रातइ
कियइ॥ ॥११॥ रागी निस्पृह सदा

हदुक्खसहे य जे स भिक्खू॥११॥ पडिमं पडिवज्जिया मसाणे नो भायए भयभेरवाइं दिस्स विविहगुणतवोरए य निच्चं न

शरीर नी आशिका ममता न क असइ निरंतर वोसिराव्यू आक्रोश्यउ हणायउ पृथिवी सरीषउ सहइ मुनि साधु
रइ जे ते भिक्षु साधु कहियइ॥१२॥ उगांड्यउ देह शरीर जेणइ तउ लूस्यउ छेद्यउ वेसहइ पृथिवी मुनि सा त
हुवइ

सरीरं चाभिकंखए जे स भिक्खू॥१२॥ असइं वोसट्ठचत्तदेहे अक्कुट्ठे व हए व लूसिए वा पुढविसमे मुणी हवेज्जा अ

नक ते भिक्षु साधु अभिभूय पराभवीनइ कायाइं समुद्धरइ उद्धरइ जाति पंथ संसार विइत्तु जाणी
रइ कौतूहल न करइ जे कहियइ॥१३॥ याइ करीनइ परीसह बावीस सारथ की अप्पयं आपणउ आत्मा नइ जाति

नियाणे अकोउहल्ले य जे स भिक्खू॥१३॥ अभिभूय काएण परीसहाइं समुद्धरे जाइपहाउ अप्पयं विइत्तु जाईमरणं

जन्म अनइ बारला तप नइ विषइ श्रीनइ श्राम हाथ असंयम अनइ संयम बीढ वचन अ संयम जीता ध्यान नइ विषइ रूडउ समाधि
मरण लिहरूप तामारि तनइ विषइ रातउ गगा जे ते भि मयका संवरइ पग संवरइ सुयम पउ की स इन्द्रियजेणइ वशि जेतउ वत आत्मा
महाभय हइ साधु क कियइ॥१४॥

महब्भयं तवे रए सामणिए जे स भिक्खू॥१४॥ हत्थसंजए पायसंजए वायसंजए संजइंदिए अज्झप्परए सुसमाहि

दशा॰टबो

बउज सूत्रं अनइ अर्थ विवरजाणइ। उपधि उपगरणनइविषइ मूर्छा आण आणइ घरि घाडउ इ आ कयं लेवउ विक्रय
हेनउ जातोसि कु साधु कहियइ ॥१५॥ लोभ नहीं अगृद्ध प्रतिबंधरहित हारमइ चारिउ इ उंघउ संयम नइ विविधउ संनिधिवा
यप्पा सुत्तत्थं च वियाणई जे स भिक्खू ॥१५॥ उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे अन्नायउंछं पुलनिप्पुलाए कयविक्कयसंनिहिउ
तिहथकी सर्वसंगरागद्वेषमोहादिकरहित अलोलपी आपो रसनी लालचि नहीं थोडउ घी असंयमजीवित कुहिलद्र सत्कार
उसरुष जातोसि कु साधुकहीयइ ॥१६॥ सर्वस्त्रनी पुरि नान रसपामी छवनभाइ इंद्र आदि वाबाद्द नहीं धिनवाछ वस्त्रादि
वरए सव्वसंगावगए य जे स भिक्खू ॥१६॥ अलोल भिक्खू न रसेसु गिद्धे उंछं चरे जीविय नाभिकंखी इड्ढिं च सक्कारण
पूजन नवांछइ आ स्नेहरहि तेभिक्षुसा परं अनेरानइ इमकहइ न जेणइ वचनइ अनेरउ रीसा हियइ जाणीन
स्तुति ननइ विषइ र तउ धुकहियइ ॥१७॥ हीण कुशील अनाचार वइते ह वन्ननवेदइ नबोलइ इप्रत्येक जीव
सवन हुज आत्मा
पूयणं च चए ठियप्पा अणिहे जे स भिक्खू ॥१७॥ न परं वइज्जासि अयं कुसीले जेणन्नो कुप्पेज्ज न तं वएज्जा जाणिय प
जीवप्रति पुण्य आत्मानइ उत्तेकर्षे अभिमान न माता न उपर्कु रूपनउ म लाभनउ म श्रुत शास्त्रन मद सघला
अनइ पापमइ तिजाति लहनउ
जा करइ जे ते भिक्षु साधुकहियइ ॥१८॥ मदनकरइ दनकरइ दनकरइ आमदनकरइ
त्तेयं पुण्णपावं अत्ताणं न समुक्कसे जे स भिक्खू ॥१८॥ न जाइमत्ते न य रूवमत्ते न लाभमत्ते न सुएण मत्ते मयाणि स
आवइ परिहरतउ धर्मध्याननइविषइ रातउ रागा प्रवेदइ सत्य आगलि कहइ आये धर्मनइविषइ परं आनरानइ धर्म
मांडतउ जे ते भिक्षु साधु कहीयइ ॥१९॥ पदसूधउ श्रीजिनधर्म मोटउमुनि रह्यो थापइ निःक्र मुइ
व्वाणि विवज्जयंतो धम्मज्झाणरए य जे स भिक्खू ॥१९॥ पवेयए अज्जपयं महामुणी धम्मे ठिओ ठावयई परं पि नि

४८

वर्जइ
कालेईनइ डोलइ कुशा हास्य हसिवउ नकरइ कुहक इंद्रजाल तेदेहनउ वास वसिवउ अशुच सदा अजइ छांडइ नित्य
लिया आरंभीवेषा चिह्न कुटिलाई नकरइ ते भिक्षुसाधुकहियइ ॥२०॥ चि अपवित्र अशाश्वत अनित्य हितमोक्षनइविषइ
क्खम्म वज्जिज्ज कुसीललिंगं न यावि हासंकुहए जे स भिक्खू ॥२०॥ तं देहवासं असुइं असासयं सया चए निच्चहिय
परआत्मा छेदीनिवारी जातिजन्म उवेइ पामइ भिक्षु अपि इहहतंकरहउ ॥ स भिक्खु नामा अध्ययनदशमानउ अर्थ
जेहनउ अनइ मरणतेहनउ बंध त्रियउ आवरी गतिइं जाइ पूरुवचन ॥२१॥ संपूर्णहुउ ॥ इति श्री दशवैकालिक
ठियप्पा छिंदित्तु जाईमरणस्स बंधणं उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं त्ति बेमि ॥२१॥ स भिक्खु नाम अज्झयणं दसमं
सूत्रे समाप्तः ॥ संवत [illegible] ॥ वर्षे कार्त्तिक वदि [illegible] शुभं भवतु ॥
ऋषि श्रीप मेघाजी तत्सिष्य लिखितं ऋषि के शव पठनार्थं शुभं भवतु ॥
सम्मत्तं ॥१०॥ इति श्री दशवैकालिक सूत्रं समाप्तं ॥ ॥छ॥

४९

दंसमीकाटबो

४७०३

५७